परमधाम - चर्चनी

श्री प्राणनाथजी मंदिर, पन्ना (म.प्र.)

(मुक्तिपीठ)

अनुक्रमणिका

१. रंगमहल का खड़ा निशान ---------- १
२. हवेलियों के नौ फिरावे ---------- २
३. दस मन्दिर के हांस की तीन भोम की बाहरी शोभा ---------- ४
४. मूल दरवाजे से तीसरी भोम तक की शोभा ---------- ५
५. बाहरी हार मन्दिरों की बाहरी दिवाल की शोभा ---------- ६
६. गुर्जो की बाहरी दिवाल का दृश्य ---------- ६
७. मन्दिरों की भीतरी दिवाल की शोभा ---------- ७
८. चांदनी चौक से मूल मिलावे तक की शोभा ---------- ७
९. मूल मिलावे का दृश्य ---------- ९
१०. चार गोल हवेलियों की शोभा ---------- १२
११. पंचमहल की चार हार हवेली का दृश्य ---------- १२
१२. दूसरी भोम के दस मन्दिर का हांस ---------- १३
१३. दूसरी भोम-भूल भूलवनी ---------- १३
१४. खड़ोकली ---------- १४
१५. तीसरी भोम के दस मंदिरों की हांस ---------- १५
१६. चौथी भोम-नृत्य की हवेली ---------- १८
१७. पांचवी भोम के नौ चौक ---------- १८
१८. पांचवी भोम के रंग परवाली मन्दिर का दृश्य ---------- १८
१९. छठीं भोम-सुखपाल ---------- १९
२०. सातवीं भोम-दो हिंडोलों की ताली ---------- २०
२१. आठवीं भोम के चार हिंडोलों की ताली ---------- २०
२२. नवमी भोम के २०१ छज्जों की शोभा ---------- २०
२३. दसवीं चांदनी पर बाग बगीचे ---------- २१
२४. दसवी चांदनी पर देहेलान ---------- २२
२५. दसवीं चांदनी पर गुमटियां ---------- २२
२६. अमृत वन का दृश्य ---------- २३
२७. श्री रंगमहल की नजदीकी परिकरमा की शोभा ---------- २३
२८. सोलह हांस का चेहेबच्चा ---------- २४
२९. वट पीपल की चौकी ---------- २५
३०. फूलबाग के सौ बगीचे ---------- २५
३१-३२. फूलबाग का एक बगीचा ---------- २६
३३. नूरबाग के सौ बगीचे ---------- २६
३४. नूर बाग के एक बगीचे की शोभा ---------- २७
३५. अन्न वन ---------- २८

Nijanand App

३६. दूब-दुलीचा ---- २८
३७. कुन्ज-निकुन्ज तथा पश्चिम की चौगान ---- २८
३८. लाल चबूतरा ---- २९
३९. ताड़ वन ---- ३०
४०. ताड़वन का एक बगीचा ---- ३१
४१. बड़ोवन, मधुवन तथा महावन का दृश्य ---- ३१
४२. पुखराज, बंगला, घाटी, बड़ोवन, मधुवन एवं महावन ---- ३२
४३. पुखराज पर्वत तथा बंगले की तरहटी ---- ३३
४४. अधबीच का कुण्ड, ढंपो चबूतरा तथा मूलकुण्ड की तरहटी ---- ३४
४५. पुखराज एवं बंगले का चबूतरा ---- ३५
४६. अधबीच का कुण्ड, ढंपो चबूतरा तथा मूलकुण्ड का चबूतरा ---- ३६
४७. पुखराज की १४ मेहरावें, बंगला और अधबीच के कुण्ड की छठीं भोम ---- ३७
४८. हजार हांस की मोहोलाइत, जवेरों के महल तथा खास महल ---- ३९
४९. हजार हांस की हवेलियो की चांदनी ---- ४३
५०. हजार हांस के महल का एक दरवाजा ---- ४४
५१. आकाशी महल ---- ४५
५२. आकाशी महल की दो दिशा की बड़ी हवेलियां ---- ४५
५३. मध्य की बड़ी हवेली ---- ४७
५४. आकाशी महल की चांदनी ---- ४७
५५. घाटी की तरहटी एवं मोहोलात ---- ४८
५६. बंगला तथा चेहेबच्चा ---- ४९
५७. एक बंगला ---- ४९
५८. पुखराज पहाड़ का खड़ा दृश्य ---- ५१
५९. श्री यमुना जी, सातों घाट, केल व बट का पूल ---- ५१
६०. बट का घाट ---- ५३
६१. हौज कौसर तालाब ---- ५४
६२. पाल अन्दर की मोहोलात ---- ५५
६३. सोलह देहुरी का घाट ---- ५६
६४. तेरह देहुरी का घाट, झुण्ड का घाट तथा नव देहूरी का घाट ---- ५८
६५. चौरस पाल के ऊपर देहुरी एवं वृक्ष ---- ६०
६६. टापू महल ---- ६०
६७. टापू महल की चांदनी ---- ६१
६८. चौबीस हांस का महल ---- ६२
६९. बड़ा दरवाजा तथा जमीन पर बगीचों का दृश्य ---- ६३
७०. छठीं चांदनी ---- ६४
७१. चौबीस हांस के महल का खड़ा चित्र ---- ६४
७२. जवेरों की नहरों के नौ किरावे ---- ६४
७३. चार पहल की हवेली ---- ६५
७४. एक महल का दृश्य ---- ६६
७५. आठ पहल की हवेली ---- ६६
७६. सोलह पहल की हवेली ---- ६७
७७. बत्तीस पहल की हवेली ---- ६७
७८. चौंसठ पहल की हवेली ---- ६७
७९. जवेरों के महल की चांदनी ---- ६७
८०-८१. माणिक पहाड़, बड़ा दरवाजा तथा हवेलियां ---- ६८
८२. एक हवेली का दृश्य ---- ६९
८३. एक महल की शोभा ---- ७०
८४. एक मंदिर का चित्र ---- ७०
८५. एक मंदिर के अन्दर कोठरियों का दृश्य ---- ७१
८६. माणिक पहाड़ की एक हवेली के बाहर का दृश्य ---- ७१
८७. माणिक पहाड़ के भीतर माणिक महल का दृश्य ---- ७१
८८. माणिक पहाड़ पर टापू महल तथा देहेलान ---- ७२
८९. टापू महल की चांदनी ---- ७३
९०. माणिक पहाड़ की चांदनी ---- ७४
९१. माणिक पहाड़ के चारों तरफ जमीन पर बगीचे नहरें तथा महानद ---- ७४
९२. माणिक पहाड़ के बाहर जमीन पर बड़ोवन, मधुवन एवं महावन ---- ७६
९३. माणिक पहाड़ के बाहर ताल, महल तथा बगीचों की चांदनी की शोभा ---- ७७
९४. माणिक पहाड़ का खड़ा दृश्य ---- ७८
९५. वन की नहरें (मोहलातें) ---- ७९
९६. छोटी रांग (चार हार हवेली) तथा ---- ८०
९७. एक महल का दृश्य ---- ८०
९८. बड़ी रांग ---- ८३
९९. बड़ी रांग की एक हवेली ---- ८४
१००. हवेलियों के त्रिपोलियों के मध्य की हवेली ---- ८४
१०१. जिमी के वन महल की चांदनी पर टापू, महल ताल एवं देहेलान ---- ८५
१०२. वन महलों के टापू की चांदनी ---- ८६
१०३. एक सागर के चारों तरफ का दृश्य ---- ८६
१०४. हवेली की चांदनी पर ताल, बगीचों एवं गुमटियों का दृश्य ---- ८७
१०५. चांदनी पर एक बगीचे का दृश्य ---- ८८
१०६. एक जिमी की शोभा ---- ८८
१०७. टापू महल, जिमी तथा मोहोलाइत की चांदनी का दृश्य ---- ८९
१०८. पच्चीस पक्ष का दृश्य ---- ९०

Nijanand App

१. रंगमहल का खड़ा निशान

श्री रंगमहल परमधाम के मध्य भाग में आया हुआ है । यह जमीन से भोम भर ऊँचे चबूतरे पर शोभायमान है । इसकी ऊंचाई नौ भोम दसवीं आकाशी आयी है । इस रंगमहल का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में आया हुआ है । मुख्य द्वार के सामने चांदनी चौक की बेशुमार शोभा है । यह चाँदनी चौक १६६ मन्दिर का लम्बा चौड़ा समचौरस आया है । चांदनी चौक की उत्तर दिशा में ३३ मन्दिर के लम्बे चौड़े कमर भर ऊँचे चबूतरे के ऊपर आम का लाल रंग का वृक्ष आया हुआ है । चबूतरे के चारों तरफ तीन-तीन सीढ़ियों की जगह छोड़कर बाकी जगह में चबूतरे के किनारे पर कठेड़ा आया है ।

इसी प्रकार दक्षिण दिशा में ३३ मन्दिर का लम्बा चौड़ा दूसरा चबूतरा आया है, जिस पर हरे रंग का अशोक का वृक्ष आया है । इस चबूतरे की शोभा पूर्व वर्णित चबूतरे के समान ही आयी है । दोनों चबूतरों के बीच में ३४ मन्दिर की जगह है तथा दोनों चबूतरों की उत्तर एवं दक्षिण दिशा में ३३-३३ मन्दिर की जगह आयी है । दोनों चबूतरों से ६६¹/₂ मन्दिर की दूरी पर पश्चिम दिशा में रंग-महल आया है । इसी प्रकार पूर्व दिशा में श्री यमुना जी की तरफ ६६¹/₂ मन्दिर की जगह आयी है । चांदनी चौक में दोखूने, तीखूने, चार खूने इत्यादि मोतियों की रेती बिछी हुई है, जिनकी नूरमयी सफेद किरणें आकाश में उठ रही हैं । उनके बीच में लाल एवं हरे वृक्ष की लाल तथा हरी किरणे अत्यधिक शोभा को धारण कर रही हैं । चांदनी चौक में से खड़े होकर देखने पर रंगमहल ग्यारह भोम का दिखायी देता है । रंगमहल के भोम भर ऊँचे चबूतरे से लगती हुई जमीन से कमर भर ऊँची दो मन्दिर की चौड़ी रौंस चारों ओर घेर कर आयी है ।

२. हवेलियों के नौ फिरावे

रंगमहल का मुख्य द्वार जमीन से भोम भर की ऊँचाई पर आया है । दरवाजे के सामने चांदनी चौक से भोम भर की १०० सीढ़ियां आयी हैं, जिसमें प्रत्येक चौथी सीढ़ी के पश्चात् पांचवीं सीढ़ी चांदे के रुप में आयी है । सीढ़ियों की दोनों किनार पर कमर भर ऊँचा कठेड़ा शोभा ले रहा है । कठेड़े के ऊपर लाल रंग की कांगरी है । सीढ़ियों के ऊपर अलग-अलग रंग की तथा अनेक प्रकार की चित्रकारी से युक्त पशमी गिलम बिछी हुई है ।

मुख्य द्वार के दायें बायें बाहरी तरफ दो चबूतरे आये हुए हैं, जो दो-दो मन्दिर के चौड़े तथा चार-चार मन्दिर के लम्बे हैं । दोनों चबूतरों के मध्य में एक हाथ नीचा दो मन्दिर का लम्बा चौड़ा चौक आया है । दोनों चबूतरों की पूर्व दिशा में सीढ़ियों के दायें बायें क्रमशः हीरा, माणिक, पुखराज, पाच तथा नीलवी के थम्भ आये हैं । इसी प्रकार पश्चिम दिशा में भी रंगमहल की दिवाल से लगकर १० अक्शी थम्भ आये हैं । दोनों चबूतरों की पूर्व, उत्तर तथा दक्षिण दिशा में रत्नजड़ित कठेड़ा शोभा ले रहा है । इस प्रकार चबूतरों के बीस थम्भों के ऊपर कुल २२ मेहराबें आयी हैं । चबूतरे के पूर्व किनारे १० थम्भों में ९ मेहराबें हैं, जिनके मध्य की मेहराब दो मन्दिर की चौड़ी तथा दो भोम की ऊँची दिखायी दे रही है । दायें-बायें की चार-चार मेहराबें एक-एक मन्दिर की चौड़ी और एक-एक भोम की ऊँची आयी है । इसी प्रकार की अक्शी शोभा पश्चिम की तरफ रंगमहल की दिवाल में आयी है । दोनों चबूतरों के उत्तर एवं दक्षिण किनारे जो नीलवी के थंभ आये हैं, उनके ऊपर दो मन्दिर की चौड़ी एवं एक भोम की ऊँची मेहराबें शोभा ले रही हैं । इसी प्रकार दो मन्दिर के लम्बे-चौक के उत्तर एवं दक्षिण दिशा में दो मन्दिर की चौड़ी एवं एक भोम की ऊँची दो मेहराबें आयी हैं ।

Nijanand App

रंगमहल के चबूतरे की बाहरी किनार पर चारों तरफ घेरकर कठेड़ा आया है । कठेड़े से भीतरी तरफ एक मन्दिर की चौड़ी रौंस की जगह छोड़कर छः हजार मन्दिरों की एक हार चारों तरफ घेरकर आयी है, जिसके प्रत्येक मन्दिरों में देखने के पांच-पांच और गिनती के चार-चार दरवाजे आये हैं । प्रत्येक मन्दिर की बाहरी दिवाल में दो-दो दरवाजे और मध्य में एक-एक झरोखा आया है । इन मन्दिरों की भीतरी तरफ एक-एक मन्दिर की दूरी पर ६-६ हजार थम्भों की दो हारें आयी हैं । दूसरी हार थम्भों से भीतरी तरफ ६ हजार मन्दिरों की आयी है, जिसमें प्रत्येक मन्दिर में देखने के चार-चार और गिनती के तीन-तीन दरवाजे आये हैं । दूसरी हार मन्दिरों की भीतरी तरफ ६-६ हजार थम्भों की दो हारें आयी हैं ।

मुख्य द्वार की भीतरी तरफ दूसरी हार मन्दिरों के १२ मन्दिर नहीं आये हैं, क्योंकि यहां १० मन्दिर का लम्बा और ५ मन्दिर का चौड़ा २८ थम्भों का चौक आया है । इस चौक के पूर्व तथा पश्चिम में १०-१० थम्भ तथा उत्तर एवं दक्षिण में ४-४ थम्भ आये हैं । इस चौक में सुन्दर गिलम बिछी हुई है, जिसके ऊपर सिंहासन एवं कुर्सियों की अपरम्पार शोभा हो रही है । ऊपर छत में चन्द्रवा तना हुआ है । नवों भोम में इसी प्रकार की २८ थम्भ के चौक की शोभा आयी है ।

इस चौक की पश्चिम दिशा में जो थम्भों की हार घेर कर आयी है, उसकी भीतरी तरफ २३१ चौरस हवेलियों की चार हारें घेर कर आयी हैं । इसे चौरस हवेलियों का पहला फिरावा कहते हैं । इन चार चौरस हवेलियों की भीतरी तरफ २३१ गोल हवेलियों की चार हारें घेर कर आयी हैं । इसे गोल हवेली का पहला फिरावा कहते हैं । इसी क्रम से चौरस हवेलियों के चार फिरावे तथा गोल हवेलियों के चार फिरावे आये हैं । इनके पश्चात् पंचमोहोलों का नवां फिरावा आया है । पंचमोहोलों की भीतरी तरफ

फुलवारी का चौक शोभा ले रहा है, जिसके अन्दर अनेकों प्रकार के चेहेबच्चों एवं नहरों की अकथनीय शोभा हो रही है । इस फुलवारी की भीतरी तरफ नौ चौक आये हैं, जिसके चार चौक चार कोनों में, चार दिशाओं में तथा एक चौक मध्य में आया है । नौ चौकों के चारों कोनों में पानी के चार स्तम्भ (पाइप) आये हैं, जो नवों भोम दसवीं आकाशी तक गये हुए है । रंगमहल के चारों कोनों के १६ हांस के चेहेबच्चों से गुप्त रुप से इन पाइपो में पानी आता है ।

३. दस मन्दिर के हांस की तीन भोम की बाहरी शोभा

रंगमहल की चारों दिशाओं में २०१ हांस आये हैं, किन्तु गिनती में २०० ही हांस आये हैं । प्रत्येक दिशा में पचास-पचास हांस आये हैं किन्तु पूर्व दिशा में दरवाजे के लिये एक हांस अधिक आया है । रंगभवन के ईशान एवं अग्नि कोण से २४-२४ हांस छोड़कर जो बीच में दो हांस आये हैं, उन दोनों हांसों की सन्धि से पांच-पांच मन्दिर लेकर १० मन्दिर का एक अलग हांस बना है, जिसे दरवाजे का हांस कहा जाता है, इसके दायें-बायें के हांस २५-२५ मन्दिर के है, बाकी सभी हांस ३०-३० मन्दिर के हैं, इस दस मन्दिर के हांस के सामने पूर्व दिशा में चार-चार मन्दिर के लम्बे एवं दो-दो मन्दिर के चौड़े दो चबूतरे आये हैं । दोनों चबूतरों के बीच में दो मन्दिर का लम्बा चौड़ा चौक आया है । इस चौक में खड़े होकर देखने से दो भोम की ऊँचाई पर एक ही छत दिखायी देती है, किन्तु दोनों चबूतरों के छत की ऊँचाई एक ही भोम की आयी है । दोनों चबूतरों के उपर दूसरी भोम में चार मन्दिर के लम्बे और दो मन्दिर के चौड़े दो झरोखें आये हैं । दोनों झरोखों के पूर्वी किनार पर थम्भों के बीच में कठेड़ा सुशोभित है । दोनों झरोखों एवं बीच के चौक की एक ही

Nijanand App

छत आयी है, जिससे दस मन्दिर की लम्बी और दो मन्दिर की चौड़ी पड़साल (झरोखा) तीसरी भोम की दिखायी देती है । इस पड़साल की पूर्वी किनार पर पहली भोम के चबूतरे के अनुसार १० थम्भ (पांच नगों के) आये हैं। प्रत्येक मेहराब दो-दो रंगों की दिखायी देती है । तीसरी भोम से लेकर दसवीं भोम तक इसी प्रकार १० मन्दिर के हांस की शोभा आयी है ।

४. मूल दरवाजे से तीसरी भोम तक की शोभा

रंगमहल की पूर्व दिशा में दस मन्दिर की हांस आयी है, उस हांस के मध्य में दो मन्दिर की चौड़ी और दो भोम (मन्दिर) की ऊँची मुख्य द्वार की शोभा आयी है । दरवाजे के दायें बायें चार-चार मन्दिर आये हैं । दरवाजे की चौखट सिन्दुरिया रंग की आयी है । दर्पण रंग का किवाड़ है तथा हरे रंग की बेनी (पल्ले का किनारा) है। अनेकों रंगों के नंगो की चित्रकारी से वह युक्त है। दरवाजे के दायें बायें आध-आध मन्दिर की दिवाल में अनेकों प्रकार के नगों की बेल, बूटे, पशु-पक्षियों इत्यादि की नक्शकारी दिखायी देती है । दरवाजे की उपरी चौखट के ऊपर एक छोटी मेहराब आयी है । इस छोटी मेहराब से ऊपर दूसरी भोम में एक बड़ी मेहराब आयी है । इस बड़ी मेहराब के अन्दर आठ थम्भों पर नौ मेहराबें दिखायी दे रही हैं । दरवाजे के ऊपर बीच की मेहराब में एक झरोखा बाहर निकला हुआ दिखायी देता है । झरोखें के दायें-बायें दो-दो जालीदार मेहराबें दिखायी दे रही हैं । जालीदार मेहराबों के दायें बायें एक एक दरवाजा आया है । दरवाजे के दायें-बायें (उत्तर-दक्षिण) में एक-एक जालीदार मेहराब आयी है । इस प्रकार एक बड़ी मेहराब के अन्दर ६ जालीदार मेहराबें, दो दरवाजे और मध्य में एक झरोखा आया है । दरवाजे एवं झरोखे के आगे कठेड़ा लगा हुआ है । दरवाजे की बड़ी मेहराब के

ऊपर तीसरी भोम में दो मन्दिर की लम्बी एवं एक मन्दिर की चौड़ी देहलान की जगह आयी है । इसके दायें-बायें एक-एक मन्दिर की ओर जगह लेकर चार मन्दिर की लम्बी और एक मन्दिर की चौड़ी देहलान की शोभा आयी है ।

५. बाहरी हार मन्दिरों की बाहरी दिवाल की शोभा

रंगमहल की बाहरी तरफ जो छःहजार मन्दिरों की हार आयी है, उसमें से एक मन्दिर की बाहरी दिवाल की शोभा का ब्यान किया जाता है। एक मन्दिर की हद पर दो बड़े अक्शी थम्भ आये हैं, जिनके ऊपर एक बड़ी अक्शी मेहराब दिखायी देती है । मेहराब के मध्य की नोक एवं दोनों कोनों पर लाल-माणिक के एक-एक फूल आये हैं । तीनों फूलों के उपर कांगरी आदि की अनेक प्रकार की चित्रकारी है । दो बड़े अक्शी थम्भों के बीच में दो छोटे अक्शी थम्भ आये हैं, जिससे तीन छोटी अक्शी मेहराबें दिखायी दे रही हैं । इन छोटी तीनों मेहराबों के बीच में दो-दो अक्शी थम्भों के ऊपर तीन-तीन अक्शी छोटी मेहराबें दिखायी देती हैं । इस प्रकार एक मन्दिर की बाहरी दिवाल में कुल १३ मेहराबें शोभायमान हैं । सबसे नीचे जो छोटी-छोटी नौ मेहराबें आयी हैं, उनमें छः जालीद्वार मेहराबे हैं तथा दो मेहराबों में दो दरवाजे हैं और मध्य की एक मेहराब में एक झरोखा आया है । इसी प्रकार नवों भोम तक की शोभा आयी है । रंगमहल की उत्तर दिशा में लाल चबूतरे के सामने पहली भोम के १२०० मन्दिरों में १२०० झरोखों के स्थान पर १२०० मेहराबें (दरवाजे) आयी हैं।

६. गुर्जो की बाहरी दिवाल का दृश्य

रंगमहल के २०१ हांसों की सन्धि में धाम रौंस पर बाहरी तरफ २०१ गुर्ज आये हैं । ये गुर्ज चौरस हैं । प्रत्येक गुर्ज की तीन दिशा की

Nijanand App

तीन दिवालें धाम की रौंस पर आयी हैं । चौथी दिशा में रंगमहल की दिवाल आयी है, जिसमें दो दरवाजे आये है । ये दरवाजे हांस की सन्धि के मन्दिरों के दरवाजे हैं, जिनसे गुर्जो में आया जाया जाता है । धाम रौंस के ऊपर जो गुर्जो की तीन दिवालें आयी हैं, उसमें से एक दिवाल की शोभा का वर्णन किया जाता है । दो अक्शी बड़े थम्भों के ऊपर एक बड़ी अक्शी मेहराब आयी है । मेहराब के ऊपर माणिक के तीन लाल रंग के फूल आये हैं। इसके उपर अनेक प्रकार की चित्रकारी आयी है । एक बड़ी मेहराब के अन्दर दो छोटे अक्शी थम्भों के ऊपर तीन छोटी अक्शी मेहराबें आयी हैं, जिसके मध्य की मेहराब में एक दरवाजा आया हुआ है और दायें-बायें की दो मेहराबों के बीच में नूर की सुन्दर जालियां शोभा दे रही हैं । इसी प्रकार की शोभा अन्य दो दिवालों की भी है । ऐसी ही शोभा नवों भोम में गुर्जो की आयी है ।

७. मन्दिरों की भीतरी दिवाल की शोभा

रंगमहल की बाहरी एवं भीतरी मन्दिरों की हार, चौरस एवं गोल हवेलियों के मन्दिरों, पंचमोहलों के मन्दिरो एवं नौ चौको के मन्दिरों के सभी छोटे दरवाजों की दिवाल की शोभा एक समान आयी है । कोने के दो अक्शी थम्भों के ऊपर एक अक्शी बड़ी मेहराब आयी है । एक बड़ी मेहराब के अन्दर दो अक्शी छोटे थम्भों के ऊपर तीन छोटी अक्शी मेहराबें आयी हैं । मध्य की मेहराब में एक दरवाजा आया हुआ है । दरवाजे के ऊपर एक छोटी अक्शी मेहराब आयी है । दायें बायें की दो अक्शी मेहराबों के बीच में दो-दो अक्शी छोटे थम्भों के ऊपर तीन तीन अक्शी मेहराबों की शोभा आयी है ।

८. चांदनी चौक से मूल मिलावे तक की शोभा

चांदनी चौक की सम्पूर्ण शोभा को देखती हुई सौ सीढ़ियां बीस

चांदे चढ़कर धाम दरवाजे से अन्दर प्रवेश किया । एक गली, २८ थम्भों के चौक, और एक गली को पार करके पहली चौरस हवेली की पूर्व की दिशा से अन्दर आकर हवेली की चारों तरफ की शोभा को देखने लगी । इस हवेली की पूर्व दिशा में १० मन्दिर की देहलान आयी है । इस देहलान में १०-१० थम्भों की दो हारें आयी हैं । देहलान के दायें बायें पांच-पांच मन्दिर आये हैं । हवेली की दक्षिण दिशा में अग्नि कोण से लेकर दरवाजे तक दस मन्दिर आये हैं और दक्षिण के दरवाजे से लेकर नैऋत्य कोण तक १० मन्दिर की देहलान आयी है, जिसमें बाहरी तरफ दिवाल आयी है । इस दिवाल में १० दरवाजे आये हुए हैं । देहलान की भीतरी तरफ दिवाल के स्थान पर १० थम्भ आये हैं । इसी प्रकार हवेली की उत्तर दिशा में ईशान कोण से लेकर उत्तर के दरवाजे तक १० मन्दिर आये हैं । ईशान कोण के मन्दिर को छोड़कर पश्चिम दिशा में दूसरा मन्दिर श्याम मन्दिर है, जिसमें रसोई तैयार होती है । इस मन्दिर से पश्चिम दिशा में दूसरा मन्दिर सीढ़ियों वाला मन्दिर है, जिससे रंगमहल की नवों भोम में जाया जाता है । इस मन्दिर की पश्चिम दिशा में श्वेत रंग का मन्दिर आया है । उत्तर के दरवाजे से लेकर वायव्य कोण तक दस मन्दिर की देहलान दक्षिण की तरफ आयी है । पश्चिम दिशा में बीस मन्दिर है, एवं मध्य में एक बड़ा दरवाजा आया है । इन मन्दिरों की भीतरी तरफ एक थम्भों की हार चारों तरफ घेरकर आयी है, जिनके उपर सुन्दर मेहराबों की अपरम्पार शोभा आयी है । थम्भों की इस हार की भीतरी तरफ कमर भर ऊँचा चौरस चबूतरा आया है, जिसकी चारों दिशा के मध्य में तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं । चबूतरे की चारों तरफ किनार पर थम्भों की हार आयी है । चारों दिशा की सीढ़ियों की जगह को छोड़कर थम्भों के बीच में कठेड़ा शोभा ले रहा है । चबूतरे के ऊपर सुन्दर पशमी गिलम बिछी है, जिसमें अनेकों प्रकार के रंगों के नगों की चित्रकारी की शोभा आयी है ।

Nijanand App

गिलम के ऊपर सिंहासन एवं कुर्सियों की अपरम्पार शोभा हो रही है । ऊपर छत में रंग बिरंगे चन्द्रवा की शोभा आयी है । पूर्व दिशा में देहलान आने के कारण दरवाजा नहीं आया है । बाकी तीनों दिशाओं के दरवाजों की बाहरी तरफ दायें-बायें दो-दो चबूतरे कमर भर ऊँचे आये हैं । हवेली की बाहरी तरफ घेर कर थम्भों की एक हार आयी है । अन्य सभी चौरस हवेलियों की शोभा इसी के समान आयी है । अन्तर केवल इतना ही है कि यह रसोई की हवेली है, जिससे तीन दिशाओं में तीन देहलाने आयी है, जो अन्य हवेलियों में नहीं आयी हैं । इसके अतिरिक्त अन्य हवेलियों में मन्दिर तो हैं, किन्तु श्याम, श्वेत और सीढ़ियों के मन्दिर जैसी बनावट नहीं आयी है । प्रत्येक हवेली की बाहरी तरफ थम्भों की एक हार आने से दो हवेलियों के बीच में थम्भों की दो हारें एवं तीन गलियां दिखायी देती हैं । भीतर प्रवेश करने पर एक थम्भों की हार और दो गलियां तथा चबूतरे पर थम्भों की एक हार दिखायी देती है । प्रत्येक हवेलियों के आमने सामने जहां दरवाजे आयें है, वहां पर चार चबूतरे एवं चौबीस मेहराबें दिखायी देती हैं । प्रत्येक चार हवेलियों के कोनों पर २४ मेहराबें आयी है । इस प्रकार चार चौरस हवेलियों की शोभा को देखती हुई पांचवी गोल हवेली मूल मिलावे में प्रवेश किया ।

९. मूल मिलावे का दृश्य

पांचवी गोल हवेली आने के कारण थम्भों की एक हार लम्बाई में और दूसरी हार गोलाई में आयी है, जिससे यहां पर भी तीन गलियां दिखायी देती है । थम्भों की दो हार एवं तीन गलियों को पार करके पूर्व के दरवाजे से अन्दर गयी तो क्या देखी कि साठ मन्दिरों की एक हार चारों तरफ से घेर कर आयी है । प्रत्येक मन्दिरों में देखने के चार-चार और गिनती के तीन-तीन दरवाजे आये हैं । चारों दिशाओं में चार बड़े दरवाजे

आये हैं । मन्दिरों की इस हार के पश्चात् अन्दर की तरफ ६४ थम्भों की दूसरी हार आयी हैं । इसकी भीतरी तरफ कमर भर ऊँचा गोल चबूतरा आया है, जिसके चारों तरफ किनार पर ६४ थम्भों की तीसरी हार आयी है । चबूतरे की चारों दिशा में तीन-तीन सीढ़ियां आयी हैं । सीढ़ियों की जगह छोड़कर थम्भों के बीच में कठेड़ा आया है । चबूतरे के ऊपर लाल रंग की पशमी गिलम बिछी हुई है । गिलम की किनार पर चार दोरी (श्याम, श्वेत, हरी और पीली) आयी है तथा कई नगों की चित्रकारी की शोभा आयी है । ऊपर छत में हरे रंग का चन्द्रवा आया है, जो अनेकों रंगों की चित्रकारी से युक्त है । चन्द्रवा के चारों तरफ मोतियों की झालर शोभा ले रही है । चबूतरे की पूर्व दिशा की सीढ़ियों के दोनों किनार पर दो थम्भ पाच (हरे रंग का नग) के आये है । इसके दायें बायें दो थम्भ नीलवी के हैं । पश्चिम दिशा में दो थम्भ नीलवी के तथा दायें-बायें दो पाच के थम्भ आये हैं । दक्षिण दिशा में दो थम्भ माणिक के तथा दायें बायें पुखराज के दो थम्भ आये हैं । उत्तर दिशा में दो थम्भ पुखराज के तथा अगल बगल माणिक के दो थम्भ है । चारों दरवाजों के बीच के चारों खांचों में १२-१२ थम्भ आये हैं, जो निम्नलिखित हैं ।

हीरा लसनिया गोमादिक, मोती पाना प्रवाल ।
हेम चांदी थंभ नूर के, थम्भ कंचन अति लाल ।।
पिरोजा और कपूरिया, याके आठ थम्भ रंग दोए ।
गिन छोड़े दोऊ द्वार से, बने हर रंग चार-चार सोए ।।

थम्भों का क्रम तीनों हारों में एक ही क्रम से है । एक-एक नंग के चार-चार थम्भ आये हैं । थम्भों का क्रम पूर्व और पश्चिम के दरवाजे के चार थम्भों को छोड़कर दायें-बायें एक ही क्रम से आया हैं । १२ नगों के १२ थम्भ और चार थम्भ ४ धातुओं के आये हैं । इन थम्भों की मेहराबें

Nijanand App

दो-दो रंगों की दिखायी देती हैं । गोल चबूतरे की पश्चिम दिशा की सीढ़ियों के उत्तर तरफ पाच और नीलवी के थम्भों के बीच कठेड़े से लगकर कंचन रंग का सिंहासन आया है । इसका प्रमाण श्री महामतिजी की बड़ी वृत्त में इस प्रकार दिया गया है-

इन दुलीचे पर सोभित, कंचन रंग सिंहासन ।
पाच नीलवी के लगते, झलकत नूर रोसन ॥
द्वार पैठते सामने, तरफ दाहिने हाथ ।
हक हादी बैठे तखत, लग लग अंग के साथ ॥

महामति बड़ी वृत्त । १५/८३-८४

सिंहासन के छः पाये और छः डांडे है । एक एक डांडे में १० रंग के १० पहल हैं । छः पायों के तखत के ऊपर एक गादी, दो चाकले और पांच तकिये आये है ।

छः डांडों के ऊपर छः कलश तथा दो कलश दो छत्रियों के ऊपर सोने के आये हैं । सिंहासन पर दायी ओर श्री राजजी तथा बायीं ओर श्री श्यामाजी विराजमान हैं । श्रीराजजी अपना बायां चरण कमल नूर की चौकी पर और दाहिना चरण कमल बायें चरण के जंघे पर रखकर विराजमान हैं । श्री श्यामा जी के दोनों चरण कमल नूर की चौकी पर हैं । श्री राजजी केशरिया रंग की इजार (चूड़ीदार पैजामा) सफेद रंग का जामा (तनीदार घुटनों तक का कुर्ता) कमर में नीलों न पीलो (Parrot Colour) बीच के रंग का पटुका, कन्धे पर आसमानी रंग की पिछौरी, शीश कमल के उपर सेंदुरिया रंग का चीरा (पाग) धारण किये हुए सुशोभित है । श्री श्यामा जी का श्रृंगार सिन्दुरिया रंग जड़ाव की साड़ी, श्याम रंग जड़ाव की कंचुकी और नीली लाहि को चरणिया (पेटीकोट) है ।

सखियां तीन हारों में न बैठकर आपस में इस प्रकार श्री राजजी के सन्मुख गले में बांहें डालकर सट-सटकर बैठी हैं जैसे अनार के दाने । श्रीमुख वाणी के कथनानुसार चारों रास्ते भी बन्द पड़े है ।

ए मेला बैठा एक होए, रुहें एक दुजी को अंग लाग ।
आवें न निकसे इतथें, बीच हाथ न अंगुरी मांग ॥

सागर २/१

१०. चार गोल हवेलियों की शोभा

चौरस हवेलियों की तरह गोल हवेलियों के आमने-सामने बड़े दरवाजे जहां आये हैं, वहां पर चार चबूतरों एवं २४ मेहराबों की शोभा आयी है । चार गोल हवेलियों के कोनों पर चौक आया है। गोल हवेलियों के सभी मन्दिर दो-दो रंग के दिखायी देते हैं । सभी मन्दिरों में सेज्या, सिंहासन, कुर्सी, खाने पीने की अपार सामग्री और अपार वस्त्राभूषणों की पेटियां इत्यादि यथास्थान पर शोभा दे रही हैं ।

११. पंचमहल की चार हार हवेली का दृश्य

आठवें फिरावे के गोल हवेलियों की भीतरी तरफ नवां फिरावा पंच महलों का आया है । एक पंचमहल की शोभा इस प्रकार है - चार दिशाओं में चार मन्दिर है और एक मन्दिर उन चारों के मध्य में आया है। प्रत्येक मन्दिर मे ४-४ दरवाजे दिखायी देते हैं । पंचमहल के चारों कोनों पर चार थम्भ आये हैं । चारों दिशाओं में घेर कर २० थम्भ आये हुए हैं । इसी प्रकार सभी पंचमहलों की शोभा आयी है ।

Nijanand App

१२. दूसरी भोम के दस मन्दिर का हांस

रंगमहल की पूर्व दिशा में मुख्य द्वार की बाहरी तरफ जो दो चबूतरे आये हुए हैं, उन चबूतरों के ऊपर दूसरी भोम में चार मन्दिर के लम्बे और दो मन्दिर के चौड़े दो बड़े झरोखें दिखायी देते हैं । दोनों झरोखों की पूर्व दिशा में पहली भोम के चबूतरे के माफक पांच नगों के १० थम्भ आये हैं । दोनों झरोखों के उत्तर, पूर्व एवं दक्षिण में कठेड़ा शोभा ले रहा है । दोनों झरोखों के बीच में जो दो मन्दिर की लम्बी चौड़ी चौक की जगह आयी है, उस जगह में मुख्य दरवाजे के ऊपर एक और झरोखा शोभा ले रहा है । बाकी शोभा पूर्व में वर्णित की जा चुकी है ।

१३. दूसरी भोम–भूल भूलवनी

रंगमहल की उत्तर दिशा में लाल चबूतरा के सामने जो १२०० मन्दिर आये हैं, उन १२०० मन्दिरों की पूर्व दिशा में ११० मन्दिरो के सामने भीतरी तरफ १६ चौरस हवेलियों की जगह पर भूलवनी के मंदिर आये हैं अर्थात् लाल चबूतरे और खड़ोकली के बीच चालीस मन्दिर और चालीस मन्दिर खड़ोकली की पूर्व दिशा के और ३० मन्दिर खड़ोकली के सामने के । इन ११० मन्दिरो के सामने १६ हवेलियों की जगह में ११० मन्दिरों की ११० हारें आयी हैं ।

चबूतरे चेहेबच्चे लग, बीच चालीस मन्दिर ।
चालीस चेहेबच्चे परे, अस्सी बीच तीस अन्दर ॥

इस प्रकार कूल १२१०० मन्दिर हुए । इनके मध्य में १०० मन्दिर की जगह में १० मन्दिर का लम्बा चौड़ा चौक आया है । इस चौक में एक मन्दिर की चौड़ी परिक्रमा की जगह छोड़कर आठ मन्दिर का लम्बा चौड़ा एक चबूतरा आया है । चबूतरे के ऊपर थम्भ एवं ३२ मेहराबें आयी हैं ।

भूलवनी के प्रत्येक मन्दिरों में देखने के चार-चार दरवाजे है, किन्तु गिनती के दो-दो ही दरवाजे हैं । भूलवनी के सभी मन्दिरों की दिवाले और दरवाजे आदि सम्पूर्ण सामग्री नूरमयी चेतन दर्पण की है, जिससे एक-एक स्वरूप के असंख्यों प्रतिबिम्ब दिखायी पड़ते हैं और असल नकल की पहचान नहीं हो पाती है ।

१४. खड़ोकली

लाल चबूतरे की पूर्व दिशा में ४० मन्दिर की दूरी पर ताड़वन के अन्दर ३० मन्दिर की लम्बी-चौड़ी खड़ोकली आयी है । खड़ोकली की पश्चिम, उत्तर और पूर्व दिशा में चबूतरे के ऊपर कुल ८८ मन्दिर आये हुए हैं । इन सभी मन्दिरों की बाहरी दिवाल में दो-दो दरवाजे और मध्य में एक-एक झरोखे की शोभा आयी है । सन्धि की दिवाल में भी एक-एक दरवाजा आया है । भीतरी दिवाल में दरवाजा नहीं आया है, क्योंकि इन मन्दिरों की भीतरी तरफ कुण्ड का पानी भरा हुआ है । खड़ोकली के मन्दिरों की बाहरी तरफ तीनों दिशा में रौंस आयी है । रौंस के मध्य भाग से चांदों से सीढ़ियां जमीन पर उतरी है । चांदों की जगह को छोड़कर बाकी रौंस की जगह में कठेड़ा आया है । खड़ोकली के मन्दिरों की एक भोम आयी है । खड़ोकली की दक्षिण दिशा में रंगमहल की तरफ एक भोम की ऊँची दिवाल आयी है । इस दिवाल से रंगमहल की तरफ ५० मन्दिर का चौड़ा छज्जा निकला है । इसी तरह रंगमहल की तरफ से ५० मन्दिर का चौड़ा छज्जा निकलकर खड़ोकली के छज्जे से मिल गया है, जिससे रंगमहल के मन्दिरों में आने जाने का रास्ता हो गया है । खड़ोकली तीन भोम की गहरी है । एक भोम जमीन के अन्दर, दूसरी भोम रंगमहल के चबूतरे के बराबर और तीसरी भोम रंगमहल की पहली भोम के मन्दिरों के बराबर आयी है ।

Nijanand App

१५. तीसरी भोम के दस मंदिरों की हांस

तीसरी भोम में मुख्य दरवाजे के ऊपर चार मन्दिर की लम्बी और एक मन्दिर की चौड़ी देहेलान आयी है । इस देहेलान की पूर्व एवं पश्चिम दिशा में दो-दो थम्भों के ऊपर तीन-तीन मेहेराबें आयी हैं । मध्य की दो मेहराबें दो मन्दिर की लम्बी और एक भोम की ऊँची आयी है तथा दायें बायें की दो-दो मेहेराबें एक-एक मन्दिर की चौड़ी और एक-एक भोम की ऊँची शोभा ले रही हैं । इस देहेलान से लगता हुआ पश्चिम दिशा में चार मन्दिर का लम्बा और एक मन्दिर का चौड़ा कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है, जो मुख्य दरवाजे की भीतरी तरफ पहली गली के ऊपर शोभा ले रहा है । इस चबूतरे से उत्तर-दक्षिण दिशा में तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं और पश्चिम दिशा में २८ थम्भ के चौक के चार थम्भ एवं तीन मेहराबें आयी हैं, जिसमें मध्य की मेहराब दो मन्दिर की लम्बी एवं एक भोम की ऊँची आयी है । चबूतरे की पश्चिम दिशा से तीन सीढ़ियां उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर चबूतरे के उत्तर-पश्चिम एवं दक्षिण में कठेड़ा शोभा ले रहा है । देहेलान की दक्षिण एवं उत्तर दिशा में जो तीन-तीन मन्दिर आये हुए है, उन मन्दिरों की जमीन, पड़साल एवं देहेलान चबूतरे के बराबर आयी है । इन छः मन्दिरों की पश्चिम दिशा के दरवाजों के सामने चांदों से तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं ।

देहेलान की उत्तर एवं दक्षिण दिशा के तीसरे मन्दिर से चौथे मन्दिर में जाने के लिये सन्धि के दरवाजे के सामने तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं ।

प्रातः काल पौने ६ बजे श्री राज, श्री ठकुरानी जी, समस्त सखियों को लेकर पांचवीं भोम के रंग परवाली मन्दिर से तीसरी भोम की पड़साल में पधारते हैं । पड़साल की पूर्व दिशा के मध्य की मेहेराब में श्री राज श्यामा जी खड़े होते हैं और दायें बायें ६-६ हजार सखियां कठेड़े को

पकड़ कर खड़ी हो जाती हैं । सर्व प्रथम श्रीराजजी अपनी अमृतमयी नजरों से सातों घाटों के वनों को सींचते हैं तत्पश्चात् चांदनी चौक में खड़े हुए अनेकों जाति के पशु पक्षियों के ऊपर अपनी नजरों से अमृत वर्षा करते हैं । इस समय सभी जाति के वन, पशु-पक्षी श्रीराजजी के इश्क में सराबोर होकर सिजदा बजाते हैं और मस्ती में झूम-झूमकर नाचने लगते हैं । दर्शन देने के उपरान्त चार सखियां श्रीराजजी का चार मन्दिर की देहलान में आभूषणों का श्रृंगार कराती हैं और चार सखियां श्री श्यामाजी को लेकर २८ थम्भ के चौक की दक्षिण दिशा में दूसरी हार के आसमानी रंग के मन्दिर में आभूषणों का श्रृंगार कराती हैं । बाकी सभी सखियां ६-६ हजार मन्दिरों की दोनों हारों में एक दूसरे को आभूषणों का श्रृंगार कराती हैं । सभी सखियां श्रृंगार करके श्री श्यामाजी के पास आकर चरणों में प्रणाम करती है । श्री श्यामाजी को लेकर सखियां आसमानी रंग के मन्दिर के उत्तरी दरवाजे से होकर २८ थम्भ के चौक से होते हुए चबूतरे की पश्चिम दिशा की सीढ़ियों के सामने आकर खड़ी हो जाती हैं । श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी की इच्छानुसार सबको लेकर चार मन्दिर के चबूतरे पर आते हैं । अनेकों प्रकार के मेवा-मिठाई सभी सखियों के साथ आरोगते हैं । आरोगने के पश्चात् साढ़े सात बजे सभी सखियों को लेकर देहलान की दक्षिण दिशा के दूसरे मन्दिर से होते हुए पड़साल में सिंहासन के ऊपर विराजमान हो जाते हैं । नीलो-पीलो मन्दिर के सामने पुखराज और पाच थम्भों के बीच कठेड़े से लगकर पश्चिम की तरफ मुख किये हुए सिंहासन आया है । इस समय नवरंगबाई अपने जुत्थ की सखियों के साथ नृत्य प्रारम्भ करती है। ठीक इसी समय अक्षर ब्रह्म अपने अक्षर धाम से महालक्ष्मी, एवं अपनी सम्पूर्ण सेना को साथ लेकर श्रीराजजी का दीदार करने के लिये चांदनी चौक में आते हैं ।

Nijanand App

इत चार घड़ी दिन बीतत, पांचवी का अमल राह आसमान ।
बैठे जोड़े सुखपाल में, लक्ष्मी जी और भगवान ॥
सब सैन्या ले आवत, इत पावत सब दीदार ।
इनों ऊपर मेहर नजर का, करत परवरदिगार ॥

महामति बड़ी वृत्त १९/२,४

अक्षर ब्रह्म दर्शन करके अपने महल को वापस चले जाते हैं । कुछ सखियां वनों से पान, फल-फूल तथा मेवा इत्यादि लेकर प्रातः काल नौ बजे वनों से वापस आती है । श्री राज श्यामाजी को फूलों के हार से सजाती है और पानों के बीड़े लगाकर टोकरियों में भरकर नीले-पीले मन्दिर में पलंग के नीचे चौकी पर रख देती है । डेढ़ पहर अर्थात् १०१/२ बजे श्री लाडबाईजी थाल के लिये आज्ञा मांगती हैं । आज्ञा पाकर अपने जुत्थ की सखियों के साथ भोजन कराने की सेवा में लग जाती हैं ।

भोजन करने के उपरान्त सभी सखियां श्री राज श्यामा जी के चरणों में प्रणाम करती हैं और पानों के बीड़े लेकर वनों में सैर करने के लिये पधारती हैं । इधर श्री राज श्यामा जी नीलो-पीलो मन्दिर में १२ बजे से तीन बजे तक शयन लीला करते हैं । सब सखियां वनों से अनेकों प्रकार के फल इत्यादि लेकर तीन बजे नीलो-पीलो मन्दिर में आती हैं और श्री राज श्यामा जी के चरणों में प्रणाम करती हैं और अनेकों प्रकार के फल श्रीराज श्यामा जी को आरोगाती हैं । श्री राज श्यामा जी पान-बीड़ा लेकर तीसरी भोम की पड़साल में आकर सुखपालों की इच्छा करते हैं । सुखपाल छठीं भोम से आकर सेवा में हाजिर हो जाते हैं । श्रीराज श्यामाजी सभी सखियों सहित सुखपालों में बैठकर अपनी इच्छानुसार परमधाम के पच्चीस पक्षों में सैर करने के लिये पधारते हैं ।

१६. चौथी भोम-नृत्य की हवेली

रंगमहल की चौथी भोम में पहले फिरावे के चौरस हवेलियों की तीन हवेलियां छोड़कर चौथी हवेली नृत्य की हवेली है । इस हवेली की पूर्व दिशा में बीस मन्दिरों की जगह पर देहलान आयी हैं, जिसमें बीस-बीस थम्भों की दो हारें हरे रंग की आयी हैं । दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर दिशा में पूर्ववत् बीस-बीस मन्दिर आये हैं । दक्षिण दिशा के मन्दिरों की दिवालें एवं थम्भ लाखी (लाल) रंग के आये हैं । पश्चिम दिशा में श्वेत रंग की दिवाल एवं थम्भ आये है और उत्तर दिशा में मन्दिरों की दिवाल पीली रंग की है तथा थम्भ भी पीले रंग के हैं । चबूतरे की पश्चिम दिशा में सीढ़ियों की उत्तर तरफ दो थम्भों के बीच में कंचन रंग का सिंहासन शोभा ले रहा है । श्री युगल स्वरूप पूर्व की तरफ मुख करके सिंहासन पर विराजमान होते है । कृष्ण पक्ष में १५ दिन साढ़े सात बजे रात्रि से लेकर नौ बजे रात्रि तक नृत्य की लीला होती है ।

१७. पांचवी भोम के नौ चौक

रंगमहल की पांचवीं भोम के मध्य में जो नौ चौक आये हुए हैं, उनमें से मध्य के चौक का ब्यान किया जाता है । एक चौक के चारों कोनों में चार दोपुड़े आये हैं और चार दिशाओं में २८ त्रिपुड़े आये हैं । सात चौपुड़ों की सात हारें आयी हैं तथा आठ हवेलियों की आठ हारें आयी हैं । इस प्रकार अन्य चौकों की भी शोभा आयी है । नवों चौक एक दूसरे से जुड़े हुए हैं ।

१८. पांचवी भोम के रंग परवाली मन्दिर का दृश्य

नौ चौकों के मध्य के चौक के मन्दिरों का ब्यान किया जाता है । प्रत्येक दोपुड़े मे ७८ मन्दिर, त्रिपुड़े में १०२ मन्दिर, चौपुड़े में १२४

Nijanand App

मन्दिर और प्रत्येक हवेली में ४३ मन्दिर आये हैं । इस प्रकार सभी दोपुड़ो, त्रिपुड़ों, चौपुड़ों एवं हवेलियों में मन्दिरों की संख्या १२००० हुई... प्रत्येक मन्दिर में ४-४ दरवाजे दिखाई देते हैं । १४४ बड़े दरवाजे आए है । पूर्व से पश्चिम ९ की ८ हारें तथा उत्तंर से दक्षिण ९ की ८ हारें बड़े दरवाजों की आती है । एक चौक में ८१ चौक आये हुए हैं । चार दोपुड़ा के चार चौक, २८ त्रिपुड़ा के २८ चौक और ४९ चौपुड़ा के ४९ चौक आये हैं । इस प्रकार कुल मिलाकर ८१ चौक हैं । इन ८१ चौकों के मध्य के चौक में दो मन्दिर का लम्बा-चौड़ा रंग परवाली मन्दिर आया है, जिसकी चारों दिशाओं में चार दरवाजे आये हैं । ३६ हार हवेलियों को पार करके फुलवारी के चौक को पार करने के बाद नौ चौकों के पूर्व की दिशा में पहूँची । श्री महामति की बड़ी वृत्त के अनुसार-सभी मन्दिरों में चार-चार दरवाजे होने से दायें-बायें न मुड़कर सामने के मन्दिर के दरवाजे से प्रवेश किया । सामने एक गली को पार करके, एक थम्भों की हार छोड़कर त्रिपुड़ा के चौक में पहुंची । पुनः अपनी बायीं तरफ की त्रिपोलिया की मध्य गली से सीधे चलकर पहले चौक के पश्चिम किनारे के त्रिपुड़े के चौक से होते हुए पहले चौक को पार करके दूसरे चौक के आधे चौक को पार करके मध्य के रंग प्रवाली मन्दिर में पहुंची । इस रंग प्रवाली मन्दिर में सुन्दर नूरमयी लाल पलंग शोभायमान है, जिसके ऊपर गद्दा, चादर, रजाई इत्यादि सब सामग्री शोभायमान है । इस मन्दिर मे श्री राजश्यामाजी शयन लीला करते है तथा १२००० मन्दिरों में १२००० सखियां शयन लीला करती हैं ।

१९. छठीं भोम-सुखपाल

रंगमहल की छठीं भोम की बाहरी हार के ६००० मन्दिरों की भीतरी तरफ जो पहली गली (देहलान) आयी है, उस देहलान में ६००० सुखपाल

आये हैं । २८ थम्भ के चौक में एक तखतरवा (बड़ा विमान) आया है, जिसमें श्रीराज श्यामाजी सहित सभी सखियां बैठकर दूर की सैर करती है । प्रत्येक सुखपाल में जोड़े-जोड़े सखियां बैठकर रंगमहल की नजदीकी सैर करती है ।

२०. सातवीं भोम-दो हिंडोलों की ताली

सातवीं भोम में जो छः छः हजार मन्दिरों की दो हारें आयी हैं । उनके बीच थम्भों की दो हारे आयी हैं । उन थम्भों की मेहराबों में छः छः हजार हिंडोलों की दो हारें आयी हैं । इस प्रकार कुल १२००० हिंडोले आये हैं । यहां पर दो हिंडोलों की ताली पड़ती है । श्रीराज श्यामाजी एवं सखियां आमने-सामने नजर बांधकर झूले झूलती हैं ।

२१. आठवीं भोम के चार हिंडोलों की ताली

छः छः हजार मन्दिरों की दो हारों के बीच में जो थम्भों की दो हारें आयी हैं, उन थम्भों की मेहराबों में छः छः हजार हिंडोलों की दो हारें आयी हैं और छः हजार हिंडोलों की एक हार मध्य की गली की मेहराब में आयी है । इस प्रकार आठवीं भोम में कुल १८००० हिंडोले शोभा ले रहे हैं । यहां पर चार हिंडोलों की ताली पड़ती है ।

२२. नवमी भोम के २०१ छज्जों की शोभा

रंगमहल की नवीं भोम की बाहरी तरफ जो छः हजार मन्दिरों की हार आयी है, उन मन्दिरों की भीतरी दिवाल यथावत् आयी है । बाहरी दिवाल की हद पर ६ हजार थम्भ आये हुए हैं । इन थम्भों से बाहरी तरफ एक मन्दिर का चौड़ा छज्जा चारों तरफ घेर कर आया है । छज्जे की बाहरी किनार पर भी थम्भों की एक हार आयी है । इन थम्भों के बीच में कठेड़ा

Nijanand App

शोभा ले रहा है । छज्जे की बाहरी तरफ घेरकर ढालदार छज्जा आया हुआ है । रंगमहल के २०१ हांस में २०१ गुर्ज आने से २०१ छज्जे दिखायी देते हैं । प्रत्येक छज्जों पर एक-एक सिंहासन और दायें-बायें कुर्सियों की अपरम्पार शोभा आयी है । छज्जे की जमीन भीतरी देहलान की जमीन से कमर भर ऊँची आयी है । इस छज्जे की भीतरी तरफ जो दिवाल आयी है, उस दिवाल के प्रत्येक दरवाजे के सामने चांदों से देहलान में सीढ़ियां उतरी है । यहां पर बैठकर श्री राज श्यामाजी सखियों को दूर-दूर की वस्तुओं को अपनी अंगुलियों के इशारे से दिखाकर आनन्दित करते हैं ।

२३. दसवीं चांदनी पर बाग बगीचे

रंगमहल की दसवीं आकाशी पर चौरस हवेलियों के ऊपर अनेकों जाति के फूलों के बगीचे आये हुए हैं तथा गोल हवेली के ऊपर रंग बिरंगी घास की शोभा आयी है । पंचमहलों की छत के ऊपर छोटे-छोटे फलदार वृक्ष आये हुए हैं । हवेलियों की गलियों के ऊपर नहरों की शोभा आयी है । चार हवेलियों के कोनों की जगह पर चेहेबच्चों की अपरम्पार शोभा आयी है । प्रत्येक चेहेबच्चों में पांच-पांच फव्वारे आये हुए हैं । चार दिशाओं के चार फव्वारों का पानी कमानों के रूप में होकर दूसरे चेहेबच्चों में गिरता है । इस प्रकार एक चेहेबच्चे का पानी चार चेहेबच्चों में तथा चार चेहेबच्चों का पानी एक चेहेबच्चे में गिरता है । चांदनी के मध्य में नौ चौकों के ऊपर २०० हांस का कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है, जिसकी चारों दिशा से कमर भर सीढ़ियां उतरी हैं । चारों कोनों में चार चेहेबच्चों की अपरम्पार शोभा हो रही है । चबूतरे के ऊपर पशमी गिलम बिछी हुई है, जिसके ऊपर कई प्रकार के सिंहासन, कूर्सियां बेशुमार शोभा ले रही हैं । इस प्रकार चांदनी की शब्दातीत शोभा आयी है ।

२४. दसवी चांदनी पर देहेलान

रंगमहल की दसवीं चांदनी की किनार पर तीन मंदिर का चौड़ा एवं २०१ हांस का लम्बा कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है । इस चबूतरा के मध्य भाग में अर्थात् छः हजार बाहरी हार मन्दिरों के ऊपर १० कम छः हजार देहलान आयी हैं । एक मन्दिर की देहलान में चारों कोनों पर चार थम्भ एवं चारों दिशाओं में आठ थम्भ दिखायी दे रहे हैं । इन थम्भों में चारों दिशाओं में १२ मेहराबें दिखायी देती हैं । चारों दिशा की मध्य की मेहराबें अक्शी आयी हैं । अक्शी मेहेराबों के दायें-बायें एक-एक खुली मेहराबें दिखायी दे रही है । इन मेहराबों पर एक ही छत आयी है । इसी प्रकार सभी देहलानों की शोभा आयी है ।

रंगमहल की पूर्व दिशा में जो १० मन्दिर का हांस आया हुआ है, वहां पर १० मन्दिर की लम्बाई तथा चार मन्दिर की चौड़ाई में १० थम्भों की चार हारें आयी हैं । इनकी एक ही छत दायें-बायें देहेलान की छत से मिलकर आयी है । इस देहेलान की भीतरी तरफ जो एक मन्दिर की चौड़ी रौंस चारों तरफ घेर कर आयी है, उस रौंस के हांस-हांस के मध्य भाग से चादों से तीन तीन सीढ़ियां उतरी हैं । देहेलान की बाहरी रौंस पर २०१ गुर्जो की दिवाल देहेलान की छत के बराबर आयी है ।

२५. दसवीं चांदनी पर गुमटियां

छः हजार मन्दिरों की देहेलानों की चांदनी पर १२ हजार गुमटियां आयी हैं । १० मन्दिर की लम्बी और ४ मन्दिर की चौड़ी देहेलान के ऊपर चारों कोनों में चार गुमटियां आयी हैं । प्रत्येक मन्दिर की देहेलान के ऊपर दो-दो गुमटियां आयी है । गुमटियों के ऊपर कलश, ध्वजा, पताका आदि की अपरम्पार शोभा आयी है । प्रत्येक मन्दिरों की देहेलान

Nijanand App

की सन्धि के बाहरी एवं भीतरी किनार पर एक-एक कंगुरा लाल रंग का दिखायी दे रहा है । सभी कंगुरों के बीच में कांगरी की सुन्दर शोभा आयी है । देहेलान की बाहरी तरफ २०१ गुर्जो पर २०१ गुम्मट आये हैं । प्रत्येक गुम्मटों पर कलश, ध्वजा, पताकाओं की अपार शोभा आयी है।

२६. अमृत वन का दृश्य

रंगमहल की पूर्व दिशा में मुख्य द्वार के सामने अमृतवन आया है जिसकी २००० मन्दिर की लम्बाई तथा ५०० मन्दिर की चौड़ाई आयी है। इस अमृतवन की पश्चिम दिशा में रंगमहल के चबूतरे से लगता हुआ १६६ मन्दिर का लम्बा चौड़ा चांदनी चौक आया है । चांदनी चौक के दायें बायें १६६ मन्दिर की अमृतवन की हद आयी है । चांदनी चौक की पूर्व दिशा के मध्य भाग से दो मन्दिर की चौड़ी रौंस अमृतवन के मध्य से होकर वन की रौंस से जाकर मिली है । इस अमृतवन के अन्दर १६ खड़ी नहरों और १० आड़ी नहरों के बीच आठ बगीचे दिखायी दे रहे हैं ।

आठों बगीचों में दो-दो मन्दिर के फासले पर आम के वृक्षों के बीच में कई प्रकार के मेवों के वृक्ष आये हैं । इन बगीचों में नहरों और चेहेबच्चों की बेशुमार शोभा दिखायी देती है ।

२७. श्री रंगमहल की नजदीकी परिकरमा की शोभा

श्री रंगमहल की पूर्व दिशा में सात घाट- केल, लिबोई, अनार, अमृत, जाम्बू, नारंगी और बट घाट) आये हैं । सातों घाटों की पूर्व दिशा में श्री यमुनाजी, केल एवं बटका पूल, पाट घाट, अक्षर के सातों घाट एवं अक्षरधाम आया हुआ है । रंगमहल की दक्षिण दिशा में बट पीपल की चौकी, कुञ्ज, निकुञ्ज, हौज कोसर तालाब और २४ हांस का महल आया हुआ है । रंगमहल से लगता हुआ पश्चिम दिशा में फूल बाग, नूर

बाग, अन्न बन, दूब दुलीचा और पश्चिम की चौगान आयी है । रंगमहल से लगता हुआ उत्तर दिशा में लाल चबूतरा, खड़ोकली, ताड़वन, बड़ोवन, मधुवन, महावन और पुखराजी पहाड़ आया है ।

२८. सोलह हांस का चेहेबच्चा

रंगमहल की बाहरी तरफ भोम भर चबूतरे से लगता हुआ चारों कोने में सोलह हांस के चार चेहेबच्चे आये हैं, जिसमें अग्नि कोण के एक चेहेबच्चे का ब्यान किया जाता है । यह चेहेबच्चा ४८० मन्दिर की गिर्द में आया हैं, जिसमें १६ पहल आये हैं । इस चेहेबच्चे की एक हांस रंगमहल के चबूतरे से लगी हुई है, बाकी १५ हांस चारों तरफ से घेर कर आये हैं । जमीन से भोम पर ऊँची एक मन्दिर की चौड़ी १६ पहल की दिवाल आयी है । इस दिवाल के ऊपर एक मन्दिर की चौड़ी रौंस चारों तरफ घेर कर आयी है । इस रौंस से दक्षिण, पूर्व तथा उत्तर दिशा में चांदों से भोम भर की सीढ़ियां दोनो तरफ उतरी है और दो सीढ़ियां रंगमहल के चबूतरे और चेहेबच्चे की दिवाल के दोनों कोनों से उतरी हैं । सीढ़ियों एवं चांदों की जगह को छोड़कर रौंस की बाहरी किनार पर कठेड़ा आया है । इस रौंस की भीतरी तरफ चारों दिशा में कमर भर नीचे जल चबूतरे पर चांदों से तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं । चांदों की जगह को छोड़कर रौंस एवं जल चबूतरे की भीतरी किनार पर चारों ओर घेर कर कठेड़ा आया है । यह चेहेबच्चा दो भोम गहरा आया है । चेहेबच्चे की दिवाल से लगकर जमीन से कमर भर ऊँची दो मन्दिर की चौड़ी रौंस चारों तरफ घेर कर आयी है, जिस पर वृक्षों की दो हारें आयी हैं । इस चेहेबच्चे के जल चबूतरे तक जाम्बू, नारंगी एवं बट के वृक्षों की डालियां झूलती हुई शोभा दे रही हैं । इस चेहेबच्चे के अन्दर पांच बड़े फव्वारे आये हैं । इसी तरह अन्य तीनों चेहेबच्चो की बनावट आयी है ।

Nijanand App

२९. बट पीपल की चौकी

रंगमहल से लगती हुई दक्षिण दिशा में १५०० मन्दिर की लम्बाई तथा ५०० मन्दिर की चौड़ाई में बट पीपल की चौकी आयी है । इसमें १००-१०० मन्दिर के लम्बे-चौड़े १५ चौकों की ५ हारें आयी है अर्थात् ७५ चौक आये हैं । प्रत्येक चौक की चारों दिशा में चार नहरें रौंसों सहित शोभा ले रही है और चारों कोनों में चार-चार चेहेबच्चे आये हुए हैं । प्रत्येक चौक के मध्य भाग में ३३ मन्दिर का लम्बा चौड़ा कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है । चबूतरों की चारों दिशा से तीन-तीन सीढ़ियां चौकों में उतरी हैं । प्रत्येक चबूतरे के मध्य भाग में बट एवं पीपल के वृक्ष क्रमशः आये हुए हैं । प्रत्येक वृक्षों की डालियां एक दूसरे से सुन्दर मेहराब के रुप में मिली हुई हैं । प्रत्येक मेहराब के मध्य में एक-एक झूला शोभा ले रहा है । १६ चेहेबच्चों की ६ हारें पहली भोम में आयी हैं और चार चेहेबच्चे चांदनी के चारों कोनों पर आये हैं । इस प्रकार कुल १०० चेहेबच्चे आये हैं । एक भोम में १३० हिंडोले आये है । बट पीपल की चौकी की चार भोम पांचवी चांदनी आयी है । इसके कुल हिंडोलों की संख्या ५२० तथा वृक्षों की कुल संख्या ७५ है ।

३0. फूलबाग के सौ बगीचे

रंगमहल से लगता हुआ पश्चिम दिशा में नूरबाग के ऊपर फूलबाग आया है । १५०० मन्दिर की लम्बाई चौड़ाई में १० बगीचों की १० हारें आयी हैं । प्रत्येक बगीचा १५० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा आया है । प्रत्येक बगीचे की चारों दिशा में चार नहरें और चारों खूंटों में चार चेहेबच्चे शोभा ले रहे हैं । प्रत्येक चेहेबच्चों का पानी कमानों के रुप में एक दूसरे में गिरता है । फूलबाग के चारों कोनों में १६-१६ हाँस के चार चेहेबच्चे

आये हैं । तीन हजार चेहेबच्चे फूलबाग की पूर्व दिशा में आये हैं । प्रत्येक बगीचों में तीन-तीन मन्दिर की दूरी पर अनेकों जाति के फूल आये हैं । इस फूलबाग की उत्तर, दक्षिण एवं पश्चिम दिशा में बड़े वन के वृक्षों की पांच हारें आयी हैं, जिनकी ऊँचाई पांच भोम की आयी है । इन पांचों भोमों में सुन्दर झूले शोभायमान हैं ।

३१-३२. फूलबाग का एक बगीचा

फूलबाग के एक बगीचे की चारो दिशा में पौने तीन मन्दिर का चौड़ा और कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है । चबूतरे के मध्य भाग में ७५ हाथ की चौड़ी कमर भर गहरी नहर आयी है । नहरों के मध्य भाग में पूल आया है । नहरों के दोनों तरफ एक-एक मन्दिर की चौड़ी पाल आयी है । पाल के मध्य भाग में फुलवारी और दायें बायें रौंस शोभा ले रही है । एक बगीचे के चारों कोनों में चार बड़े चेहेबच्चे आये हैं । एक बगीचे में आड़ी खड़ी तीन नहरें आयी हैं, जिससे एक बड़े बगीचे में २४ छोटे बगीचे और नौ छोटे चेहेबच्चे आते हैं । इस प्रकार सौ बगीचों के सभी चेहेबच्चे ४११२ हुए । सभी बगीचों की चारों दिशा में तीन-तीन सीढ़िया और चारों कोनों से गोलाई में सीढ़ियां उतरी हैं ।

३३. नूरबाग के सौ बगीचे

रंगमहल से लगता हुआ फूलबाग के नीचे नूरबाग आया हुआ है । नूरबाग और फूलबाग की शोभा एक समान आयी है । अन्तर केवल इतना ही है कि रंगमहल के चबूतरे से लगकर पश्चिम दिशा में जो १० बगीचे आये हैं, उन सभी बगीचों के मध्य भाग में १० सीढ़ियां आयी हैं । रंगमहल के नैऋत्य कोण के गुर्ज से उत्तर-दिशा में ७४ वें और ७५ वें मन्दिर की सन्धि की दिवाल आयी है । यह दिवाल आठ हाथ की मोटी

Nijanand App

है । दिवाल के मध्य भाग में दो मन्दिरों के दो दरवाजे आये हुए हैं । दोनों दरवाजों के बीच में ३३ हाथ का लम्बा और आठ हाथ का चौड़ा एक चौक आया हुआ है । उस चौक से ३३ हाथ की चौड़ाई में सीढ़ियां पश्चिमी दिवाल के नीचे से चबूतरे के अन्दर से होकर नूरबाग में उतरी हैं । इसी तरह १५० मन्दिर के अन्तर से अन्य ९ सीढ़ियां ९ बागो में उतरी हैं । फूलबाग की पूर्व दिशा में जो ३००० चेहेबच्चे आये हैं, वे नूर बाग में नहीं आये हैं ।

३४. नूर बाग के एक बगीचे की शोभा

नूरबाग के एक बगीचे की शोभा फूलबाग के समान आयी है । अन्तर केवल इतना ही है कि एक बगीचे को घेर कर बड़ी नहर की रौंस पर ६०० नूर के थम्भ आये हैं । तब १०० बगीचों में ६०००० थम्भ हुए और १०० बगीचों के चारों तरफ घेरकर ६००० थम्भ आये हुए हैं, इस प्रकार कुल ६६००० थम्भ हुए । इन थम्भों की छत के ऊपर फूलबाग आया हुआ है । नूर बाग में कुल १०१७ चेहेबच्चे आये हुए हैं ।

३५. अन्न वन

नूर बाग से लगता हुआ पश्चिम दिशा में १५०० मन्दिर की लम्बाई चौड़ाई में नूर बाग के समान १०० बगीचे आये हुए हैं । नहरों और चेहेबच्चों की शोभा नूरबाग के समान ही आयी है । अन्तर केवल इतना ही है कि यहां पर अनन्त जातियों के अन्नों, मेवों तथा शाक तरकारियों के खेत लहरा रहे हैं । नहरों और चेहेबच्चों की अपार शोभा हो रही हैं । मध्य के चेहेबच्चों के ऊपर देहुरियां आयी हैं । देहुरियों के ऊपर गुम्मट तथा गुम्मटों के ऊपर स्वर्ण कलश एवं झण्डे पताके शोभा ले रहे हैं ।

३६. दूब-दुलीचा

यह दूब दुलीचा अन्नवन से लगता हुआ पश्चिम दिशा में नूर बाग के समान की लम्बाई-चौड़ाई में आया हुआ है । यहां पर अनेकों रंगो की दूबों के कालीन की शोभा आयी है । नहरों और चेहेबच्चों की अपरम्पार शोभा नूर बाग के समान ही आयी है । प्रत्येक बगीचे के बड़े चेहेबच्चों के ऊपर देहुरियां आयी हैं, जिन पर गुम्मट, कलश, ध्वजा, इत्यादि की बेशुमार शोभा है ।

३७. कुञ्ज-निकुञ्ज तथा पश्चिम की चौगान

दूब-दुलीचा की पश्चिम दिशा में साढ़े चार लाख कोस की चौड़ी पूरब से पश्चिम और ९ लाख कोस की लम्बी उत्तर से दक्षिण पश्चिम की चौगान आयी है । यहां पर कई प्रकार के मोतियों की रेती के चौक पड़े हैं, जिनकी अपार तेजराशि थम्भ रुप होकर आकाश में टकराती है । यहां पर श्रीराज, श्री ठकुरानीजी, समस्त सखियों के साथ जानवरों पर बैठकर तरह-तरह के खेल करते हैं ।

कुञ्ज-निकुञ्ज बट घाट सहित उत्तर से दक्षिण १५०० मन्दिर की चौड़ाई लेकर, बट पीपल की चौकी और हौज कौशर तालाब के बीच से होते हुए, नूर बाग, अन्न बन तथा दुब-दुलीचा की दक्षिण की तरफ लगते हुए पश्चिम की चौगान की पूर्व दिशा से हौज कौशर तालाब के दक्षिण से होते हुए अक्षर धाम की पूर्व दिशा तक चला गया है । एक कुञ्ज निकुञ्ज की शोभा का ब्यान किया जाता है ।

कुञ्ज जमीन से कमर भर ऊँचे चौरस चबूतरे के ऊपर आया हुआ है, जिसकी चारों दिशा में रौंसो की जगह छोड़कर दरवाजे सहित ८३-८३ मन्दिर आये हुए हैं । मन्दिरों की भीतरी तरफ चारो तरफ थम्भों की

Nijanand App

हार घेर कर आयी है, जिससे एक चौरस देहलान की शोभा दिखायी देती है । इस देहेलान से भीतरी तरफ कमर भर नीचे फुलवारी आयी है, जिसमें बेशुमार नहरें, चेहेबच्चे आये हैं । बगीचे की भीतरी तरफ मध्य में एक चौरस कुण्ड आया हुआ है । कुण्ड की पाल के ऊपर सिंहासन एवं कुर्सियां शोभा ले रही हैं । एक कुञ्ज की आठों दिशा से आठ नहरें निकली हैं । प्रत्येक नहरों के दाये बायें दो-दो रौंसे और मध्य में मन्दिरों की एक हार आयी है । कुञ्ज वन के मन्दिर, सिंहासन, हिंडोले, सुख सेज्या तथा कुर्सियां इत्यादि सभी नूरमयी फूलों की बनी है । कुंज का कुण्ड ऊपर से खुला हुआ है ।

निकुञ्ज की शोभा कुञ्ज के समान ही आयी है । अन्तर केवल इतना ही है कि निकुञ्ज गोल आया हुआ है और इसका कुण्ड ऊपर से ढंपा हुआ है । कुञ्ज-निकुञ्ज की दो भोम तीसरी चांदनी आयी है । यहां की जमीन पर अनेकों प्रकार की मोतियों की रेती बिछी हुई है ।

३८. लाल चबूतरा

यह लाल चबूतरा रंगमहल के चबूतरे से लगता हुआ उत्तर दिशा में आया है, जो पूर्व से पश्चिम में १२०० मन्दिर का लम्बा और उत्तर से दक्षिण ३० मन्दिर का चौड़ा आया है । यह रंगमहल के वायव्य कोण के गुर्ज से लेकर पूर्व दिशा में रंगमहल के चालीस हांस के सामने शोभा ले रहा है । लाल चबूतरा जमीन से भोम भर ऊँचा है अर्थात् यह रंगमहल के चबूतरे के बराबर है । इस लाल चबूतरा की दक्षिण दिशा में रंगमहल के १२०० मन्दिरों में १२०० झरोखों के स्थान पर १२०० मेहराबें आयी हैं । लाल चबूतरा की उत्तर दिशा में हांस-हांस के मध्य भाग में चालीस चांदें आये हुए हैं, जिनसें दोनों तरफ भोम भर की सीढ़ियां जमीन पर उतरी हैं । लाल चबूतरे की पूर्व दिशा में भी एक चांदा आया हुआ है । चांदे की

जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा शोभा ले रहा है ।

इस चबूतरे का रंग लाल आया है । इस चबूतरे के ऊपर चालीस हांसों में चालीस रंग की पशमी गिलम बिछी हुई हैं । प्रत्येक गिलम के ऊपर एक-एक सिंहासन और कुर्सियों की अपार शोभा हो रही है । लाल चबूतरे से लगकर उत्तर दिशा में १२०० मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई की जगह में ४१ वृक्षों की ४१ हारें बड़े वन की आयी है । सभी वृक्ष एक-एक हांस की दूरी पर आये हैं । इन वृक्षों के बीच में ४० अखाड़ों की ४० हारें आयी है अर्थात् कुल १६०० अखाड़े आये हैं । लाल चबूतरे की उतरी किनार से ४१ वृक्षों की १७ हारें जो बड़े वन की आयी है, उनकी ऊँचाई १० भोम की आयी है । बाकी वृक्षों की ऊँचाई २५० भोम की आयी है । बड़े वन के सभी वृक्षों की सभी भोमों की डालियों में हिंडोले आये हैं । इनके १६०० अखाड़ों में अनेको प्रकार के जानवर कई तरह की लीला करके श्रीराज श्यामा जी एवं सखियों को रिझाते हैं । लाल चबूतरे की उत्तर दिशा के ४१ वृक्षों की डालियां लम्बी बढ़कर रंगमहल की चांदनी से मिलान की हैं, जो एक सुन्दर चन्द्रवा के रूप में लाल चबूतरे के ऊपर दिखायी देती है ।

३९. ताड़ वन

लाल चबूतरे की पूर्व दिशा में रंगमहल के १० हांस के सामने उत्तर-दिशा में ताड़वन आया है, जो १७ हांस का लम्बा दक्षिण से उत्तर तरफ और १० हांस का चौड़ा पश्चिम से पूर्व की तरफ आया है । एक-एक हांस के लम्बे चौड़े १७ बगीचों की १० हारें अर्थात १७० बगीचे आये हैं । एक बगीचे की जगह में खड़ोकली आयी है, जिससे ताड़वन के कुल १६९ बगीचे हुए । सभी बगीचों की चारों दिशाओ में नहरें, एवं चारों खूंटो में चेहेबच्चे आये हैं । इनकी अपरम्पार शोभा हो रही है ।

Nijanand App

४०. ताड़वन का एक बगीचा

ताड़वन का एक बगीचा एक हांस अर्थात् ३० मन्दिर का लम्बा चौड़ा आया है । इसकी चारों दिशाओं में एक मन्दिर की चौड़ी रौंस आयी है । रौंस के मध्य भाग में आधे मन्दिर की चौड़ी तथा भोम भर की गहरी नहर आयी है । नहर के दोनों तरफ $^1/_4$ मन्दिर की चौड़ी रौंस आयी है और नहर के मध्य भाग में पूल आया है । ताड़वन के एक बगीचे के चारों कोनों में चार चेहेबच्चे आये हैं, जिनसे पांच-पांच फव्वारे छूटते हैं । एक बगीचे के अन्दर ३१ वृक्षों की ३१ हारें आयी हैं, जिसमें से चारों तरफ किनार के १२० वृक्ष ताड़ के आये हैं, जिनकी ऊंचाई १० भोम के बराबर एक ही भोम की आयी है । चारों दिशा के मध्य के पेड़ की डालियों की मेहराबों में एक-एक झूला लगा हुआ है । ताड़ के वृक्षों को छोड़कर भीतरी तरफ जो २९ वृक्षों की २९ हारें आयी हैं, वे ताड़ के अतिरिक्त अन्य वृक्षों की है । इनकी दस भोमें आयी हैं । इनकी दसों भोमों में हिंडोले आये हैं । इसी तरह शेष बगीचों की शोभा समझनी चाहिए ।

४१. बड़ोवन, मधुवन तथा महावन का दृश्य

लाल चबूतरा की उत्तर दिशा में बड़ो वन के ४१ वृक्षों की १७ हारें आयी हैं । उनको छोडकर अन्य वृक्षों की ऊंचाई २५० भोम अर्थात् एक लाख कोस की आयी है । इनकी सभी भोमों में हिंडोले शोभा ले रहे हैं । बड़ेवन की उत्तर दिशा में मधुवन के वृक्ष आये हुए हैं, जिनकी ऊँचाई ५०० भोम अर्थात् दो लाख कोस की आयी है । मधुवन की भी सभी भोमों में हिंडोले आये हैं । मधुवन की उत्तर दिशा में महावन के वृक्ष आये हुए हैं, जिनकी ऊंचाई एक हजार भोम अर्थात् चार लाख कोस की आयी

है । इसकी सभी भोमों में सुन्दर झूले शोभा ले रहे हैं । मधुवन और महावन के वृक्षों के बीच में कई चौक, चबूतरे, नहरें, चेहेबच्चे, बेशुमार शोभा ले रहे हैं । इन वनों के अन्दर कई प्रकार के पशु-पक्षी इत्यादि अपनी-अपनी भाषा में रात-दिन धनी का जिक्र करते हैं । रंगमहल की चांदनी पर खड़े होकर उत्तर-दिशा में देखने से तीनों वनों की चांदनी तीन सीढ़ीं के रूप में दिखायी देती है ।

४२. पुखराज, बंगला, घाटी, बड़ोवन, मधुवन एवं महावन

रंगमहल से साढ़े चार लाख कोस की दूरी पर पुखराज पहाड़ आया हुआ है । जमीन से भोम भर ऊँचा एक हजार हांस का गोल चबूतरा आया है । इसकी गिर्द चार लाख कोस की आयी है । हांस हांस के कोनें पर भोम भर के ऊँचे गोल गुर्ज आये हैं, जिनके दोनों तरफ से भोम भर की सीढ़ियां चढ़ीं हैं । इस गोल चबूतरे के ऊपर तीसरे हिस्से में भोम भर का ऊँचा चौरस चबूतरा आया है, जिसकी चारों दिशा से भोम भर की सीढ़ियां गोल चबूतरे पर उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा शोभा ले रहा है । इस चबूतरे के मध्य भाग में पांच पेड़ आये हुए हैं, जिसके ऊपर आठ लाख कोस का ऊँचा पुखराजी पहाड़ शोभा ले रहा है, जो एक पुखराज के नग का है । पुखराज के गोल चबूतरे से लगकर पश्चिम एवं उत्तर दिशा में घाटियों की मोहोलाइत का चबूतरा आया है, जो ४०० कोस का चौड़ा और चार लाख कोस का लम्बा आया है । गोल चबूतरे से लेकर दक्षिण दिशा में एक हांस का लम्बा चौड़ा एक कुण्ड आया है, जिससे एक नहर निकल कर दक्षिण दिशा में गयी है । पुखराजी पहाड़ की पूर्व दिशा में बंगले का चबूतरा आया है, जो चार

Nijanand App

लाख कोस का लम्बा चौड़ा और जमीन से भोम भर ऊँचा आया है । पुखराज के गोल चबूतरे, दोनों घाटियों, दक्षिण दिशा की नहरें एवं बंगलों के चबूतरे को घेर कर पुखराजी रौंस आयी है, जिस पर बड़ेवन के वृक्षों की दो हारें शोभा ले रही हैं । इन वृक्षों की ऊँचाई दो भोम की आयी है।

पुखराज के गोल चबूतरे को घेर कर जो पुखराजी रौंस आयी है, उसको घेर कर चारों तरफ नौ नहरें आयी हैं । इन नौ नहरों के बीच में भीतरी तरफ चार हारें महावन के वृक्षों की आयी है । महावन के वृक्षों को घेर कर चार हारें मधुवन के वृक्षों की आयी हैं । मधुवन के चारों ओर घेरकर बड़ोवन के बेशुमार वृक्ष आये हैं ।

४३. पुखराज पर्वत तथा बंगले की तरहटी

पुखराज के चबूतरे की जो हजार हांस की दिवाल आयी है, उस दिवाल के हांस-हांस के मध्य में एक-एक दरवाजा आया है । उन दरवाजों के आगे भोम भर की सीढ़ियां तरहटी में जाने के वास्ते आयी हैं । तरहटी में हजार बगीचों की ५२ हारें आयी हैं । प्रत्येक बगीचों के मध्य भाग में एक-एक थम्भ आया है । इन बगीचों में अपार नहरों तथा चेहेबच्चों की शोभा आयी है । बगीचों की भीतरी तरफ हजार मोहोलाइतों की ५३ हारें आयी हैं । मोहोलाइतों की भीतरी तरफ तरहटी के तीसरे हिस्से में खजाने का ताल अर्थात् पानी का भण्डार आया है । इस खजाने के ताल में पांच पेड़ (थम्भ) आये हैं । चार पेड़ चार दिशा में और एक मध्य में । इन पेड़ों के ऊपर मोहालाइतें आयी है । मध्य के पेड़ से पानी का पाइप आठ लाख कोस का ऊँचा हैं, जो आकाशी महल की चांदनी तक चला गया है ।

खजाने के ताल की चारों दिशा से चार नहरें निकली हैं । इन नहरों के द्वारा चारों दिशा में पानी पहुँचता है । तरहटी दो भोम ऊँची आयी है । इस पुखराज के चबूतरें की पूर्व दिशा में चार लाख कोस की लम्बी चौड़ी

बंगले की तरहटी आयी है । पुखराज की तरहटी के समान ही बंगले की तरहटी आयी है । बंगले की तरहटी में हजार बगीचों की ३८ हारें आयी हैं । बगीचों की भीतरी तरफ हजार मोहोलातों की ३९ हारें आयी हैं । मोहोलाइतों की भीतरी तरफ तरहटी के तीसरे हिस्से में एक ताल शोभा ले रहा है । इस ताल की पश्चिम एवं पूर्व दिशा में दो नहरें आयी हैं ।

४४. अधबीच का कुण्ड, ढंपो चबूतरा तथा मूलकुण्ड की तरहटी

बंगले की तरहटी से लगकर पूर्व दिशा में अधबीच के कुण्ड की तरहटी आयी है, जो बंगले की तरहटी के तीसरे हिस्से में आयी है । इस तरहटी में सर्व प्रथम मोहोलाइतों की दस हारें आयी हैं । मोहोलाइतों की भीतरी तरफ बगीचों की ११ हारें आयी हैं । सभी बगीचे एवं महल एक-एक हांस के लम्बे चौड़े आये हैं । इन बगीचों में बेशुमार नहरों एवं चेहेबच्चों की शोभा आयी है । बगीचों की भीतरी तरफ तरहटी के तीसरे हिस्से में एक ताल आया है । इस ताल की पश्चिम तथा पूर्व दिशा में दो नहरें आयी हैं ।

अधबीच के कुण्ड की तरहटी से लगती हुई पूर्व दिशा में ढंपो चबूतरा की तरहटी आयी है, जो अधबीच के कुण्ड की तरहटी के तीसरे हिस्से में शोभा ले रही है । इस तरहटी में मोहोलाइतों की तीन हारें आयी हैं । मोहोलाइतों की भीतरी तरफ बगीचों की तीन हारें आयी हैं । बगीचों की भीतरी तरफ ढंपो चबूतरे की तरहटी के तीसरे हिस्से में एक कुण्ड आया है, जिसकी पूर्व एवं पश्चिम दिशा में दो नहरें आयी हैं । ढंपो चबूतरें से लगकर पूर्व दिशा में मूल कुण्ड की तरहटी आयी है, जो ढंपो चबूतरे के तीसरे हिस्से में आयी है । इस तरहटी में मोहोलाइतों एवं

Nijanand App

बगीचों की एक-एक हारें आयी हैं । बगीचों की भीतरी तरफ तरहटी के तीसरे हिस्से में एक कुण्ड आया है, जो तीन भोम का गहरा है । इस तरहटी की दो भोम तीसरी चांदनी आयी है । इसकी पूर्व दिशा में चार सौ-चार सौ कोस की नौ मेहराबें आयी हैं । मध्य की एक मेहराब से श्री यमुना जी प्रकट हुई हैं, तथा दायें-बायें की एक-एक मेहराब के सामने जल रौंस एवं पाल की शोभा आयी है ।

४५. पुखराज एवं बंगले का चबूतरा

पुखराज के गोल चबूतरे के मध्यमें चौरस चबूतरा आया है । इस चबूतरे की चारों तरफ किनार पर रौंस की जगह को छोड़कर तरहटी के पांचों पेड़ यहां पर प्रगट हुए हैं । चारों दिशाओं के पेड़ों के दायें-बायें छः छः महल आये हुए हैं, जिनकी दो भोम तीसरी चांदनी आयी हुई है । पांचों पेड़ों की मोहोलाइतों की पांच भोम छठीं चांदनी आयी हुई है । पुखराज एवं बंगले के चबूतरे की सन्धि में एक हांस का लम्बा चौड़ा तीन भोम का गहरा कुण्ड आया है । इस कुण्ड के चारों तरफ पाल की दिवाल आयी है, जिससे पुखराज के चबूतरे से होकर बंगले के चबूतरे पर आया जाया जाता है । बंगले के चबूतरे के तीन भाग आये हुए हैं । मध्य भाग में ४८ बंगलों की ४८ हारें एवं ४८ चेहेबच्चों की ४८ हारें आयी हैं ।

चबूतरे के किनार के दो हिस्सों में फीलपायों की चार हारें आयी हैं तथा फीलपायों के दायें-बायें पांच-पांच हारें बड़े वन के वृक्षों की आयी हैं । इन फीलपायों एवं बड़े वन के वृक्षों की बंगलों की पांच भोम के बराबर एक ही भोम आयी है । बंगलों की पूर्व दिशा में देहेलानें आयी हैं, जिसमें उत्तर से दक्षिण आठ थम्भों की पूर्व से पश्चिम में १४ हारें आयी हैं । इन देहेलानों की हजार भोमें आयी हैं ।

४६. अधबीच का कुण्ड, ढंपो चबूतरा तथा मूलकुण्ड का चबूतरा

बंगले के चबूतरे के समान अधबीच के कुण्ड के चबूतरे के तीन भाग आये हैं, जिसके मध्य भाग में २७ बगीचों की २७ हारें आयी हैं । सभी बगीचों के चारों तरफ नहरें, एवं चारों खूंटों में चेहेबच्चे आये हुए हैं । इन बगीचों के मध्य भाग में तीन हांस का लम्बा चौड़ा कमर भर ऊँचा एक चबूतरा आया है, जिसकी किनार पर १२ थम्भ आये हुए हैं । चबूतरे की चारों दिशा में तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा शोभा ले रहा है । इस चबूतरे के मध्य भाग में एक हांस का लम्बा चौड़ा जल-स्तम्भ आया हुआ है । बगीचों के मध्य-भाग में भी एक-एक जल स्तम्भ आया हुआ है । चबूतरे की किनार के दो हिस्सों में चार हारें फीलपायों की आयी हैं तथा फीलपायों की बाहरी एवं भीतरी तरफ बड़े वन के वृक्षों की पांच हारें आयी हैं । अधबीच के कुण्ड के चबूतरे की पश्चिम दिशा के मध्य भाग में देहलानें आयी हैं, जिसमें बंगले के चबूतरे की देहलान की तरह आठ थम्भों की १४ हारें आयी हैं । बंगले एवं अधबीच के कुण्ड की दोनों देहलानें आपस में एक दूसरे से मिली हुई हैं ।

अधबीच के कुण्ड की पूर्व दिशा में ढंपों चबूतरा आया हुआ है । ढंपों चबूतरा की उत्तर दक्षिण एवं पूर्व दिशा की किनार पर कठेड़ा शोभा ले रहा है । चबूतरे के उपर गिलम, सिंहासन एवं कुर्सियों की अपार शोभा आयी है ।

ढपों चबूतरे की पूर्व दिशा में मूल कुण्ड का चबूतरा आया है, जो जमीन से भोम भर ऊँचा है । इस चबूतरे के मध्य भाग में १२०० कोस का

Nijanand App

लम्बा चौड़ा कुण्ड आया है । इस कुण्ड की चारों दिशा में चांदों से तीन-तीन सीढ़ियां कमर भर नीचे जल चबूतरे पर उतरी हैं । चांदों की जगह को छोड़कर कुण्ड के चारों तरफ कठेड़ा शोभा ले रहा है । मूल कुण्ड के चबूतरे की उत्तर एवं दक्षिण दिशा की किनार पर कठेड़ा आया है ।

श्री यमुनाजी के दोनों तरफ जो दो पाले आयी हैं। उस पाल की दोनों किनार पर थम्भों की दो हारें ईशान कोण के मरोड़ तक चली गयी हैं । इन थम्भों की मेहराबों ऊपर छत पटी है । ११७४०० कोस तक दोनों तरफ की पाल की मेहराब की छत से श्री यमुना जी ढकी आयी हैं । इसके आगे इतनी ही दूरी तक यमुना जी खुली आयी हैं । दोनों पाल की छत के ऊपर १०-१० देहुरिया आयी हैं । ढंपी यमुना जी के ऊपर पांच देहुरी आयी है । इस प्रकार कुल २५ देहुरियां आयी हैं । देहुरियों के ऊपर गुम्मट, कलश एवं ध्वजा-पताकाओं की बेशुमार शोभा है । श्री यमुना जी के ईशान कोण के मरोड़ से लेकर केल के पूल तक दोनों पालों के ऊपर पांच महल और चार चबूतरे आये है । पांचो महलों की मेहराबो में हिंडोले आये हुए हैं । श्री यमुना जी के ऊपर चार-चार हिंडोलों की ताली पड़ती है ।

४७. पुखराज की १४ मेहराबें, बंगला और अधबीच के कुण्ड की छठीं भोम

पुखराज के चौरस चबूतरे के ऊपर जो पांच पेड़ आये हुए है, उनके बीच के पेड़ से चारों दिशा की तरफ पांच भोम छठीं चांदनी से ग्यारह कोस के छज्जे बढ़े हैं । इसी तरह चारों दिशा के पेड़ से बीच के पेड़ की तरफ ग्यारह ग्यारह कोस के छज्जे बढ़े हैं । चारों दिशा के पेड़ से चारों दिशा के पेड़ की तरफ साढ़े-सोलह साढ़े-सोलह के छज्जे बढ़े हैं । २५०

भोम पहुचने पर ये छज्जे ४१२५ कोस तक छाया डालते हैं । उसके बाद २५१ वाँ छज्जा १२३७५ कोस का निकल कर आपस में एक दूसरे से मिलान किया है । इसी प्रकार बीच के पेड़ से चारों दिशा के पेड़ की तरफ के छज्जे २५० भोम पहुँचने पर ५५०० कोस तक छाया डालते हैं । २५१ भोम का छज्जा ८२५० कोस का लम्बा है, जो दोनों तरफ से मिलकर २२००० कोस की जगह को ढक लिया है । चारों दिशाओं के पेड़ से चारों दिशाओं की तरफ ४४ कोस का छज्जा निकला है । इसी तरह पश्चिम और उत्तर की घाटी से तथा पुखराजी ताल और महावन के वृक्षों से चारों दिशा के पेड़ की तरफ ४४ कोस के छज्जे निकले हुए हैं । पश्चिम तरफ की घाटी की जो मोहोलाइत आयी है, उसकी पांच भोम छठीं चांदनी से छज्जे निकले हुए हैं । इसी तरह पूर्व दिशा में बंगलों की पांच भोम छठीं चांदनी से चारों दिशा में छज्जे निकले हुए हैं । पुखराज की दक्षिण दिशा में जो महावन के वृक्ष आये हुए हैं, उसकी भी पांच भोम छठीं चांदनी से ४४ कोस के छज्जे निकले हुए हैं ।

चारों दिशा के पेड़ों के ये छज्जे २५० भोम पहुँचने पर ११००० कोस तक छाया डालते हैं । इसी प्रकार दोनों घाटी, पुखराजी ताल एवं महावन के २५० भोम के छज्जे ११००० कोस तक छाया डाले है । २५१ वां भोम का छज्जा ३३००० कोस का लम्बा निकला है । दोनों तरफ के लम्बे छज्जों के मिलने से ८८००० कोस तक की छाया होती है । २५१ वें भोम से लेकर साढ़े सात सौ भोम तक गोलाई में ४४ कोस का लम्बा छज्जा बढ़ता चला गया है । बीच के पेड़ से चारों दिशा के पेड़ की तरफ चार मेहराबें आयी हैं तथा चारों दिशा के पेड़ के बीच में चार मेहराबें दिखायी देती हैं । दोनों घाटियो में दो-दो मेहराबें आयी हैं और पुखराजी ताल की तरफ भी दो मेहराबें आयी हैं । इस प्रकार कुल १४ मेहराबें हुई ।

Nijanand App

बंगलों की जो पांच भोम छठी चांदनी आयी है, उसकी लम्बाई-चौड़ाई एक लाख कोस की आयी है । चांदनी के मध्य भाग में १२००० कोस का लम्बा चौड़ा ताल आया हुआ है । ताल के चारों तरफ देहलान आयी है । देहलान की छत से चारों दिशा में ४४ कोस का छज्जा २५० भोम तक निकला हुआ है, जिससे ३२००० कोस का लम्बा चौड़ा ताल दिखायी देता है । यहां से ताल का बढना बंध हो गया है । अब यहां से ताल के पाल की दिवाल सीधी ७३० भोम तक चली गयी है । दिवाल के बाहर चारों तरफ ४४ कोस का छज्जा ७३० भोम तक बढ़ता चला गया है ।

अधबीच के कुण्ड की पांच भोम छठीं चांदनी के ऊपर मध्य में नीचे के बगीचे की जगह पर पानी भरने से कमर भर गहरा ताल बन गया है । इस ताल के अन्दर २८ जल स्तम्भों की २८ हारें आयी हैं, जिनके द्वारा पानी ऊपर से नीचे उतरता है । ताल के मध्य में एक हांस का लम्बा चौड़ा जल स्तम्भ नीचे से ही चला आ रहा है । उस जल स्तम्भ से इस ताल में पानी भरता है । अधबीच के कुण्ड के चबूतरे पर जो चार हारें फीलपायों की आयी है, उनकी जगह पर यहां महल बने हुए हैं । महलों के दायें-बायें पांच हारें बड़े वन के वृक्षों की आयी हैं । इस प्रकार का दृश्य ४९० भोम तक आया है ।

४८. हजार हांस की मोहोलाइत, जवेरों के महल तथा खास महल

एक हजार भोम के ऊपर पुखराज की चांदनी चार लाख कोस गिर्द की आयी है । चांदनी की किनार पर चारों तरफ घेर कर कठेड़ा आया है । कठेड़े के आगे ढालदार छज्जा आया है । कठेड़े की भीतरी तरफ

हांस भर का चौड़ा और कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है । इस चबूतरे की हजार हांस आयी है, जिसके ऊपर हजार हांसकी मोहोलाइतें हैं । हजार हांस की सन्धि में एक हजार गोल गुर्ज आये हैं । हजार हांस की हवेलियों की बाहरी एवं भीतरी तरफ एक-एक हजार बड़े दरवाजे आये हैं । एक हांस में चार-चार हवेलियों की चार हारें आयी हैं । प्रत्येक दो हवेलियों के बीच में थम्भों की दो हारें तीन गलियां आयी है । हवेलियों के जहां आमने-सामने बड़े दरवाजे आये हैं, वहां पर चार चबूतरें एवं २४ मेहराबें आयी हैं और चार हवेलियों के कोनों पर भी २४ मेहराबें आयी हैं । हजार हवेलियों के बड़े दरवाजों के दायें-बायें दो चबूतरे आये हैं । उन चबूतरों के बीच में चौक आये हैं । चबूतरों पर चौखूटे गुर्ज शोभा ले रहे हैं ।

इन हजार हांस हवेलियों की पांच भोम छठीं चांदनी आयी है । पांचों भोमों के पांच दरवाजे ऊपरा ऊपर चौरस गुर्ज, छज्जों एवं कठेड़े सहित शोभा ले रहे हैं । गोल गुर्जो की भीतरी तरफ दो थम्भों की हारें तथा तीन गलियां आयी है, जिनकी पांचों भोमों की पन्द्रह मेहराबें गोल गुर्जो में दिखायी देती हैं । त्रिपोलियों के आगे चौरस चबूतरे आये हैं । उन चबूतरों के चारों कोनों पर चार-चार थम्भ हैं । जैसे गोल गुर्ज बाहरी तरफ आये हैं, वैसे गोल गुर्ज भीतरी तरफ नहीं आये हैं, बल्कि उनकी तरफ बैठकें बनी हैं ।

हजार हांस की हवेलियों की चारों दिशाओं में चार बड़े दरवाजे (एक-एक हांस के) आये है । उन चारों दरवाजों के आगे आठ चबूतरे आये हैं । आठों चबूतरों पर आठ बड़े चोखूटे गुर्ज आये हैं । इन चारों दरवाजों की हवेलियों की पांच भोमों के बराबर एक ही भोम आयी हैं, अर्थात् हवेलियों की छठीं चांदनी के बराबर दरवाजों की ऊँचाई आयी है । हवेलियों की छठीं चांदनी की बाहरी एवं भीतरी किनार पर भोम भर

Nijanand App

ऊँची दिवाल आयी है । जिसकी बाहरी एवं भीतरी तरफ दो-दो हजार चौरस गुर्ज आये हैं । उन गुर्जों के ऊपर गुम्मट, कलश इत्यादि शोभा ले रहे हैं । गोल गुर्जों की ऊँचाई भी यहां तक आयी है । इसकी दिवाल की किनार पर कठेड़ा शोभा ले रहा है । हवेलियों की छठीं चांदनी से चारों दिशाओं के बड़े दरवाजों की उपरा उपर पांच भोमें ओर आयी हैं । हवेलियों की प्रथम भोम से चारों दरवाजों की ऊँचाई दस भोम की आयी है ।

बंगलों की चांदनी से १८० भोम के ऊपर एक चांदनी आयी है। इस चांदनी के मध्य में एक ताल शोभा दे रहा है । ताल के चारों तरफ जल चबूतरा आया है, जिस पर कमर भर पानी भरा है । इस जल चबूतरे से कमर भर ऊँची रौंस आयी है । इस रौंस की बाहरी तरफ चारों और घेर कर बड़े वन के वृक्षों की पांच हारें शोभा ले रही है । दस हजार कोस की जगह में चार फीलपाइयों की तीन सन्धियों की जगह पर जवेरों के महलों की तीन हारें चारों तरफ घेर कर आयी है । प्रत्येक दो महलों के बीच में दो थम्भों की हार और तीन गलियां दिखायी दे रही हैं । हरेक हवेली की चार दिशा में चार बड़े दरवाजों के आठ चबूतरे आये हैं । हवेलियों की भीतरी तरफ थम्भों की एक हार आयी है । इसकी भीतरी तरफ कमर भर ऊँचा चबूतरा शोभा ले रहा है । चबूतरे की चारों तरफ किनार पर थम्भ आये हैं । चारों दिशा में तीन-तीन सीढ़ियां उतरी है । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा शोभा ले रहा है । चबूतरे के ऊपर गिलम, सिंहासन तथा कुर्सियों आदि की बेशुमार शोभा आयी है । एसी बनक जवेरों के सभी महलों की आयी है । जवेरों के महलों की बाहरी तरह पांच हारे बड़ेवन के वृक्षों की आयी है । ताल की पश्चिम दिशा के मध्य भाग में उत्तर से दक्षिण आठ थम्भों की १४ हारें तथा पूर्व से पश्चिम १४ थम्भों की आठ हारें आयी हैं । चौड़ाई की तरफ आठ थम्भों में सात

मेहरावें आयी है । लम्बाई में १४ थम्भों के बीच में १३ मेहरावें दिखायी देती हैं । सात मेहरावों के बीच की चार देहलानों में चार नहरें आयी हैं । चार नहरों के बीच में तीन देहलानें शोभा ले रही है । पुखराजी पहाड़ की हजार हांस की मोहोलाइत की पूर्व दिशा के दरवाजे से गुप्तागुप्त नहरों द्वारा देहेलानों में पानी आता है । इस देहलान के पूर्व एवं पश्चिम में ४०० कोस की चौड़ी रौंस आयी है । देहेलान की पूर्व दिशा में ४०० कोस की चौड़ी जो रौंस आयी है, उस रौंस के अन्दर होकर १०० कोस की चौड़ी रौंस से चार धाराओं में २० भोम उपर से पुखराजी ताल में जल गिरता है । पुखराजी ताल के चारों तरफ जवेरों के महलों सहित बड़ेवन के वृक्षों की ३० भोम और २१ वीं चांदनी आयी है । पुखराजी ताल की चांदनी पर बगीचों, नहरों तथा चेहेबच्चों की अपार सोभा आयी है । पुखराजी ताल की पूर्व तरफ जो ४०० कोस की चौड़ी रौंस आयी है, उस रौंस के नीचे पुखराजी ताल का पानी चार घड़नालों द्वारा होकर चार नहरों में जाता है। नहरो के दायें बाये थम्भों की दो हारें आयी हैं । थम्भों के बीच में कठेड़ा शोभा ले रहा है । पुखराजी ताल का पानी इन नहरों द्वारा सोलह धाराओं के रूप में अधबीच के कुण्ड में गिरता है । ९८० भोम की देहलान की पूर्व दिशा में सोलह सौ कोस का छज्जा निकला हुआ है । इस छज्जे से भोम भर नीचे की देहेलान से १२०० कोस का छज्जा निकला हुआ है तथा तीसरा छज्जा एक भोम नीचे से ८०० कोस का निकला हुआ है । इसी प्रकार चौथा छज्जा भोम भर नीचे से चार सौ कोस का निकला हुआ है । इन सब छज्जों की उत्तर दक्षिण तथा पूर्व दिशा में कमर भर ऊँची दिवाल कठेड़े के रूप में शोभा ले रही है । सोलह सौ कोस के चौड़े छज्जे में चार-चार सौ कोस की दूरी पर चार हारें पाइपो की आयी है । जो ४०० कोस की दूरी पर चार पाइपें आयी हैं, वे चारों ४०० कोस के चौड़े छज्जे से आकर लगी हैं, जिनके द्वारा चार धाराओं में पानी अधबीच के कुण्ड में गिरता है । इसी तरह आठ सौ, बारह सौ और सोलह सौ कोस के चौड़े

Nijanand App

छज्जो से चार-चार धारायें गिरती हैं । इस प्रकार सोलह चादरो द्वारा पानी चार सो अस्सी भोम ऊपर से अधबीच के कुण्ड में गिरता है । जिससे सुन्दर कर्णप्रिय गर्जना होती है । देहेलान की ९८० भोम के ऊपर बीस भोम तक ९८० भोम की तरह देहेलानों की शोभा आयी है । चांदनी के तीनों तरफ पूर्व, उत्तर एवं दक्षिण तरफ कठेड़ा शोभा ले रहा है ।

अधबीच के कुण्ड के चबूतरे से ४९५ भोम उपर एक चांदनी आयी है । चांदनी के चारों तरफ घेर कर कठेड़ा आया है । कठेड़ा की भीतरी तरफ ७५ कोस की चौड़ी रौंस चारों तरफ घेर कर आयी है । इस रौंस की भीतरी तरफ बड़ेवन के वृक्षों की पांच हारें आयी है, जिनमें चार सन्धें आयी हैं । इन वृक्षों की हार की भीतरी तरफ नीचे के फीलपाइयों के ऊपर खास महलों की शोभा आयी है, जिनकी तीन हारें चारों तरफ घेर कर आयी हैं । खास महलो की भीतरी तरफ पांच हारें बड़ेवन के वृक्षों की आयी है । इन वृक्षों की हार की भीतरी तरफ एक रौंस आयी है । इस रौंस से कमर भर की सीढ़ी पाल पर उतरी है । खास महल की चार भोम पांचवीं चांदनी आयी है । खास महल की पूर्व दिशा की चांदनी पर बैठकर पश्चिम तरफ देखें तो ५०० भोम ऊपर एक लम्बी देहेलान चली गयी है । देहेलान के पूर्व, उत्तर, दक्षिण में छज्जे निकले हैं । देहेलान के दायें-बायें छज्जे के नीचे पूर्व एवं पश्चिम दिशा में चौरस एवं गोल गुर्ज आये हैं । अधबीच के कुण्ड के ७८४ स्तूनों (थम्भों) द्वारा पानी नीचे उतरता है । सब जल अधबीच के कुण्ड के चबूतरे पर आकर नलों द्वारा तरहटी में जाता है । तरहटी का सब जल नहरों द्वारा ढंपो चबूतरा के कुण्ड में पहूँचता है ।

४९. हजार हांस की हवेलियो की चांदनी

हजार हांस की मोहोलाइतों की पांच भोम छठीं चांदनी आयी है । चांदनी की बाहरी एवं भीतरी तरफ चौड़ी एक भोम की ऊँची दिवाल की

शोभा आयी है । हजार गोल गुर्जों की छत इस दिवाल तक आयी है । गुर्जो की भीतरी तरफ आठ मेहराबी बैठकें आयी हैं । हजार हांस हवेलियों के दो हजार चौरस गुर्ज इस दिवाल तक आये हैं । गुर्जो के चारों कोनों पर चार थम्भ आये हैं, जिनके उपर गुम्मट, कलश, ध्वजा पताका आदि की शोभा है । चारो दिशा के बड़े चारों दरवाजों की बाहरी एवं भीतरी तरफ दो-दो चौरस गुर्ज आये हैं । गुर्जो के ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका की शोभा आयी है । हवेलियों की चांदनी से चारों दिशा के बड़े दरवाजे पांच भोम तक और उपर तक गये हैं । पुखराज की चांदनी से इन चारों दरवाजों की १० भोम ग्यारहवीं चांदनी आयी हैं ।

५०. हजार हांस के महल का एक दरवाजा

हजार हांस की हवेलियों के चार दिशा के बड़े चार दरवाजे आये हैं । ये दरवाजे एक हांस के चौड़े ५ भोम के ऊँचे शोभायमान है । इन दरवाजों की बाहरी तरफ छज्जो के उपर सौ कोस के लम्बे चौड़े दो चबूतरे आये है, प्रत्येक चबूतरो के चारों कोनों पर चार थम्भ आये है, जिनकी ऊँचाई पांच भोम के बराबर एक ही भोम की आयी है । दोनों चबूतरों के बीच में १०० कोस का लम्बा चौड़ा एक चौक आया है । उस चौक से दरवाजे के ऊपर तीन सीढ़ियां चढ़ी हैं। दरवाजा १०० कोस का चौड़ा तथा पांच भोम का ऊँचा शोभा ले रहा है । जिस प्रकार बाहरी तरफ बड़े दरवाजों की शोभा आयी है, उसी तरह की भीतरी तरफ भी बड़े दरवाजो की शोभा आयी है । इन दरवाजों के दायें-बायें गोल गुर्जो की त्रिपोलिया तथा चार-चार हवेलियों के आठ-आठ चबूतरे और थम्भ पांचो भोम के दिखायी देते है । इन बड़े दरवाजों की १० भोम ग्यारहवीं चांदनी आयी है । चांदनी के ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताकाओं की बेशुमार शोभा आयी है ।

Nijanand App

५१. आकाशी महल

पुखराजी पहाड़ के एक हजार भोम की चांदनी के ऊपर मध्य भाग में एक चौरस चबूतरा कमर भर ऊँचा आया है । इस चबूतरे की चारों दिशा की किनार से रौंस की जगह को छोड़कर तेरह हवेलियों की तेरह हारें अर्थात् १६९ हवेलियां शोभा ले रही हैं । प्रत्येक दो हवेलियों के बीच में दो थम्भों की हारें और तीन गलियां आयी हैं । चारों दिशा के मध्य की चार हवेली और मध्य की एक हवेली, ये पांच हवेलियां अन्य हवेलियों से बड़ी हैं । सभी हवेलियों की चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे आये हैं । दरवाजों के दायें-बायें दो-दो चौरस चबूतरे आये हैं । जहां दो हवेलियों के दो बड़े दरवाजे आमने सामने आये हैं, वहां पर चार चबूतरे एवं चौबीस मेहराबें आयी हैं । प्रत्येक चार हवेलियों के कोनों पर २४ मेहराबें शोभा ले रही हैं । हवेलियों की एक दिशा में १३ हवेलियों के १३ दरवाजे आये हैं । तब चारों दिशा के ५२ दरवाजे हुए । एक दिशा के १३ दरवाजों के बाहर २६ चौरस गुर्ज आये हैं । इस प्रकार चारों दिशा में १०४ गुर्ज हुए । हवेलियों के चारों कोनों में चार बड़े गुर्ज पांच पहल के आये हैं । कुल गुर्ज इस तरह १०८ हुए । चारों दिशा की सभी हवेलियों के दरवाजों के सामने चबूतरे से तीन तीन सीढ़ियां रौंस पर उतरी है । इस आकाशी महल की एक हजार भोम अर्थात् चार लाख कोस की ऊँचाई आयी है ।

५२. आकाशी महल की दो दिशा की बड़ी हवेलियां

आकाशी महल के बीच की बड़ी हवेली तथा दिशा के मध्य की एक बड़ी हवेली के बीच में पांच छोटी हवेलियां आयी है । ये दो बड़ी हवेलियां ३६०० कोस की आयी हैं । मध्य की बड़ी हवेली की चारों

दिशा में थम्भों की दो हारें तीन गलियां नहीं आयी हैं । इसलिये मध्य की बड़ी हवेली चारों दिशा की छोटी हवेलियों से मिली हुई है, जिसके कारण मध्य की बड़ी हवेली और चारों दिशा की छोटी हवेली के बड़े दरवाजे के आमने-सामने चबूतरे नहीं आये हैं । चारों दिशाओं के मध्य की बड़ी हवेली के दायें-बायें दो थम्भों की हार एवं तीन गलियां नहीं आयी हैं । मध्य की हवेली की तरह से दिशा की बड़ी हवेलियां भी दायें बायें एवं भीतरी तरफ छोटी हवेलियों से मिली हुई हैं, जिसके कारण यहा भी बड़े दरवाजों के दायें बायें चबूतरे नहीं आये हैं । चारों दिशा के मध्य की बड़ी हवेलियों की भीतरी तरफ दो थम्भों की हार और तीन गलियों की शोभा आयी है । मध्यकी बड़ी हवेलि एवं चारों दिशाओं के मध्य की बड़ी हवेलियों के बीच-बीच में ५-५ छोटी हवेलियां आयी है, उन छोटी हवेलियों के दायें-बायें आठ-आठ सौ कोस की चौड़ी गलियां आयी है ।

एक छोटी हवेली की चारों दिशा में मध्य के दरवाजे के दायें-बायें तीन-तीन महल आये हैं । प्रत्येक महलों में देखने के चार-चार और गिनती के तीन-तीन दरवाजे आये हैं । चारों दिशाओ के चारों दरवाजों के दायें-बायें बाहरी तरफ दो-दो चबूतरे आये हैं । प्रत्येक चबूतरे के चारो कोनों पर चार थम्भ शोभा ले रहे हैं, जिसमें दो थम्भ खुले और दो थम्भ अक्शी आये हैं । महलों की भीतरी तरफ थम्भों की एक हार चारों तरफ घेर कर आयी है, जिससे एक चौकोर देहेलान दिखायी देती है । इस देहेलान से भीतरी तरफ कमर भर नीचे बेशुमार नहरों, बन-बगीचों, चेहबच्चों की शोभा आयी है । बगीचों की भीतरी तरफ कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है । चबूतरे के चारों तरफ किनार पर थम्भों की एक हार आयी है । थम्भों की मेहराबों में सुन्दर हिंडोले आये हैं । चबूतरे की चारों दिशा से तीन-तीन सीढ़ियां बगीचे में उतरी है । चबूतरे के ऊपर गिलम,

Nijanand App

सिंहासन तथा कुर्सियों आदि की शोभा आयी है । इसी प्रकार अन्य सभी छोटी हवेलियों की शोभा जानना जी ।

५३. मध्य की बड़ी हवेली

मध्य की बड़ी हवेली ३६०० कोस की लम्बी-चौड़ी आयी है । इस हवेली की चारों दिशा के बड़े दरवाजों के दायें-बायें आठ-आठ महल आये हैं । हवेली की भीतरी तरफ महलों के आगे थम्भों की एक हार आयी है । थम्भों की हार से भीतरी तरफ कमर भर नीचे बाग बगीचे, नहरें एवं चेहेबच्चे अपरम्पार आये हैं । बगीचों की भीतरी तरफ कमर भर ऊँचा एक चबूतरा आया हुआ है, जिसके चारों तरफ थम्भों की मेहराबों में सुन्दर हिंडोले शोभायमान हैं । चबूतरे के मध्य भाग में पानी का स्तून (थम्भ) आया है, जो खजाने के ताल से आया हुआ है । यह स्तून आकाशी महल की चांदनी तक गया है ।

५४. आकाशी महल की चांदनी

आकाशी महल के एक हजार भोम अर्थात् चार लाख कोस के ऊपर एक ही चांदनी आयी है । चांदनी के मध्य भाग में कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है । चबूतरा की चारो दिशा से तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा शोभा ले रहा है । चबूतरे के ऊपर गिलम, कुर्सियों तथा सिंहासन की अपार शोभा है । इस चबूतरे से लेकर चांदनी की किनार तक बेशुमार नहरें, बगीचे, चेहेबच्चे शोभा ले रहे हैं । खजाने का पाँचवां पेड़ चबूतरे के नीचे मध्य में आकर लगा हुआ है, जिससे पानी का बड़ा पूर निकलकर चबूतरे के चारों कोनों के जालीदारों से होकर चांदनी की नहरों एवं चेहेबच्चों में परिभ्रमण करता है ।

चांदनी की चारो तरफ किनार पर भोम भर ऊँची दिवाल फिरती आयी है । इस दिवाल की बाहरी तरफ चारों दिशा में १०४ चौखूटे गुर्ज आये हैं । गुर्जों के उपर गुम्मट, कलश, ध्वजा पताकाओं की अपार शोभा है । चांदनी के चारों कोनों में पांच पहल के चार गुर्ज आये हैं । जिनकी किनार पर घेरकर कठेड़ा आया है । चारों दिशा की दिवाल से भोम भर की सीढ़ियां चांदनी पर उतरी हैं ।

५५. घाटी की तरहटी एवं मोहोलात

घाटी की तरहटी चार लाख कोस की लम्बी एवं चार सौ कोस की चौड़ी आयी है । घाटी की तीनों तरफ पुखराजी रौंस घेर कर आयी है, जिसमें बड़े वन के वृक्षों की दो हारें आयी हैं । इस रौंस की भीतरी तरफ लम्बाई में एक हजार हांस की लम्बी एवं भोम भर की ऊँची दिवाल आयी है, जिसके हांस हांस की सन्धि में भोम भर ऊँचे गुर्ज आये हैं । गुर्जों की दोनों तरफ भोम भर की सीढ़ियां आयी हैं । हांस हांस के मध्य भाग में दरवाजे आये हैं, जिनसे तरहटी में जाने के लिये चांदो के दोनों तरफ से भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । तरहटी में २०० कोस की चौड़ी नहर आयी है, जिसके दोनों तरफ जल रौंस, एवं सीढ़ियों की रौंस शोभा ले रही है । घाटी की तरहटी एवं पुखराज के चबूतरे के बीच में एक हांस का लम्बा चौड़ा कुण्ड आया है । घाटी के चबूतरे की पश्चिम दिशा से भोम भर की सीढ़ियों के दायें-बायें दो चौरस गुर्ज आये हैं । भोम भर की सीढ़ियां चढ़कर चबूतरे पर आये । चबूतरे के मध्य भाग में ९ मन्दिर की जगह में भोम-भोम पर सीढ़ियां चढ़ती गयी हैं । सीढ़ियों के दायें-बायें नौ-नौ मन्दिर की दिवाल की मोटाई में महल आये हैं । लम्बाई में एक हांस की सीढ़ियों का चढ़ाव ६०० कोस का आया है । इस प्रकार एक हजार हांस में सीढ़ियों का चढ़ाव छः लाख कोस का आया है । सीढ़ियों

Nijanand App

के दोनो तरफ प्रत्येक हांस के मन्दिरों की छत पर छः छः गुम्मट आये हैं । गुम्मटों पर कलश, ध्वजा, पताका तथा बेरखें (डण्डा) शोभा ले रही है । इस प्रकार हजार हांस की सीढ़ियों की दोनों तरफ छः छः हजार गुमटियों के ऊपर अपार ध्वजा, पताकाओं तथा कलश आदि की शोभा आयी है । इसी प्रकार दूसरी घाटी की भी शोभा जानना जी ।

५६. बंगला तथा चेहेबच्चा

बंगले के चबूतरे के मध्य में ४८ बंगलों की ४८ हारें आयी हैं और इनके बीच में ४८ चेहेबच्चों की ४८ हारें आयी हैं । ये सभी बंगले और चेहेबच्चे भोम भर चबूतरे के उपर आये हैं । सभी बंगलों एवं चेहेबच्चों को घेरकर १२-१२ बगीचे आये हैं । बगीचों की चारों दिशा में नहरें एवं चारो कोनों पर चेहेबच्चे शोभा ले रहे हैं ।

५७. एक बंगला

एक बंगले की लम्बाई चौड़ाई १६०० मन्दिर की आयी है, जिसमें ८०० मन्दिर का लम्बा, चौड़ा तथा भोम भर का ऊँचा चौरस चबूतरा आया है । चबूतरे की किनार पर चारों तरफ पांच-पांच मन्दिर की दूरी पर थम्भों की एक हार आयी है । चबूतरे के चारों दिशा के मध्य भाग से भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा आया है । कठेड़े से भीतरी तरफ १०० मन्दिर की दूरी पर एक हार मन्दिरों की आयी है । इन मन्दिरों की पांच भोम के बराबर थम्भों की एक ही भोम आयी है, जिससे इसे बंगला या दरबार कहा गया है । बंगले की चारों दिशा में एक भोम में ६००-६०० मन्दिर आये हुए हैं । बंगले की चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे आये हैं । इन मन्दिरों की भीतरी तरफ थम्भों की एक हार चारों तरफ घेरकर आयी है । इन थम्भों की हार से

कमर भर नीचे बेशुमार नहरे, बगीचे, चेहबच्चे शोभा ले रहे हैं । इन बगीचों की भीतरी तरफ मध्य में एक चबूतरा आया है, जिसकी चारों तरफ किनार में थम्भों की एक हार आयी है । चबूतरे की चारों दिशा से तीन-तीन सीढ़ियां उतरी है । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा आया है । चबूतरे के उपर पशमी गिलम, सिंहासन, कुर्सियां इत्यादि बेशुमार शोभा ले रही है । चबूतरे के उपर जो थम्भ आये हुए हैं, उनकी ऊँचाई बंगलों के पांच भोम के बराबर एक ही भोम की आयी है । बंगले की एक भोम की ऊँचाई के बराबर मन्दिरों की पांच भोम आयी है । मन्दिरों की भीतरी तरफ थम्भों की ऊँचाई मन्दिरों के बराबर आयी है । मन्दिरों की प्रत्येक (२५) भोमों से चबूतरे पर बैठे हुए युगल स्वरुप का दर्शन सखियां करती हैं । बंगले की चारों तरफ जो १२ बगीचे आये हुए हैं, उन बगीचों की प्रत्येक (पांचों) भोम बंगले की भोम से मिली हुई है । इसी प्रकार से सभी बंगलो की शोभा आयी है ।

एक चेहेबच्चे की शोभा बंगले के समान आयी है । अन्तर केवल इतना ही है कि बंगले के चबूतरे की किनार पर चारों तरफ जहां थम्भ आए हैं, वहां चेहेबच्चे के ऊपर थम्भ नहीं हैं । १०० मन्दिर की चौड़ी देहेलान की जगह पर चेहबच्चे की दिवाल आयी है । इस दिवाल के बीच ६०० मन्दिर का लम्बा चौड़ा कुण्ड आया है । इस प्रकार बंगलों की पांच भोम छठीं चांदनी आयी है । एक बंगले की छत के ऊपर ६०० मन्दिर का लम्बा चौड़ा कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है । इसके चारों कोनों पर चार थम्भ उठे हैं । चारों थम्भों की छत पर गुम्मट, कलश आदि आये हैं । सभी बंगलों के कलशो की नोकें बड़ेवन के वृक्षों की रंग बिरंगे चन्द्रवा को स्पर्श करती हुई सी दिखायी देती हैं । प्रत्येक बंगले के चारों कोनों के चेहेबच्चों का पानी कमानों के रुप में कलशों की नोकों के उपर से एक दूसरे चेहेबच्चों में गिरता है ।

Nijanand App

५८. पुखराज पहाड़ का खड़ा दृश्य

पुखराज पहाड़ पुखराज के एक पीले नग के अन्दर अनेको नगों की चित्रकारी से युक्त झलझलाकार शोभा ले रहा है । पांच पेड़ो (थम्भों) के ऊपर आठ लाख कोस का ऊँचा और चार लाख कोस की गिर्द में महल होने के कारण इसे पुखराजी पहाड़ कहते हैं । पुखराजी पहाड़ की एक हजार भोम (चार लाख कोस) के उपर हजार रंगो की हजार हांस की पांच भोम की ऊँची मोहोलाइत दिखायी देती है, जिसकी चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे दिखायी देते हैं । पश्चिम और उत्तर के दरवाजे के सामने दो घाटियां (सीढ़ियां) छः लाख कोस की लम्बी आयी है । हजार हांस की मोहोलाइत के बीच में चार लाख कोस का ऊँचा आकाशी महल दिखायी देता है । पुखराजी पहाड़ से लगता हुआ पूर्व दिशा में बंगलों की पांच भोम के ऊपर पुखराजी ताल आया है । हजार भोम की चार लाख कोस के ऊँचे बंगलों से लगता हुआ पूर्व दिशा में अधबीच का कुण्ड ५०० भोम का ऊँचा दिखायी दे रहा है, जिसमें ४८० भोम ऊपर से सोलह धाराओं (झरनों) के रूप में पानी गिरता है । अधबीच के कुण्ड से लगता हुआ पूर्व दिशा में जमीन से एक भोम ऊँचा ढंपो चबूतरा एवं मूलकुण्ड आया है । मूलकुण्ड की पूर्व दिशा से श्री यमुना जी प्रकट हुई हैं ।

५९. श्री यमुना जी, सातों घाट, केल व बट का पूल

श्री यमुना जी के ईशान कोण से लेकर केल के पुल तक दोनो पालों के उपर पांच महल एवं चार चबूतरे आये हैं । केल का पुल ५०० मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई में आया है । जल की जमीन से ११ थम्भों की ११ हारें आयी हैं जिनके बीच में १० घड़नाले आये हैं । इनके ऊपर जल रौंस के बराबर एक ही छत पड़ी है । इस छत पर भी ११ थम्भों की ११ हारें

आयी हैं जिनकी पांच भोम छठीं चांदनी आयी है । प्रत्येक भोम के २२० मेहराबों में २२० हिंडोले आये हैं । इस प्रकार कुल हिंडोलो की संख्या ११०० हुई । पूल के पांचों भोमों के छज्जों की किनार पर थम्भों की एक हार आयी है, थम्भों के बीच में कठेड़ा शोभा ले रहा है । छठीं चांदनी की चारों तरफ किनार पर भी कठेड़ा आया है । कठेड़े के मध्य में गिलम, सिंहासन, कुर्सियां अपार शोभा ले रही हैं । इसी तरह केल पूल की भांति वट के पूल की भी शोभा आयी है । दोनों पूलो के बीच में सात घाट केल, लिबोई, अनार, अमृत, जाम्बू, नारंगी और बट घाट आये हैं । सातों घाटों की सन्धि के सामने जल-रौंस के ऊपर छः देहुरियां आयी हैं । इन देहुरियों की ऊँचाई एक भोम की आयी है । जल रौंस से कमर भर ऊँची श्री यमुना जी की पाल आयी है, जिसके ऊपर प्रत्येक घाट के सामने ११ वृक्षों की ५ हारे बड़ेवन के वृक्षों की आयी हैं, जिनकी ऊँचाई पांच भोम की आयी है । इनकी पांचों भोमो की मेहराबों में सुन्दर झूले आये हैं । एक घाट के सामने बड़ेवन के वृक्षो के बीच में १० चौकों की ४ हारें आयी हैं, जिसके प्रत्येक चौक में २४ वृक्षों की २४ हारें आयी हैं जिनकी ऊँचाई दो भोम तीसरी चांदनी आयी है । बड़े वन के वृक्ष जिस घाट के सामने आये हैं, उसी घाट के वृक्ष के रूप में हो गये हैं । पाल के उपर आये हुए बड़े वन के वृक्षों की पांचों भोमें दोनों पूलों की पांचों भोमों से मिली हुई हैं । इन वृक्षों की पांचों भोमों की लम्बी डालियां जल चबूतरे तक छायी हुई हैं, जिससे श्री यमुना जी की अपरम्पार शोभा हो रही है ।

सातों घाटों के मध्य में अमृत वन आया है । अमृत वन की पूर्व दिशा में श्री यमुना जी के ऊपर पाट घाट आया है, जिसकी लम्बाई चौड़ाई १५० मन्दिर की है । श्री यमुना जी के जल की जमीन से नीलवी

Nijanand App

के चार थम्भों की चार हारें आयी हैं । इनके उपर जल रौंस के बराबर छत पटी है । इस छत की किनार पर उत्तर पूर्व एवं दक्षिण में कठेड़ा आया है और १२ थम्भ आये हैं । पश्चिम दिशा में दो थम्भ पाच के, उत्तर दिशा में दो थम्भ पुखराज के, पूर्व दिशा में दो थम्भ माणिक के तथा दक्षिण दिशा में दो थम्भ हीरे के तथा चारों कोनों में चार थम्भ नीलवी के शोभा ले रहे हैं । इन १२ थम्भों के ऊपर एक ही छत आयी है । छत की चारो तरफ किनार पर कठेड़ा आया है और मध्य में चार थम्भों के ऊपर एक देहुरी आयी है । देहुरी के ऊपर कलश, गुम्मट, ध्वजा, पताका की अपार शोभा है । जैसी शोभा श्री यमुना जी की पश्चिम दिशा में आयी है, उसी तरह पूर्व दिशा में भी आयी है ।

२५० मन्दिर चौड़ी श्री यमुना जी की पाल से कमर भर नीची बन की रौंस २५० मन्दिर की चौड़ाई में आयी है । बन की रौंस से लगती हुई ५०० मन्दिर की चौड़ी पुखराजी रौंस बन रौंस के बराबर आयी है, जिसके ऊपर बड़े वन के वृक्षों की दो हारें आयी हैं । बट घाट के सामने बन की रौंस एवं पाल की जगह पर ५०० मन्दिर के लम्बे-चौड़े चबूतरे के उपर एक बट का वृक्ष आया है, जिसकी पांच भोम छठीं चांदनी आयी है ।

६०. बट का घाट

एक बट वृक्ष की चारों दिशा में बड़वाइयों के थम्भों की चार हारें घेर कर आयी हैं, जिसमें कुल ९ बड़वाइयों की ९ हारें आयी हैं । इसके प्रत्येक भोम में ८ मेहराबों की ९ हारें और ९ मेहराबों की आठ हारें आयी हैं । प्रत्येक मेहराब में एक-एक हिंडोला आया है । एक भोम के कुल १४४ हिंडोले हैं तथा पांचों भोमो के ७२० हिंडोलें हैं । जैसा बट का वृक्ष श्री यमुना जी की पश्चिम दिशा में आया है, वैसा ही पूर्व दिशा में भी आया है ।

६१. हौज कौसर तालाब

हौज कौशर तालाब रंगमहल से दक्षिण दिशा में साढ़े चार लाख कोस की दूरी पर शोभा ले रहा है । तालाब की पश्चिम दिशा में जमीन से तीन सीढ़ियां चढ़कर पुखराजी रौंस पर आयी । यह पुखराजी रौंस ५०० मन्दिर की चौड़ी और १२८ हांस की गिर्द में आयी है । इसकी हांस-हांस के मध्य भाग से तीन-तीन सीढ़ियां जमीन पर उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा शोभायमान है । पुखराजी रौंस की बाहरी एवं भीतरी दोनों किनार पर बड़े वन के वृक्षों की दो हारें आयी हैं । इनकी दो भोम तीसरी चांदनी आयी है । ये वृक्ष २५०-२५० मन्दिर की दूरी पर आये हैं । पुखराजी रौंस की भीतरी तरफ २५० मन्दिर की चौड़ी वन की रौंस पुखराजी रौंस के बराबर आयी है । इस वन की रौंस पर पश्चिम दिशा में २५० मन्दिर के लम्बे चौड़े कमर भर ऊँचे दो चबूतरे आये हैं । दोनों चबूतरों के बीच २५० मन्दिर का लम्बा चौड़ा कमर भर नीचा चौक आया है । इस चौक से तीन सीढ़ियां चढ़कर ढालदार पाल पर आयी । जिसकी चौड़ाई ७५० मन्दिर की आयी है । इसके १२८ हांस आये हैं । प्रत्येक हांस के मध्य भाग से तीन-तीन सीढ़ियां वन रौंस पर उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह पर कठेड़ा आया है । इस पाल पर दोनों चबूतरों से लग कर पूर्व दिशा में २५० मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई में दो देहुरियां आयी है, जिनमें १० मेहराबें शोभा ले रही हैं । ढलकती पाल के दूसरे हिस्से में २५० मन्दिर की चौड़ी पड़साल आयी है । इस पड़साल की बाहरी एवं भीतरी तरफ वृक्षों की दो हारें आयी हैं, जिनकी ऊँचाई पांच भोम की आयी है । प्रत्येक वृक्ष ५००-५०० मन्दिर की दूरी पर आये हुए हैं । पड़साल के तीसरे हिस्से के २५० मन्दिर की चौड़ाई में संक्रमणिक सीढ़ियां भोम भर की ऊँची चारों

Nijanand App

तरफ घेर कर आयी हैं । भोम भर ऊँची संक्रमणिक सीढ़ियों की भीतरी तरफ एक हजार मन्दिर की चौड़ी और १२८ हांस की लम्बी चौरस पाल आयी है । इसके २५०-२५० मन्दिर के चौड़े चार हिस्से आये हैं । पहले हिस्से में घाट, दूसरे हिस्से में पड़साल, तीसरे हिस्से में १२८ बड़ी देहुरियां और घाटों की सीढ़िया तथा चौथे हिस्से में कटीपाल एवं १२४ छोटी देहुरियां आयी हैं ।

संक्रमणिक सीढ़ियों तथा चौरस पाल की सन्धि में बड़े वन के वृक्षों की तीसरी हार आयी है । चौरस पाल के दूसरे हिस्से में जो पड़साल आयी है, उसके दोनों तरफ की किनार पर वृक्षों की दो हारें आयी है । इन तीनों हारों के वृक्षों की शोभा ढलकती पाल के वृक्षों के समान आयी है, चौरस पाल के तीसरे हिस्से के प्रत्येक हांस की सन्धि में २५० मन्दिर की लम्बी चौड़ी १२८ बड़ी देहुरियां शोभा ले रही हैं । ये सभी देहुरियां एक भोम की ऊँची आयी हैं । पश्चिम दिशा की दो देहरियों के बीच में २५० मन्दिर की जगह में घाट की भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । भोम भर की सीढ़ियां उतर कर २५० मन्दिर के चौड़े कटी पाल के हिस्से को पार कर तीनी सीढ़ियां उतर कर ताल की रौंस पर आयी । यह रौंस ५०० मन्दिर की चौड़ी आयी है । इस रौंस की भीतरी तरफ ताल तथा ताल के मध्य में टापू महल शोभा दे रहा है ।

६२. पाल अन्दर की मोहोलात

चौरस पाल के नीचे संक्रमणिक सीढ़ियों की तरफ मंदिरों की एक हार आयी है, जिसके प्रत्येक मन्दिरों में देखने के तीन-तीन और गिनती के दो-दो दरवाजे आये हैं । ये मन्दिर २५० मन्दिर के लम्बे तथा १२५ मन्दिर के चौड़े आये हैं । पहली हार मन्दिरों की भीतरी तरफ १२५-१२५ मन्दिर की दूरी पर थम्भों की दो हारें आयी हैं । इन थम्भों की मेहराबों में

झूले आये हैं । दूसरी हार के थम्भों की भीतरी तरफ १२५ मन्दिर की दूरी पर मन्दिरों की दूसरी हार आयी है । इन मन्दिरों में देखने के चार-चार और गिनती के तीन-तीन दरवाजे आये हैं । दूसरी हार मन्दिरों की भीतरी तरफ १२५ मन्दिर की चौड़ी एक गली चारो तरफ घेर कर आयी है । इस प्रकार चौरस पाल के अन्दर बेशुमार शोभा आयी है ।

६३. सोलह देहुरी का घाट

सोलह देहुरी का घाट हौज कौसर तालाब की पूर्व दिशा में आया हुआ है । जल की जमीन से पांच थम्भों की नौ हारें या नौ थम्भों की पांच हारें जल रौंस के बराबर आयी हैं । इनके उपर जल रौंस के बराबर छत पटी है । कुण्ड के स्थान पर एक थम्भ नहीं आया है । श्री यमुना जी के तरफ जो पांच थम्भ आये हैं, उनके बीच में चार घड़नाले आये हैं । उन घड़नालों से श्री यमुना जी का जल हौज कौसर में प्रवेश करता है । इसी प्रकार पश्चिम के चार घड़नालों से होकर ताल में जल समाता है । पूर्व दिशा के पांच थम्भों के ऊपर २५० मन्दिर की चौड़ी रौंस आयी है, जो श्री यमुना जी की दोनों तरफ की रौंसों से मिली हुई है । इस रौंस के पूर्व किनारे पर कठेड़ा शोभा ले रहा है । इसी तरह पश्चिम दिशा के पांच थम्भों के ऊपर ५०० मन्दिर की चौड़ी ताल की रौंस आयी है । पश्चिम दिशा में जो पांच थम्भ आये हुए हैं, उन पांच थम्भों की पूर्व दिशा में ७५० मन्दिर की दूरी पर थम्भों की दूसरी हार आयी है । इसी प्रकार पूर्व दिशा के पांच थम्भों की भीतरी तरफ पश्चिम दिशा में २५० मन्दिर की दूरी पर थम्भों की दूसरी हार आयी है । शेष पांच थम्भों की सात हारें या सात थम्भों की पांच हारें १२५-१२५ मन्दिर की दूरी पर आयी हैं ।

पूर्व एवं पश्चिम दिशा के पांच-पांच थम्भों को छोड़कर शेष ३४ थम्भों के ऊपर कमर भर ऊँचा चबूतरा उठा है । इस चबूतरे के ऊपर पांच

Nijanand App

थम्भों की सात हारें या सात थम्भों की पांच हारें आयी है । कुण्ड के स्थान पर एक थम्भ नहीं आया है, जिससे २५० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा कुण्ड दिखायी देता है । कुण्ड के चारों तरफ घेर कर कठेड़ा आया है । कठेड़े की बाहरी तरफ १२५ मन्दिर की चौड़ी पड़साल आयी है । इस पड़साल में गिलम, कूर्सियों तथा सिंहासन की अपार शोभा है । ३४ थम्भों की पूर्व एवं पश्चिम दिशा में जो पांच-पांच थम्भ आये है, उनको झरोखे के थम्भ कहा जाता है । पूर्व दिशा के जो पांच थम्भ आये हैं, वे पाल अन्दर की मोहोलात की बाहरी दिवाल की सीध में आये हैं । इन पांच थम्भों की चार मेहराबें हैं, जो एक बड़ी मेहराब के अन्दर आयी हैं । इसी प्रकार पश्चिम दिशा में भी पांच थम्भों की चार मेहराबें एक बड़ी मेहराब के अन्दर आयी हैं । ये पांच थम्भ भीतरी गली की सीध में आये हैं । इन पांच थम्भों के दायें-बायें एक-एक मेहराब और आयी है । इसकी पश्चिम दिशा में २५०-२५० मन्दिर की दूरी पर चार थम्भ आये है, जिनके ऊपर तीन मेहराबें शोभा ले रही है । ये चार थम्भ ३४ थम्भों से अलग आये हैं । इनके मध्य की मेहराब से तीन सीढ़ियां ताल की रौंस पर उतरी है । इन मेहराबों के उपर ७५० मन्दिर का लम्बा और २५० मन्दिर का चौड़ा चबूतरा आया है । इस चबूतरे की उत्तर एवं दक्षिण दिशा से कटी पाल की सीढ़ियां उतरी है । पश्चिम दिशा में कठेड़ा आया है ।

३४ थम्भों की छत और पाल अन्दर की मोहोलातों की एक ही छत आयी है, जिसे चौरस पाल कहा जाता है । इस चौरस पाल के उपर ५०० मन्दिर का लम्बा चौड़ा कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है । यह चबूतरा नीचे के ३४ थम्भों की पूर्व एवं पश्चिम दिशा के पांच-पांच थम्भों को छोड़कर बीच के २५ थम्भों के ऊपर आया है । इस चबूतरे की चारो दिशा में कमर भर नीचे १२५ मन्दिर की पड़साल आयी है । चबूतरे के

ऊपर पांच थम्भों की पांच हारें आयी है । इन पच्चीस थम्भों की चालीस मेहराबों के उपर एक ही छत आयी है । इस छत के ऊपर चार गुमटियों की चार हारें आयी हैं, जिनके ऊपर कलश, ध्वजा, पताका तथा बेरखों की अपार शोभा हो रही है और छत के चारों तरफ १२५ मन्दिर का चौड़ा छज्जा घेर कर आया है । छज्जे के चारों तरफ कठेड़ा घेर आया है । इस छज्जे के नैऋत्य एवं वायव्य कोण पर दो देहुरियां आयी है । ये दोनों देहुरियां १२८ देहुरियों के अन्दर ही गिनी जाती है, लेकिन ये दोनों २५० मन्दिर की लम्बी और १२५ मन्दिर की चौड़ी आयी है । इस सोलह देहुरी के घाट की दो भोम तीसरी चांदनी आयी है ।

६४. तेरह देहुरी का घाट, झुण्ड का घाट तथा नव देहूरी का घाट

तेरह देहुरी का घाट हौज कौशर तालाब की दक्षिण दिशा में आया है । चौरस पाल के पहले हिस्से में ५०० मन्दिर का लम्बा तथा २५० मन्दिर का चौड़ा कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है । चबूतरे की चारों दिशा के मध्य से तीन-तीन सीढ़ियां उतरी है । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी में कठेड़ा आया है । चबूतरे की चारों दिशा तथा चारों कोनों पर आठ थम्भ आये हुए हैं, जिनके ऊपर एक ही छत आयी है । इस छत के चारों तरफ किनार पर घेर कर कठेड़ा शोभा ले रहा है । कठेड़े के मध्य में चारों कोनों एवं चारों दिशाओं में आठ गुमटियां आयी हैं । आठ गुमटियों के मध्य में चार गुमटियां तथा चार के मध्य में एक गुमटी आयी है । इस प्रकार कुल १३ गुमटियां हुई । इन गुमटियों के उपर कलश, ध्वजा तथा पताकाओं की अपार शोभा है । तेरह देहुरी के घाट की एक भोम तथा दूसरी चांदनी आयी है । तेरह देहुरी के घाट की उत्तर

Nijanand App

दिशा में पड़साल की जगह को छोड़कर चौरस पाल के तीसरे हिस्से में २५० मन्दिर की लम्बी चौड़ी दो देहुरिया आयी हैं । दोनों देहुरियों के बीच में २५० मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई की जगह में घाट की भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । दोनों देहुरियों के उपर तथा बीच की जगह में १० मेहराबें आयी हैं । दोनों देहुरियों की उत्तर दिशा में २५० मन्दिर के लम्बे चौड़े दो चबूतरे आये हैं । दोनों चबूतरों के बीच में छत पटी है, जिससे ७५० मन्दिर का लम्बा और २५० मन्दिर का चौड़ा एक ही चबूतरा दिखायी पडता है । इस चबूतरे की उत्तरी किनार पर कठेड़ा आया है एवं पूर्व-पश्चिम दिशा से कटी पाल की भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं ।

झुण्ड का घाट हौज कौसर तालाब की पश्चिम दिशा में आया हुआ है । चौरस पाल के पहले हिस्से में २५० मन्दिर के लम्बे चौड़े दो चबूतरे आए हुए हैं । दोनों चबूतरों के बीच में २५० मन्दिर का लम्बा-चौड़ा एक चौक शोभा ले रहा है । दोनों चबूतरों की चारों दिशा के मध्य से तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा शोभा ले रहा है । दोनों चबूतरों के चारों कोनों पर चार-चार पेड़ बड़ेवन के आए है, जिनके उपर दस मेहराबें शोभा ले रही हैं । दोनों चबूतरो के आठों पेड़ों की १६ दिवालें आयी हैं । चबूतरे की प्रत्येक दिशा में चार-चार हिस्से आये हैं । मध्य के दो हिस्से में दरवाजा आया है और दायें बायें एक-एक हिस्से में पेड़ों की थड़ों की दिवाल आयी है। इस झुण्ड के घाट की पांच भोम तथा छठीं चांदनी आयी है । हौज कौशर तालाब की पूर्व दिशा से उत्तर एवं दक्षिण दिशा से होकर वृक्षों की हारें पश्चिम दिशा में आकर मिली है, इसलिये इसे झुण्ड का घाट कहा गया है । झुण्ड के घाट की पूर्व दिशा के चौरस पाल के तीसरे हिस्से में दो देहुरियां आयी हैं । दोनों देहुरियों के बीच में भोम भर नीचे ताल की तरफ घाट की सीढ़ियां उत्तरी हैं । दोनों देहुरियों से आगे पूर्व दिशा में दो चबूतरे

आए हुए हैं, जिनके बीच में छत पटने से ७५० मन्दिर का लम्बा तथा २५० मन्दिर का चौड़ा एक ही चबूतरा दिखायी देता है । इस चबूतरे की उत्तर तथा दक्षिण दिशा से कटीपाल की भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । इसी तरह चौरस पाल की १२८ देहुरियों के आगे २५० मन्दिर के लम्बे चौड़े चबूतरे आये हैं । उन चबूतरों के दोनों तरफ से भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । जहां दो तरफ से सीढ़ियां आकर मिलती हैं, वहाँ एक चौक आया हैं । उस चौक के चारों कोनों पर चार थम्भ उठें हैं, जिनके उपर चार मेहराबें एवं छत आयी है । छत के ऊपर छोटी देहुरियां शोभा ले रही हैं ।

हौज कौशर तालाब की उत्तर दिशा में नौ देहुरियों का घाट आया है जिसकी शोभा तेरह देहुरी के घाट के समान आयी है । अन्तर केवल इतना ही है कि आठ थम्भों की छत के उपर आठ देहुरी और मध्य में एक देहुरी आयी है ।

६५. चौरस पाल के ऊपर देहुरी एवं वृक्ष

चौरस पाल की १२८ हांस की सन्धि में १२८ देहुरियां आयी हैं । प्रत्येक देहुरियां दो-दो रंगों की आयी हैं । चौरस पाल के ऊपर बड़े वन के वृक्षों की पांच भोमें आयी हैं, जिनकी प्रत्येक भोम की मेहरावों में सुन्दर झूले रंग-बिरंगे चन्द्रवा के नीचे शोभा लेते हैं ।

६६. टापू महल

हौज कौशर तालाब के मध्य में टापू महल आया हुआ है, जिसमें ६०-६० मन्दिरों की दो हारें आयी हैं । दो हार मन्दिरो की चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे आये हैं । बाहरी हार मन्दिरों की चारों दिशा के बड़े दरवाजों के दायें-बायें दो-दो चबूतरे आये है । इन चबूतरों के बीच में चौक शोभा ले रहा है । बाहरी हार मन्दिरों की सन्धि की दिवाल के

Nijanand App

सामने बाहरी तरफ गुर्ज आये हुए है । प्रत्येक गुर्जों में पांच पांच दरवाजे दिखायी देते हैं । प्रत्येक दो गुर्जों के बीच में वनों की शोभा आयी है । बाहरी हार के प्रत्येक मन्दिर में देखने के छः छः दरवाजे हैं, किन्तु गिनती में पांच-पांच दरवाजे आये हैं । इन मन्दिरों की बाहरी तरफ वन की रौंस से जल की रौंस पर सीढ़ियां उतरी है । इसी तरह जल रौंस से भी जल चबूतरे पर सीढ़ियां उतरी हैं । बाहरी हार मन्दिरों की भीतरी तरफ ६४ थम्भों की एक हार आयी है । इस थम्भ की हार की भीतरी तरफ ६० मन्दिरों की दूसरी हार आयी है, जिसके प्रत्येक मन्दिरों में देखने के चार-चार तथा गिनती के तीन-तीन दरवाजे आये हैं । इस दूसरी हार मन्दिरों की भीतरी तरफ ६४ थम्भों की दूसरी हार आयी है । इस थम्भ की हार की भीतरी तरफ कमर भर ऊँचा एक बगीचा आया हुआ है । चबूतरे की किनार के चारों तरफ थम्भों की तीसरी हार आयी है । इस चबूतरे के मध्य भाग में, पानी का एक चेहेबच्चा आया हुआ है । चेहेबच्चे के चारों तरफ घेर कर अनेकों फूलवारियां, नहरें, चेहेबच्चे आदि शोभा ले रहे हैं । चबूतरे के उपर बगीचे के चारों तरफ खाली चौक आया है, जिसमें गिलम, सिंहासन तथा कुर्सियों की अपार शोभा है । इसी तरह टापू महल की तीनों भोमों में शोभा आयी है । अन्तर केवल इतना ही है कि उपर की दोनों भोमों में चेहेबच्चे और बगीचे नहीं आये हैं । इस प्रकार टापू महल की तीन भोम और चौथी चांदनी आयी है ।

६७. टापू महल की चांदनी

टापू महल की चांदनी की किनार पर चारों तरफ कमर भर ऊँची दिवाल आयी है । दिवाल के ऊपर लाल कांगरी आयी है । दिवाल से लगकर गुर्जों की चांदनी के सिर पर कुर्सियां आयी हैं । प्रत्येक कुर्सियों पर दो दो सौ सखियां बैठती हैं । चांदनी के मध्य भाग में कमर भर ऊँचा

चबूतरा आया है । चबूतरे की चारों तरफ से तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं । सीढ़ियों को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा शोभा ले रहा है । चबूतरे के उपर गिलम, सिंहासन तथा कुर्सियों की अपरम्पार शोभा हो रही है । इस चांदनी की चारों तरफ देखने से चौरस पाल पर आए हुए बड़े वन के वृक्षों की अकथनीय शोभा दिखायी दे रही है ।

६८. चौबीस हांस का महल

चौबीस हांस का महल हौज कौसर तालाब की दक्षिण दिशा में शोभा ले रहा है । जमीन से भोम भर ऊँचा २४ हांस का गोल चबूतरा आया है । इस चबूतरे से लगकर हांस-हांस की सन्धि में २४ कुण्ड आये हुए हैं । ये सभी कुण्ड जमीन से कमर भर ऊँची रौंस पर आये हुए हैं । २४ कुण्डों से २४ नहरें निकली हुई हैं ।

भोम भर चबूतरे की चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ियां आयी हैं । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर चारों तरफ किनार पर कठेड़ा आया है । इस कठेड़े से भीतरी तरफ रौंस की जगह को छोड़कर २० मन्दिरों की एक हार चारों तरफ घेर कर आयी है । चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे आये हैं । बड़े दरवाजों की बाहरी तरफ दाये-बायें दो-दो चबूतरे आये हैं । दोनों चबूतरों पर आठ थम्भ और १० मेहराबें आयी हैं । मन्दिरों की बाहरी तरफ प्रत्येक हांस की सन्धि में गुर्ज आये हुए हैं । प्रत्येक गुर्जों में पांच-पांच दरवाजे आये है । बाहरी हार के प्रत्येक मन्दिरों में देखने के छः छः, किन्तु गिनती के ५-५ दरवाजे आये हैं । बाहरी हार मन्दिरों की भीतरी तरफ २४ थम्भों की एक हार आयी है । इन थम्भों की हार की भीतरी तरफ मन्दिरों की दूसरी हार आयी है, जिसके प्रत्येक मन्दिरों में गिनती के तीन-तीन और देखने के चार-चार दरवाजे आये हैं । मन्दिरों की इस हार की भीतरी तरफ थम्भों की दूसरी हार आयी है । दूसरी हार

Nijanand App

थम्भों की भीतरी तरफ एक गोल चबूतरा कमर भर ऊंचा आया है, जिसकी चारों तरफ किनार पर थम्भों की तीसरी हार आयी है। चबूतरे की चारों दिशा से सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा शोभा ले रहा है। चबूतरे के मध्य भाग में एक चेहेबच्चा आया हुआ है। चेहेबच्चे के मध्य भाग में एक पानी का स्तून आया है, जो पांच भोम छठीं चांदनी तक गया है। चेहेबच्चे की चारों तरफ फुलवारी, नहरें तथा फव्वारे बेशुमार शोभा को धारण कर रहे हैं। इस फुलवारी की चारों तरफ चबूतरे पर गिलम, सिंहासन, कुर्सियां आदि आयी हैं। इस प्रकार की शोभा पांचों भोमों में आयी है।

६९. बड़ा दरवाजा तथा जमीन पर बगीचों का दृश्य

चौबीस हांस के महल का बड़ा दरवाजा १००० मन्दिर की लम्बाई तथा २५० मन्दिर की चौड़ाई में आया है। दरवाजे की बाहरी तरफ २५०-२५० मन्दिर के लम्बे-चौड़े दो चबूतरे आये हैं। चबूतरे की चारों दिशा में तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी तीन दिशा में कठेड़ा आया है। दोनों चबूतरों के ऊपर आठ थम्भ और दस मेहराबें आयी हैं।

२४ हांस के महल के भोम भर चबूतरे से लगकर जमीन से कमर भर ऊँची रौंस पर कुण्ड आये हैं। इन २४ कुण्डों से जो २४ नहरें निकली हैं, उन चौबीसों नहरों में २४-२४ तालाब आये हैं अर्थात् २४ तालाबों की २४ हारें आयी हैं। प्रत्येक तालाब की चारों दिशा में चार नहरें दिखायी देती हैं। चार नहरों के बीच में एक बगीचा शोभा दे रहा है। प्रत्येक नहरों एवं तालाबों के आस-पास मोहोलातें आयी हैं। इन मोहोलातों की दो भोम तीसरी चांदनी आयी है। सभी बगीचों एवं तालाबों को चारों तरफ से घेरकर एक महानद आयी है। महानद के भी दोनों तरफ रौंस एवं

मोहोलातें शोभा ले रही हैं। ईशान कोण से दो नहरें निकलकर दक्षिण दिशा में मिल गयी हैं। इन दोनों नहरों के द्वारा सभी नहरों एवं तालाबों का पानी जवेरों की नहरों में जाकर मिल गया है।

७०. छठीं चांदनी

छठीं चांदनी के मध्य में एक चेहेबच्चा आया हुआ हैं, जिसमें २५ फव्वारे आये हुए हैं। २४ फव्वारों का पानी कमानों (मेहराबों) के रूप में होकर २४ गुर्जों के कुण्डों में गिरता है। पच्चीसवें मध्य के फव्वारे का पानी उपर उछलकर चेहेबच्चे में ही गिरता है। चेहेबच्चे से लेकर चांदनी की किनार तक बेशुमार बगीचे, नहरें, तथा फव्वारे शोभा ले रहे हैं। २४ गुर्जों के कुण्डों से धाराओं के रुप में जमीन पर आये हुए २४ कुण्डों में छः भोम नीचे पानी गिरता है।

७१. चौबीस हांस के महल का खड़ा चित्र

चौबीस हांस का महल जमीन से भोम भर ऊँचे गोल चबूतरे पर आया है। अनेकों रत्नों की नक्शकारी से युक्त तथा फव्वारों की बूंदों से ढका हुआ यह महल बेशुमार शोभा को धारण किये हुए है। इस महल के चारों तरफ घेर कर २४ बगीचों की २४ हारें नहरों, चेहेबच्चों तथा मोहोलातों सहित दो भोम की ऊँची दिखायी देती है।

७२. जवेरों की नहरों के नौ फिरावे

पूर्व वर्णित शोभा को चारों तरफ से घेर कर जवेरों की नहर शोभा ले रही है। भीतरी तरफ के चार पहल के महल से लेकर बाहरी तरफ के चार पहल के महल तक नौ महलों की शोभा आयी है। जवेरो के महल साढ़े चार लाख कोस की चौड़ाई लेकर चारों तरफ घेर कर आये हुए हैं। दस नहरों के मध्य में जवेरों की नहरों के नौ महल आये हुए है। प्रत्येक

Nijanand App

महल एक नहर के मध्य भाग से लेकर दूसरे तरफ की मध्य नहर तक की जगह में आया है। इस प्रकार आड़ी एवं खड़ी नहरों के बीच में जवेरों के महल आये है। भीतरी तरफ के चार पहल के महल को घेरकर क्रमशः आठ, सोलह, बत्तीस, चौसठ पहल के महल आये हैं। पुनः बत्तीस, सोलह, आठ और चार पहल के महल आये हैं।

७३. चार पहल की हवेली

जमीन से भोम भर ऊँचा गोल चबूतरा आया है। चबूतरे की चारों दिशा में भोम भर की सीढ़िया उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह को छोड़कर कठेड़ा आया है। यह चबूतरा चार नहरों के मध्य की जगह के तीसरे हिस्से में आया है। दो हिस्से में बगीचे चारों तरफ घेरकर आये हैं। चबूतरे के उपर कठेड़े से भीतरी तरफ रौंस की जगह को छोड़कर ६४ महलों की एक हार आयी हैं। इन महलों के चार हांस आये हुए है। प्रत्येक हांस की सन्धि में एक-एक गुर्ज आया है। दो गुर्जो के बीच में १६ महल आये हैं। प्रत्येक महल में देखने के चार-चार दरवाजे एवं गिनती में तीन-तीन दरवाजे आये हैं। इन महलों की चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे आये हैं। प्रत्येक दरवाजे की बाहरी तरफ दो-दो चबूतरे आये हैं, जिन पर आठ थम्भ और १० मेहराबें शोभा ले रही है। इन महलों की हार की भीतरी तरफ थम्भों की एक हार आयी है। थम्भों की इस हार की भीतरी तरफ ६४ महलों की दूसरी हार आयी है। इसकी चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे आये हैं। दूसरी हार के महलों की भीतरी तरफ थम्भों की दूसरी हार आयी है। इस दूसरी हार थम्भों की भीतरी तरफ एक कमर भर ऊँचा गोल चबूतरा आया है। चबूतरे की चारों तरफ किनार पर थम्भों की तीसरी हार आयी है। चबूतरे की चारों दिशा में तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा शोभायमान

है। चबूतरे के मध्य में एक चेहेबच्चा आया है। चेहेबच्चे के मध्य में एक पानी का स्तून आया है, जो पांचवीं चांदनी तक गया है। चेहेबच्चे की चारों तरफ बेशुमार बगीचे, नहरें, और फव्वारे आदि शोभा ले रहे हैं। इसी प्रकार सभी महलों की शोभा आयी है। इसकी ऊँचाई चार भोम पांचवीं चांदनी आयी है। भोम भर गोल चबूतरे से लगकर जमीन से कमर भर ऊँची चौड़ी रौंस पर चार गुर्जो के सामने चार कुण्ड आये हैं। इन कुण्डों से चारों दिशाओं में चार नहरें निकली हैं, जिससे महल की चारों तरफ चार बगीचे दिखायी देते हैं।

७४. एक महल का दृश्य

एक महल १०० कोस का लम्बा चौड़ा आया है। इसकी चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे आये हैं। चारों दरवाजों के दायें-बायें चार-चार मन्दिर आये हैं। प्रत्येक मन्दिर में देखने के चार-चार तथा गिनती के तीन-तीन दरवाजे आये हैं। इस महल की बाहरी एवं भीतरी तरफ के बड़े दरवाजों के दायें-बायें दो-दो चबूतरे आये हैं। एक महल के मन्दिरों की भीतरी तरफ थम्भों की एक हार चारों तरफ घेर कर आयी है। थम्भों की इस हार की भीतरी तरफ कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है, जिसकी चारों तरफ किनार पर थम्भ, मेहरावें, कठेड़ा और चारों दिशा में चार सीढ़ियां आयी हैं। चबूतरे के ऊपर गिलम, सिंहासन और कुर्सियों की शोभा आयी है।

७५. आठ पहल की हवेली

चार पहल की हवेली को चारों तरफ से घेरकर आठ पहल की हवेली आयी है, जिसमें आठ भोम, आठ गुर्जे, उपर चांदनी में आठ फव्वारें, आठ धारायें, आठ कुण्ड, आठ नहरें और आठ ही बगीचों की अपरम्पार शोभा आयी है।

Nijanand App

७६. सोलह पहल की हवेली

आठ पहल की हवेली को चारों तरफ से घेरकर १६ पहल की हवेली आयी है, जिसमें १६ भोम, १६ गुर्जे, चांदनी के उपर १६ फव्वारे, १६ झरने, १६ कुण्ड, १६ नहरों और १६ बगीचों की शब्दातीत शोभा हो रही हैं ।

७७. बत्तीस पहल की हवेली

सोलह पहल की हवेली को चारों तरफ से घेरकर ३२ पहल की हवेली आयी है जिसमें ३२ भोम, ३२ गुर्जे, चांदनी पर ३२ फव्वारें, ३२ झरने, ३२ कुण्ड, ३२ नहरें और ३२ बगीचे अपार शोभा से युक्त दिखायी दे रहे हैं ।

७८. चौसठ पहल की हवेली

३२ पहल की हवेली को चारों तरफ से घेरकर ६४ पहल की हवेली आयी है । इस हवेली में ६४ भोम, ६४ गुर्जें, चांदनी के ऊपर ६४ फव्वारे, ६४ धारायें, ६४ कुण्ड, ६४ नहरें और ६४ ही बगीचे आये हैं ।

पुनः क्रमशः ३२, १६, ८ और ४ पहल की हवेलियां पूर्व वर्णन के समान आयी हैं ।

७९. जवेरों के महल की चांदनी

सभी जवेरों के महलों की चांदनी एक जैसी आयी है । अन्तर केवल इतना ही है कि जवेरों की हवेलियों के पहल के अनुसार गुर्जों के कुण्ड एवं फव्वारे कम ज्यादा आये है ।

एक आठ पहल की हवेली की चांदनी का ब्यान किया जाता है । चांदनी के मध्य में एक कुण्ड आया है । उस कुण्ड से नौ फव्वारे छूटते

हैं । आठ फव्वारों का पानी आठ गुर्जों के कुण्डों में कमानों के रुप में गिरता है । नवां फव्वारा उपर चकरी खाकर कुण्ड में ही गिरता है । कुण्ड से चांदनी की बाहरी किनार तक के बीच की जगह में अनेकों बगीचे, नहरें, चेहेबच्चे अपार शोभा ले रहे है । चांदनी की किनार पर चारों तरफ कमर भर ऊँची दिवाल आयी है, जिसके ऊपर रंग बिरंगी कांगरी की शोभा आयी है । सम्पूर्ण जवेरों की हवेलियां एक हीरे की आयी है, जिससे हवेलियों की दिवालों, थम्भों और दरवाजों आदि सम्पूर्ण जोगवाई के अन्दर पानी की नहर चलती हुई प्रतीत होती है । सम्पूर्ण हवेलियों की चांदनी के गुर्जों के कुण्डों से झरनों की भांति पानी गिरता हुआ दिखायी देता है, जिसकी अपरम्पार शोभा है ।

८०-८१. माणिक पहाड, बड़ा दरवाजा तथा हवेलियां

माणिक पहाड़ जवेरों की नहरों के बाहरी तरफ दक्षिण दिशा में आया है, जो अनेकों प्रकार के नगों की नक्शकारी से युक्त एक माणिक नग के अन्दर शोभायमान है । जमीन से एक भोम ऊँचा १२००० हांस का एक गोल चबूतरा आया हुआ है । चबूतरे के प्रत्येक हांस की सन्धि में जमीन से कमर भर ऊँची रौंस के उपर १२००० कुण्ड आये हैं । १२००० कुण्डों से १२००० नहरें निकली हैं । चबूतरे की चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ियां आयी हैं । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर चारों तरफ किनार पर कठेड़ा शोभा ले रहा है । कठेड़े की भीतरी तरफ रौंस की जगह को छोड़कर एक मन्दिर की मोटी दिवाल १२००० हांस की आयी है । एक हांस ४०० कोस का आया है । हांस-हांस की सन्धि में १२००० गोल गुर्ज आये हैं । प्रत्येक हांस के मध्य भाग में एक-एक छोटे दरवाजे आये हैं । दरवाजों की बाहरी तरफ दो-दो चौरस गुर्ज आये हैं । चारों दिशा के हांस में चार बड़े दरवाजे आये हैं, जिनके दायें-बायें दो-दो

Nijanand App

चौरस चबूतरे आये हैं । इन दरवाजों की भीतरी तरफ थम्भों की दो हारें आयी हैं । दोनों हार थम्भों की भीतरी तरफ १२००० हवेलियों की १२००० हारें आयी हैं, जिनकी उपराउपर १२००० भोमें आयी हैं । प्रत्येक भोम ४०० कोस की ऊँची आयी है । प्रत्येक दो हवेलियों के बीच में थम्भों की दो हारें और तीन गलियां आयी हैं । चार चौरस हवेलियों के बीच में एक गोल हवेली तथा चार गोल हवेलियों के बीच में एक चौरस हवेली आयी है । प्रत्येक हवेलियों की चार दिशा में चार बड़े दरवाजे आये हैं । जहां दो हवेलियों के आमने सामने बड़े दरवाजे आये हैं, वहां पर चार चबूतरों एवं २४ मेहराबों की शोभा आयी है और प्रत्येक चार हवेलियों के कोनों में भी २४ मेहराबें आयी हैं । १२००० हवेलियों की भीतरी तरफ रौंस सहित बगीचे चारों तरफ घेर कर आये हैं । इन बगीचों की भीतरी तरफ भोम भर चबूतरों के उपर १२००० माणिक महल आये हुए हैं । माणिक महल के चबूतरे की भीतरी तरफ १२००० बगीचे चारों तरफ घेर कर आये हैं । इन बगीचों की भीतरी तरफ भोम भर ऊँचा चबूतरा आया हुआ है, जिसके चारों तरफ किनार पर १२००० थम्भों की मेहराबों में १२००० हिंडोले आये हैं । इस चबूतरे के मध्य भाग में एक पानी का स्तून आया हुआ है, जो १२००० भोम तक सीधे चला गया है । इस स्तून से पिचकारी के सदृश्य बारीक-बारीक फुहारे बगीचों में पड़ते हैं ।

८२. एक हवेली का दृश्य

एक हवेली के अंदर चारों दिशा में बाराह हजार महल आये हुए हैं । प्रत्येक दो महोलों के बीच में दो थंभों की हारे और तीन गलियाँ आयी है । इन महोलों की भीतरी तरफ थंभों की एक हार चारों तरफ घेर कर आयी है । इस थंभों की हार से भीतरी तरफ कमर भर नीचे बारह हजार फूलवारिया आयी है, जिसमें बेसुमार नहेंरें, चेहेबच्चे शोभा ले रहे है । इस

फुलवारी की भीतरी तरफ मध्य म कमर भर ऊँचा चबूतरा आया हुआ है, जिसकी चारों तरफ किनार पर थंभो की हार आयी है । इन थंभो की महेराबो में बारह हजार हिंडोलें आये हैं ।

८३. एक महल की शोभा

एक महल की भीतरी तरफ चारो दिशा में बारह हजार मंदिर आये हुए है । इस प्रकार एक महल की एक दिशा में तीन हजार मंदिर आये हुए है तथा मध्य में तीन मंदिर का लम्बा बड़ा दरवाजा है । इस प्रकार चारों दिशा में मन्दिरों और दरवाजो की शोभा आयी है । प्रत्येक दो मन्दिरों की बीच में दो थम्भो की हारे और तीन गलियां आयी है । बारह हजार मन्दिरो की भीतरी तरफ थम्भो की एक हार चारो तरफ घेर कर आयी है । इन थंभो की हारके भीतरी तरफ कमर भर नीचे बगीचा आया है । ब्रगीचों की भीतरी तरफ कमर भर ऊँचा चबुतरा आया है, जिसकी चार तरफ बारह हजार थंभ आये है, जिनकी महेराबों में हिंडोले शोभा ले रहे हैं ।

८४. एक मंदिर का चित्र

एक मंदिर के एक दिशा में तीन हजार कोठरियाँ आयी है । तब चारों तरफ बारह हजार कोठरियाँ एक मंदिर की चारों दिशा में तीन-तीन कोठरियो की लम्बाई में चार बड़े दरवाजे आये हैं । दरवाजो की बाहरी तरफ दायें-बायें दो चबुतरे आये हुए हैं, जिनकी उपर आठ थंभ तथा दस मेहराबें आयी हैं । प्रत्येक दो कोठरियो के बीचमें दो थंभोकी हारें और तीन गलियां आयी हुई है । बारह हजार कोठरियों की भीतरी तरफ थंभो की एक हार आयी है, इन थंभो की भीतरी तरफ कमरभर नीचे बगीचा चारों तरफ घेरकर आया है । बगीचो की भीतरी तरफ कमरभर ऊँचा चबूतरा आया है, जिसके चारो तरफ थंभो की मेहेराबो में हिंडोलें आये है. ।

८५. एक मंदिर के अन्दर कोठरियों का दृश्य

एक मन्दिर के अन्दर १२००० कोठरियां आयी हैं । कोठरियों के बाहरी दरवाजों के सामने मन्दिर की चारों दिशा के दरवाजे आये हैं । प्रत्येक दो कोठरियों के बीच दो थंभों की हारें और तीन गलियां आयी हैं । दो कोठरियों के आमने-सामने जहां दो दरवाजे आये हैं, वहां पर चार चबूतरे एवं २४ मेहराबें आयी है । इस प्रकार सभी गोल एवं चौरस हवेलियों की शोभा जानना जी ।

८६. माणिक पहाड़ की एक हवेली के बाहर का दृश्य

एक हवेली की एक दिशा की बाहरी दिवाल की शोभा का ब्यान किया जाता है । दो अक्शी थम्भों के ऊपर एक अक्शी बड़ी मेहराब आयी है, जो हवेली की मेहराब है । इसकी ऊँचाई ४०० कोस की आयी है । इस एक हवेली की मेहराब के अन्दर महलों की तीन हजार अक्शी मेहराबें दिखायी देती हैं । इसी तरह महल की एक मेहराब के अन्दर तीन हजार मन्दिरों की अक्शी मेहराबें आयी हैं । मन्दिर की एक अक्शी मेहराब के अन्दर तीन हजार कोठरियों की अक्शी मेहराबें आयी है । इन सभी मेहराबों के ऊपर तीन-तीन फूल तथा अनेक प्रकार की कांगरी एवं बेलबूटे बेशुमार शोभा के साथ आये हैं ।

८७. माणिक पहाड़ के भीतर माणिक महल का दृश्य

माणिक पहाड़ की १२००० हवेलियों की भीतरी तरफ जो १२००० बगीचों के चौक आये हैं, उनकी भीतरी तरफ भोम भर ऊँचा १२००० हांस की गिर्द में गोल चबूतरा आया है । इस चबूतरे के हांस-हांस के

मध्य-भाग से दोनों तरफ भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा आया है । चबूतरे के मध्य में १२००० माणिक महलों की एक कतार आयी है । प्रत्येक महल की सन्धि में एक-एक गोल गुर्ज आया है । गुर्जों की भीतरी तरफ थम्भों की दो हारें और तीन गलियां आयी हैं । माणिक महलों की बाहरी एवं भीतरी दिवाल में दो-दो दरवाजों के मध्य में एक-एक झरोखा आया है तथा पाखे की दिवाल में एक-एक दरवाजा आया है । इस प्रकार १२००० भोम में शोभा आयी है ।

इन माणिक महलों के चबूतरे की भीतरी तरफ भोम भर नीचे १२००० बगीचों की एक हार आयी है । इन बगीचों की भीतरी तरफ भोम भर ऊँचा गोल चबूतरा आया है, जिसकी चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । चबूतरे के मध्य भाग में एक बहुत मोटा पानी का स्तून आया है । पानी का यह स्तून और माणिक महल ११९८० भोम तक अलग-अलग गये हैं । उसके उपर दोनों तरफ से छज्जे निकलकर ११९८१ वें भोम से मिलते हुए २० भोम तक गये हैं, जिससे सम्पूर्ण माणिक की एक ही चांदनी हो गयी है ।

८८. माणिक पहाड़ पर टापू महल तथा देहेलान

माणिक पहाड़ की चांदनी के मध्य भाग में एक भोम ऊँचा चबूतरा आया है । इस चबूतरे की बाहरी तरफ रौंस की जगह छोड़कर १२००० टापू महलों की एक हार आयी हैं । इन टापू महलों की २० भोम और एक्कीसवीं चांदनी आयी है । प्रत्येक टापू महलों की बाहरी दिवाल में दो दरवाजों के मध्य में एक झरोखा आया है । पाखे की दोनो दिवालों तथा भीतरी दिवाल में एक-एक दरवाजा आया है । इन टापू महलों की चारों

Nijanand App

दिशा में चार बड़े दरवाजे आये हैं, जिनकी बाहरी तरफ दो-दो चबूतरे आये हैं । उनके ऊपर आठ थम्भ और दस मेहराबें आयी हैं । माणिक महलों की भीतरी तरफ थम्भों की एक हार आयी है । थम्भों की इस हार की भीतरी तरफ कमर भर नीचे बेशुमार बगीचे, नहरें तथा चेहेबच्चे शोभा ले रहे हैं । इन बगीचों की भीतरी तरफ एक बड़ा चेहेबच्चा आया हुआ है । इस चेहेबच्चे के मध्य भाग से पानी का एक स्तून चांदनी तक चला गया है । यह टापू महल नीचे के चबूतरे के सिर के ऊपर आया है ।

माणिक पहाड़ की चांदनी पर जो देहेलान आयी है, उस देहेलान का चबूतरा माणिक महल के सिर पर आया है । यह चबूतरा १२००० हांस की गिर्द में आया हुआ है । इस चबूतरे के हांस हांस के मध्य भाग से बाहरी और भीतरी तरफ भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । चबूतरे के उपर थम्भों की चार हारें आयी हैं, जिनके ऊपर तीन देहलाने दिखायी दे रही हैं । मध्य की देहलान दो भोम तथा दायें-बायें की देहलान एक-एक भोम की आयी है । इस देहलान के चबूतरे और टापू महल के चबूतरे के बीच नीचे के बगीचों के ऊपर भोम भर गहरा ताल आया हुआ है ।

८९. टापू महल की चांदनी

टापू महल की २० भोम २१ वीं चांदनी आयी है । नीचे के पानी के स्तून के उपर एक कुण्ड बना है । उस कुण्ड के जल चबूतरे पर चारों दिशा से तीन-तीन सीढ़ियां उतरी है । सीढ़ियों की जगह छोड़कर चारों तरफ कठेड़ा आया है । इस कुण्ड के चारों तरफ कमर भर नीचे बेशुमार बगीचे आये हैं । बगीचों की बाहरी तरफ चांदनी की किनार में गिलम बिछी है । गिलम के ऊपर सिंहासन और कुर्सियां आयी हैं । चांदनी की चारों तरफ घेर कर कठेड़ा आया है, जिस पर लाल कांगरी की शोभा है ।

९०. माणिक पहाड़ की चांदनी

माणिक पहाड़ की १२००० हवेलियों की १२००० हारें आयी हैं । उनके सिर पर चांदनी में बगीचे आये हुए हैं । हवेलियों की गलियों के उपर नहरें आयी हैं और कोनों के ऊपर चेहेबच्चे आये हुए हैं । इन चेहेबच्चों के चारों कोनों पर चार थम्भ आये हैं । सभी थम्भों की मेहराबों पर छत पटी है, जिससे चांदनी पर चौदह करोड़ चालीस लाख पूल दिखायी देते हैं ।

प्रत्येक चेहेबच्चे के ऊपर थम्भों की मेहराबों में हिंडोले आये है । चांदनी की किनार पर जो १२००० गोल गुर्ज आये हैं, उनके सिर पर चांदनी में १२००० कुण्ड आये हैं । चांदनी की किनार की चारों तरफ कमर भर ऊँची दिवाल के ऊपर कांगरी की शब्दातीत शोभा हो रही है ।

९१. माणिक पहाड़ के चारों तरफ जमीन पर बगीचे नहरें तथा महानद

जवेरों की नहरों के महानद से लेकर वन की नहरों की महानद तक के बीच में जो जगह आयी है, उसके बीच में भोम भर ऊँचे चबूतरे के ऊपर माणिक पहाड़ शोभायमान हो रहा है । माणिक पहाड़ के चबूतरे की दिवाल से लगकर जमीन पर गोल गुर्जो की सीध में चारों तरफ कुण्ड आये हैं । इन कुण्डों की तीनों तरफ चौड़ी रौंस घेरकर आयी है । १२००० कुण्डों के सामने १२००० नहरों का चबूतरा महानद तक आया है । चबूतरे के मध्य में पानी तथा दायें-बायें पाल आयी है । सभी पालों के मध्य में फुलवारी तथा दायें-बायें रौंस आयी है ।

Nijanand App

माणिक पहाड़ के चारों तरफ घेरकर १२००० तालों की १२००० हारें आयी हैं । इन सभी तालों के महलों की ५ भोम छठीं चांदनी आयी है । सभी ताल महलों की पहली भोम से ढके हुए हैं । इसलिये ताल के महलों की दूसरी, तीसरी, चौथी तथा पांचवी भोमों में ताल के ऊपर चबूतरा आया है । चबूतरे की चारों दिशा से तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा आया है । चबूतरे के उपर गिलम, सिंहासन एवं कुर्सियां शोभा ले रही हैं । छठीं चांदनी पर घेरकर चारों तरफ कठेड़ा आया है । इसी प्रकार सभी तालाबों की शोभा आयी है । चार नहरों के बीच में एक बगीचा शोभा ले रहा है । बगीचो में नहरों तथा चेहेबच्चों की अपार शोभा है । सभी बगीचों की ५ भोम छठीं चांदनी आयी है ।

एक बगीचे के चारों कोनों पर चार तालाब आये हैं तथा चारों दिशा में चार नहरें आयी हैं । इस प्रकार १२००० बगीचों की १२००० हारें आयी हैं । १२००० कुण्डों का पानी १२००० नहरों के द्वारा महानद की पाल के नीचे से होकर महानद में समाया है । इस प्रकार महानद एक समुद्र के समान दिखायी देता है । इस महानद की भी १२००० हांस की गिर्द आयी है । ताल की तरफ की रौंस से कमरभर नीचे जल चबूतरे पर तीन-तीन सीढ़ियां उतरी है, जहां आकर स्नान करते हैं । जल चबूतरे से जल की जमीन तक चारों तरफ घेर कर सीढ़ियां उतरी हैं । महानद की दोनों पालों के दोनों किनारों पर भोम भर ऊँची थम्भों की दो हारें आयी हैं । थम्भों की मेहराबों के ऊपर छत आयी है, जिससे दोनों तरफ की पाल तथा महानद भी ढका दिखायी देता है । थम्भों की मेहराबों में हिंडोले आये हुए है, जिनमें चार-चार हिंडोलों की ताली की शोभा आयी

है । महानद की भीतरी तरफ जो १२००० तालाबों की मोहलातों की पहली हार आयी है, उनकी दो भोम तीसरी चांदनी आयी है । दूसरी हार तालाब के मोहोलातों की तीन भोम की ऊँचाई आयी है । इसी प्रकार तीसरी हार के मोहोलातों की चार भोम पांचवी चांदनी आयी है । इसके आगे ताल के सभी मोहलातों एवं बगीचों की ऊँचाई पांच भोम की आयी है ।

१२. माणिक पहाड़ के बाहर जमीन पर बड़ोवन, मधुवन एवं महावन

महानद से लेकर महानद की जगह में तीन वन आये हैं । जवेरों की नहरों के साथ बड़ोवन आया है । इसकी १२००० भोमे आयी हैं । इसकी दुगुनी जगह में मधुवन आया है, जो २४००० भोम का है । मधुवन के आगे महावन आया है, जिसकी ऊँचाई ४८००० भोम की आयी है । यह बड़ोवन की चौगुनी जगह में आया है । चार नहरों के बीच में एक चौक आया है । प्रत्येक चौक में एक पेड़ आया है, जिसके तनों में से होकर उपर जाने के लिये सीढ़ियां बनी है । बनों की प्रत्येक भोम में १२००० महल, एक महल में १२००० मन्दिर तथा एक मन्दिर में १२००० कोठरियां आयी है । वृक्षों की डालियां आपस में मिली हुई हैं । बड़ोवन से मधुवन तथा मधुवन से महावन में आ जा सकते हैं । पेड़ के चारों तरफ नहर चलती हैं और कोनों पर चार चेहेबच्चे आये हैं । बड़ोवन की एक ही भोम १२००० भोमों में आयी है और मधुवन की दो भोमे ही २४००० भोमों में आयी है । इसी प्रकार महावन की चार भोमें ४८००० भोमों में आयी है ।

Nijanand App

१३. माणिक पहाड़ के बाहर ताल, महल तथा बगीचों की चांदनी की शोभा

माणिक पहाड़ का जो चबूतरा आया है, उस चबूतरे से ४०० कोस की दूरी पर पहली हार तालाबों के महलों की, घेर कर चारों तरफ आयी है । उनके चारों कोनों के महलों की चांदनी माणिक पहाड़ की चांदनी से एक भोम नीचे तक आयी है । इन महलों के प्रत्येक भोम के छज्जे झरोखे सब अलग-अलग दिखायी देते हैं । चारों महलों की मेहराबों के उपर एक छत दिखायी देती है । प्रत्येक ताल के महलों की मेहरावें एवं उनकी छत एक दूसरे से मिली हुई है । इन महलों की सभी मेहराबों से सोने की जंजीरों में हिंडोले छठीं चांदनी पर लटक रहे हैं । इनके एक ही हिंडोले में श्री युगल स्वरुप तथा १२००० सखियां बैठकर झूले झूलती है । चारों महलों की चांदनी पर मध्य में एक ताल आया है । ताल के चारों तरफ घेरकर एक पाल आयी है । पाल के दोनों तरफ कठेड़ा शोभा ले रहा है । माणिक पहाड़ की चांदनी की किनार पर १२००० गुर्जों के जो कुण्ड आये है, उन सभी कुण्डों से भोम भर नीचे नहरों में पानी गिरता है । नहरों के द्वारा पानी ताल में आता है । ताल से दायें बायें की नहरों में जाता है तथा इन तालों से चादरों की नहरों में जाता है तथा इन तालों से चादरों द्वारा होकर भोम भर नीचे गिरता है और चारों महलों के द्वारा प्रत्येक भोम से पानी होते हुए नीचे उतरता है ।

ताल के चारों कोनों पर चार थम्भ उठकर एक भोम ऊँचे आये हैं । उनमें चार मेहराबों के ऊपर छत आयी है । माणिक पहाड़ की तरफ के दो महलों की मेहराबें माणिक पहाड़ के गुर्जों से आकर मिली हैं तथा दायें बायें के महलों से दो मेहराबें मिली हैं । इन मेहराबों के ऊपर चांदनी

शोभा ले रही है । चांदनी के दोनों किनार पर कठेड़ा शोभा ले रहा है । ताल की चांदनी पर चारों कोनों में चार गुमटियां आयी है तथा चांदनी की चारों दिशा में कठेड़ा आया है । चांदनी के मध्य भाग में कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है । चबूतरे की चारों दिशा के मध्य से तीन-तीन सीढ़ियां उतरी है । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा आया है । चबूतरे के ऊपर गिलम, सिंहासन तथा कुर्सियों की शोभा आयी है । इन महलों की चांदनी से माणिक पहाड़ के चारों तरफ परिक्रमा कर सकते हैं ।

१४. माणिक पहाड़ का खड़ा दृश्य

माणिक पहाड़ एक माणिक के नग के अन्दर अनेकों प्रकार के रत्नों की नक्शकारी झलझलाहट से युक्त बेशुमार शोभा वाला है । यह १२००० हांस के भोम भर चबूतरे के ऊपर १२००० भोम की ऊँचाई तक चला गया है । चांदनी के ऊपर २० भोम ऊँचा टापू महल दिखायी दे रहा है । माणिक पहाड़ से क्रमशः एक-एक भोम उतरते-उतरते चांदनी पर हिंडोलों की सिंहासन एवं कुर्सियों सहित बेशुमार शोभा दिखायी देती है । सभी हिंडोले ताल की पाल मोहलाइत की छठीं चांदनी पर आये हैं । जवेरों की महानद से लेकर वन की महानद तक माणिक पहाड़ की हद धाम एवं परमधाम को घेर कर आयी है । तीनों वनों की चांदनी की तीन सीढ़ियों के आगे वन के महलों की चौथी सीढ़ी और बड़ी रांग की मोहलातें पांचवीं सीढ़ी के रुप में दिखायी देती हैं । वनों के नीचे जमीन पर अनेक प्रकार के जानवर और वनों के उपर की भोमों में अनेकों प्रकार के पक्षी अपनी-अपनी भाषा में संगीतमयी मधुर ध्वनि से धनी के गुणानुवाद को गाते हुए अपार रस की वर्षा करते हैं ।

Nijanand App

१५. वन की नहरें (मोहलातें)

माणिक पहाड़ की हद को घेर कर चारों तरफ वन की नहरें आयी हैं। इन में बड़ोवन, मधुवन तथा महावन की भांति शोभा आयी है। नहरों की शोभा तीनों वनों की नहरों के समान आयी है। चार नहरों के बीच में एक चौक १२०० कोस का लम्बा चौड़ा आया है। उस चौक के मध्य में कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है। चबूतरे की चारों दिशा के मध्य भाग से तीन-तीन सीढ़ियां उतरी है। बाकी जगह में कठेड़ा शोभा ले रहा है। चबूतरे के मध्य में एक बहुत विशाल वृक्ष आया है, जिसकी ऊँचाई पांच भोम की आयी है, लेकिन एक-एक भोम में १२०००-१२००० भोमें पड़ी हैं। कुल ६०००० भोमें हैं। एक भोम तक थड़ सीधा चला गया है, जिस में दरवाजे तथा उपर जाने के लिये सीढ़िया हैं। इसकी एक ही भोम में माणिक पहाड़ की एक हवेली की सम्पूर्ण शोभा आयी है। बेशुमार बाग-बगीचे, नहरें, चेहेबच्चे, फुहारे, महल, मन्दिर, कोठरियां, चौक, चबूतरे आदि आये हैं। इसी प्रकार सभी भोमों में शोभा आयी है। सभी वृक्षों की भोमें आपस में मिली हैं। वन की नहरों के सभी वृक्ष माणिक पहाड़ की हद के बड़ोवन, मधुवन एवं महावन की सीध में आये हैं। जरामात्र भी अन्तर नहीं आया है। पेड़ों के चबूतरों के नीचे नहरों की रौंस तक अपार बाग-बगीचे, नहरे, चेहेबच्चे, तथा फुहारें आदि शोभा ले रहे हैं। इन वृक्षों की ऊँचाई एक भोम की आयी है। एक वृक्ष के चौक की चारों दिशा में चार नहरें तथा चारों दिशा में चार चेहेबच्चे आये हैं। नहरों के मध्य भाग में पूल आया है। इसी तरह सभी वृक्षों के चौकों की शोभा आयी है। वृक्षों की एक भोम ४०० कोस की आयी है। प्रत्येक भोम में करोड़ों जाति के पक्षी अपनी-अपनी भाषा में धनी के गुणानुवाद गाते रहते हैं। धाम-परमधाम को घेर कर इसकी शोभा इस प्रकार आयी है, मानो पाच नग (हरे रंग का नग) के अन्दर अनेक रंगो के नगों की चित्रकारी से युक्त मोहोलाइत फिरी है।

१६-१७. छोटी रांग (चार हार हवेली) तथा एक महल का दृश्य

वन की नहरों से लगकर, चारों तरफ घेरकर छोटी रांग आयी है। वन की नहरों के साथ लगकर जो चौड़ी रौंस है, चारों तरफ आयी है। उसमें जल के दोनों तरफ पाल आयी है। जल रौंस से कमर भर की तीन-तीन सीढ़ियां जल चबूतरे पर उतरी है। इसी तरह पाल से भी दोनों तरफ जल रौंस पर तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा शोभा ले रहा है। इस रौंस की लम्बाई तरफ ३२ हांस आये हैं। गोलाई में ३२ हांस में ३२ खड़ी नहरें आयी हैं। पांच आड़ी नहरों को ३२ बड़ी नहरों के काटने से ३२ चौकों की चार हारें हुई। प्रत्येक चौक की चार दिशा में चार नहरें तथा चारों खूटों पर चार चेहेबच्चे शोभा ले रहे हैं। एक चौक के समान ही सभी चौकों की शोभा आयी है। एक चौक के तीसरे हिस्से में भोम भर का ऊँचा चबूतरा आया है। चबूतरे की चारों दिशा के मध्य से भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा शोभा ले रहा हैं। कठेड़े की भीतरी तरफ रौंस की जगह को छोड़कर १२००० हवेलियों की १२००० हारें शोभा ले रही हैं। इन हवेलियों की ऊँचाई पांच भोम की आयी है, परन्तु एक भोम में १२००० भोमें आयी हैं।

बड़ी रांग की ४००० हवेलियों के सामने छोटी रांग की १२००० हवेलियां आयी हैं। रांग की एक हांस के सामने एक हवेली आयी है। बड़ी रांग की एक गली के सामने छोटी रांग की तीन गलियां आयी हैं

Nijanand App

क्योंकि बाहरी तरफ हांस बढ़ता गया है, परन्तु मेल दोनों का है । हवेली के मध्य भाग में दरवाजा आया है । दरवाजे के दायें-बायें गुर्ज आये हैं । वे भी ऊपराऊपर ६०००० भोम तक गये हैं । एक भोम की ऊँचाई ४०० कोस की आयी है । हरेक हवेली की चारों दिशाओं में चार बड़े दरवाजों के ८ चबूतरे आये हैं । प्रत्येक दरवाजे के दायें-बायें दो चबूतरों के ऊपर १० मेहराबें सभी भोमों में आयी हैं ।

प्रत्येक दो हवेलियों के बीच में थम्भों की दो-दो हारें तथा तीन-तीन गलियां आयी हैं । जहां दो हवेलियों के आमने-सामने दरवाजे आये हैं, वहां पर चार चबूतरें एवं २४ मेहराबें शोभा ले रही हैं । चार-चार हवेलियों के कोनों पर २४-२४ मेहराबें आयी हैं । एक हवेली के अन्दर देखें तो रंगमहल की तरह ६००० मन्दिरों की दो हारों के बीच में ६०००-६००० थम्भों की दो हारें चौकोर में आयी है । भीतरी हार मन्दिरों की भीतरी तरफ भी छः छः हजार थम्भों की दो हारें आयी है । इन दोनों हार थम्भों के बीच में १२००० महलों की १२००० हारें आयी हैं । प्रत्येक महलों के बीच बीच में दो हारें थम्भों की एवं तीन गलियां आयी हैं । एक महल के अन्दर १२००० मन्दिरों की १२००० हारें आयी हैं । दो मन्दिरों में त्रिपोलिया आये हैं । एक मन्दिर के अन्दर १२००० कोठरियों की १२००० हारें आयी हैं । दो कोठरियों के बीच भी त्रिपोलिया आया है ।

एक हवेली के चारों तरफ ८ बगीचे आये हैं । चार बगीचे चारों कोनों में तथा चार बगीचे चार दिशाओं में आये हैं । चारों दिशाओं के चार बगीचों में चार चांदनी चौक आये हैं । एक दिशा के बगीचे के तीसरे हिस्से में चांदनी चौक आया है । चांदनी चौक के मध्य में दो चबूतरों पर लाल एवं हरे वृक्ष आये हैं । हवेली की दायें तरफ हरे रंग का तथा बायीं तरफ लाल रंग का वृक्ष शोभा ले रहा है । रंगभवन के चबूतरे के समान

चबूतरे से लगकर ४०० कोस की चौड़ी रौंस चांदनी चौक के तीनों तरफ आयी है । हवेलियों के मध्य भाग में जो त्रिपोलिया आया है, उस त्रिपोलिया के सामने भोम भर की सीढ़ी उतरी है । सीढ़ियों के दायें-बायें परकोटे की दिवाल पर सुन्दर कांगरी आयी है । सीढ़ियों के सामने बगीचों की जमीन से कमर भर की ऊँची रौंस जाकर नहर की पाल की रौंस से मिली है । इस प्रकार चारों दिशाओं में चांदनी चौक आये हैं ।

१८. बड़ी रांग

छोटी रांग (चार हार हवेली) को चारों तरफ से घेरकर बड़ी रांग आयी है । चार हार हवेली की पांचवीं नहर को पूल द्वारा पार करके जल की रौंस से तीन सीढ़ी चढ़कर पाल पर आयी । पाल को पार करके तीन सीढ़ी नीचे उतर कर रौंस पर आयी । दायें-बायें वनों की अपार शोभा को देखती हुई आगे कमर भर की तीन सीढ़ी चढ़कर दो मन्दिर की चौड़ी रौंस पर आयी । पुनः भोम भर की सीढ़ियां चढ़कर भोम भर ऊँचे चबूतरे पर पहूँची । चार हार हवेलियों का तथा बड़ी रांग का चबूतरा एक बराबर आया हुआ है । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर चबूतरे की किनार पर कठेड़ा शोभा ले रहा है । कठेड़े से १२०० कोस की चौड़ी रौंस के आगे से एक हवेली आयी है । हवेली के दायें-बायें गोल गुर्ज आये हैं । एक हवेली में १२००० हवेलियों की १२००० हारें आयी हैं । इन सब हवेलियों के बीच में दो-दो थम्भों की हारें और तीन-तीन गलियां शोभा ले रही हैं । इन हवेलियों की ऊपरा उपर १२००० भोमें आयी हैं । एक भोम १२००० कोस की ऊँची आयी है । इस प्रकार बड़ी रांग के ३२ हांसों में ३२ हवेलियां आयी है और ३२ गोल गुर्ज आये हैं । प्रत्येक गोल गुर्ज के अन्दर छः छः दरवाजे आये हुए हैं । तीन दरवाजे रौंस पर तथा तीन दरवाजे अन्दर शोभा ले रहे हैं । गुर्जों के अन्दर थम्भों की दो हारें और

Nijanand App

तीन गलिया आयी है । हवेली के दरवाजे के दायें-बायें बाहर दो चबूतरे कमर भर ऊँचे आये हैं । चबूतरों के चारों कोनो पर चार थम्भ और १० महराबें शोभा ले रही हैं । चबूतरे की तीनों दिशा में सीढ़ियों की जगह को छोड़कर कठेड़ा आया हुआ है । इसी प्रकार एक हांस की सभी हवेलियों की शोभा आयी है । जहां दो हवेलियों के आमने-सामने दरवाजे आये है, वहां चार चबूतरे एवं २४ मेहराबें आयी हैं । एक हवेली की चारों दिशाओं के चार बड़े दरवाजों के ८ बड़े चबूतरे आये हैं । हवेलियों के सामने जमीन पर वन आया हुआ है और त्रिपोलियों के सामने लम्बी रौंस नहर तक गयी है । इसी तरह समुद्र की तरफ भी १२००० हवेलियों के सामने १२००० बगीचे और १२००० त्रिपोलियों के सामने १२००० रौंस चबूतरे भोम भर नीचे जमीन पर आये हैं ।

हवेलियों के अन्दर महल, मन्दिरों एवं कोठरियों की रचना छोटी रांग की हवेली के समान आयी है । छः छः हजार हवेलियां दायें-बायें छोड़कर बीच की त्रिपोलिया से हवेली के मध्य में आयी, जहां पर चार त्रिपोलियों की चौकड़ी पड़ी है । हवेलियों की बाहरी शोभा को देखते हुए समुद्र की तरफ आयी । हवेलियों के आगे समुद्र की तरफ रौंस घेर कर आयी है । हवेलियों के दरवाजों के सामने की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा आया है । १२००० हवेलियों के सामने चार हार हवेली और समुद्र की तरफ जो वन आया हुआ है, उन वनों में रंगमहल के चांदनी चौक की तरह ही चांदनी चौक तथा हरे-लाल वृक्ष शोभा ले रहे हैं । चांदनी चौक के मध्य भाग से रौंस चलकर समुद्र की रौंस से मिली है । इस रौंस से कमर भर ऊँची सीढ़ी चढ़कर समुद्र की रौंस पर आयी । इस रौंस से समुद्र का जल अपने हाथों से स्पर्श कर सकते है ।

९९. बड़ी रांग की एक हवेली

बड़ी रांग की एक हवेली के अन्दर चारों दिशा के ६००० मन्दिर आये है । इन मन्दिरों के पाखे की दिवाल के सामने भीतरी तरफ छः छः हजार थम्भों की दो हारें आयी हैं । फिर छः हजार मन्दिरों की दूसरी हार आयी है । दूसरी हार मन्दिरों की भीतरी तरफ छः हजार थम्भों की एक हार आयी है । इस हार की भीतरी तरफ १२००० महलों की १२००० हारें आयी हैं । प्रत्येक महल के बीच में थम्भों की दो हारे तथा तीन गलियां आयी हैं । एक महल के अन्दर १२००० मन्दिरों की १२००० हारें आयी हैं । उन प्रत्येक दो मन्दिरों के बीच में थम्भों की दो हारें तथा तीन गलियां आयी हैं । एक मन्दिर के बीच १२००० कोठरियों की १२००० हारें आयी हैं । प्रत्येक दो कोठरियों के बीच में थम्भों की दो हारें तथा तीन गलियां आयी है । इन सभी हवेलियों के महलों, मन्दिरों एवं कोठरियों के बीच में अपरम्पार बाग-बगीचे, नहरें, फव्वारे, थम्भ, मेहराबें, चबूतरे एवं हिंडोलें आये हैं, जिनकी शोभा माणिक पहाड़ की हवेलियों के समान है । एक हवेली के समान ही अन्य सभी हवेलियों की शोभा है ।

१००. हवेलियों के त्रिपोलियों के मध्य की हवेली

चारों दिशाओं के ६०००-६००० हवेलियों के बीच के त्रिपोलियों की जहां चौकड़ी पड़ी है, उस चौक में ४०० कोस की लम्बी चौड़ी एक हवेली आयी है । इस हवेली के अन्दर चारों दिशा में घेरकर महल आये हैं । चारों दिशाओं में चार बड़े दरवाजे शोभा ले रहे हैं । महलों की भीतरी तरफ थम्भों की एक हार घेर कर आयी है । थम्भों की हार की भीतरी तरफ बाग-बगीचों, नहरों, चेहेबच्चों, तथा फव्वारों की अपरम्पार

Nijanand App

शोभा हो रही है । बगीचों की भीतरी तरफ कमर भर ऊँचा एक चबूतरा आया है । चबूतरे की चारों दिशा में तीन-तीन सीढ़ियों एवं कठेड़े की शोभा आयी है । चबूतरे के मध्य भाग में पानी से भरा हुआ एक स्तम्भ आया है, जो आकाशी तक गया है ।

१०१. जिमी के वन महल की चांदनी पर टापू, महल ताल एवं देहेलान

वन महलों की चांदनी पर माणिक पहाड़ तथा पुखराजी पहाड़ के आकाशी महल की चांदनी के माफक शोभा आयी है । चांदनी के तीसरे हिस्से में एक भोम भर का ऊँचा चौरस चबूतरा आया है, जिसके तीन हिस्से हुए । पहले हिस्से में देहलान आयी है । देहलान में थम्भों की चार हारें घेर कर आयी हैं, जिसमें तीन देहलानें आयी हैं । बीच की देहलान दो भोम की तथा दायें-बायें की देहलान एक-एक भोम की ऊँची आयी है । इस देहेलान के दोनों तरफ रौंस आती है । रौंस से ताल की तरफ तथा बाहर की तरफ अनेकों सीढ़ियां भोम भर की उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा शोभा ले रहा है । दूसरे हिस्से में भोम भर का गहरा ताल आया है और तीसरे हिस्से में टापू महल आया है । टापू महल के दोनो तरफ ४००-४०० कोस की टापू रौंस आयी है । रौंस से दोनों तरफ सीढ़ियां उतरी हैं । टापू महल की चारों दिशा ४८००० महल आये हैं । इनकी ऊँचाई २० भोम २१ वीं चांदनी है । हवेलियों की भीतरी तरफ अपरम्पार बाग-बगीचे नहरें तथा चेहेबच्चे आये हैं । बगीचों की भीतरी तरफ चबूतरे के मध्य में कमर भर ऊँचा एक चबूतरा आया है । चबूतरे की किनार पर चारों तरफ थम्भ आये है तथा चारों दिशा में तीन-तीन सीढ़ियां आयी है । सीढ़ियों की जगह छोड़कर बाकी में कठेड़ा

आया है । चबूतरे के तीसरे हिस्से के मध्य में कुण्ड तथा कुण्ड के मध्य भाग में जल स्तम्भ आया है । कुण्ड के चारों तरफ दो हिस्से में गिलम, सिंहासन तथा कुर्सियां आयी है । ऐसी ही शोभा २० भोम तक आयी है ।

१०२. वन महलों के टापू की चांदनी

चांदनी के तीसरे हिस्से में एक चौरस चबूतरा कमर भर ऊँचा आया है, जो नीचे के चबूतरे की चांदनी पर आया है । इस चबूतरे के मध्य भाग में स्तून की जगह पर कुण्ड आया है । कुण्ड की चारों दिशा में चांदो की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा आया है । कुण्ड को घेर कर चबूतरा आया है । चबूतरे पर गिलम, सिंहासन तथा कुर्सियां आयी हैं । चबूतरे की बाहरी किनार पर कठेड़ा आया है । चबूतरे से कमर भर नीचे वन, बगीचे, नेहरें तथा चेहेबच्चे चारों तरफ आये हैं । वन महल की चांदनी की देहेलान के चारों तरफ बाग-बगीचे, चेहेबच्चे, नहरें, फव्वारे आये हैं । बैठने के लिये सुन्दर कुर्सियां तथा सिंहासन आदि सभी आये हैं । चांदनी की किनार के चारों तरफ भोम भर ऊँची दिवाल परिक्रमा के वास्ते आयी है । दिवाल के चारों तरफ से चांदनी पर भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । चौरस चबूतरों एवं दरवाजों की कमानों पर कलश, कंगुरे, ध्वजा, पताकायें इत्यादि अपार शोभा ले रहे हैं । कंगुरों के बीच-बीच में कांगरी आयी है । इसी तरह की शोभा चारों तरफ आयी है ।

१०३. एक सागर के चारों तरफ का दृश्य

एक सागर की चारों दिशा में वनों की अपरम्पार शोभा आकाश तक दिखायी देती है । चारों कोनों में बहुत लम्बा चौड़ा मोतियों की रेती का मैदान अपार तेज राशि से युक्त चार थम्भों के रुप में आकाश से युद्ध करता हुआ दिखायी देता है । चारों दिशा के वनों एवं चारों कोनों के

Nijanand App

रेतियों के मैदान को घेरकर भोम भर ऊँचा चबूतरा आया है । चबूतरे के ऊपर चारों दिशाओं में चार हवेलियां १२००० भोम ऊँची दिखायी देती हैं ।

एक समुद्र की चारों तरफ की हवेलियों के दरवाजों के ऊपर कलश, कंगुरे, कांगरी, ध्वजाये तथा पताकायें अपार शोभा को धारण की हुई दिखायी देती हैं । गुर्जो पर ध्वजा पताकायें शोभा ले रही हैं । इसी तरह आठों सागरों की शोभा जानना जी ।

एक समुद्र के बाहरी तरफ १२००० बगीचे आये हैं । बगीचों के आगे भोम भर चबूतरे पर १२००० हवेलियां शोभा ले रही हैं । एक हवेली के दाये बायें गोल गुर्ज आये हैं । हवेली की भीतरी तरफ जिस तरह वन आये है, उसी प्रकार बाहरी तरफ भी वन आये हैं । प्रत्येक बगीचे में हवेलियों के सामने चांदनी चौक आया है । चांदनी चौक के मध्य में कमर भर ऊँचे दो चबूतरों के उपर हरे एवं लाल वृक्ष की शोभा आयी है । चांदनी चौक के मध्य से एक रौंस आयी है । चांदनी चौक के मध्य से एक रौंस चली गयी है । इस रौंस के आगे तीन सीढ़ियां नीचे बेहद भूमि में आयी है, जिसकी कोई सीमा नहीं है । बड़ी रांग में ८० महा हवेलियां आयी हुई हैं, जिनमें ३२ हवेलियां चार हार हवेलियों की तरफ ३२ हांसों में आयी हैं और ३२ हवेली बाहर बेहद भूमिका की तरफ आयी है । शेष १६ हवेलिया पाखे में आयी है ।

१०४. हवेली की चांदनी पर ताल, बगीचों एवं गुमटियों का दृश्य

चांदनी के मध्य तीसरे हिस्से में कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है । चबूतरे की चारों दिशा से तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं । बाकी जगह में कठेड़ा आया है । चबूतरे के ऊपर गिलम, सिंहासन तथा कुर्सियां आयी

है । चबूतरे के नीचे चारों तरफ वन, बगीचे, नहरें, फव्वारे बेशुमार शोभा को धारण कर रहे है । चांदनी की किनार पर चारों भोम भर ऊँची दिवाल आयी है । दिवाल की चारों दिशा से चांदनी पर भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । सीढ़ियों की जगह को छोड़कर बाकी जगह में कठेड़ा शोभा लेता है । दिवाल की बाहरी तरफ दरवाजों की कमानों के ऊपर कंगुरे, कांगरी, कलश, ध्वजा, पताकायें इत्यादि शोभा ले रही हैं । दरवाजे की मेहराब के दायें-बायें चौरस चबूतरों के गुर्जो पर गुम्मटों, कलशों, ध्वजा-पताकाओं आदि की शोभा आयी है ।

१०५. चांदनी पर एक बगीचे का दृश्य

बड़ी रांग की हवेलियों की चांदनी पर रंगमहल की चांदनी जैसी शोभा आयी है । हवेली की चांदनी की जगह पर कई प्रकार के वृक्ष आये हैं । गलियों की चांदनी की जगह पर नहरें, फुलवाड़ी तथा रौंसे आयी हैं । हवेलियों के कोनों की चांदनी की जगह में चेहेबच्चे आये हुए है । बड़ी रांग की चांदनी की बाहरी एवं भीतरी तरफ भोम भर ऊँची मोटी दिवाल आयी है । उस दिवाल में बड़े दरवाजों के ऊपर मेहराबें हैं तथा उनके उपर कंगुरे, कांगरी एवं झण्डा पताकाओं की अपार शोभा हो रही है । दरवाजे की मेहराब के दायें-बायें चबूतरे की मेहराब आयी है । इनके ऊपर भी कंगूरे, कांगरी एवं ध्वजा पताकाओं की अपार शोभा हो रही हैं । बड़ी रांग की चांदनी की शोभा शब्दातीत है ।

१०६. एक जिमी की शोभा

आठ सागरों के बीच में आठ जमीन आयी है । उसमें से एक का ब्यान किया जाता है । उसी तरह सबकी शोभा जानना जी । एक सागर की लम्बाई-चौड़ाई तथा गिर्द के बराबर एक जमीन भी आयी है । एक जमीन के चारों तरफ चौड़ी रौंस आयी है । इस रौंस के चारों तरफ

Nijanand App

४८००० बगीचे शोभा ले रहे हैं । बगीचे से भोम भर ऊँचा चबूतरा आया है, जिस पर एक महा हवेली आयी है । एक महा हवेली में १२००० हवेलियों की १२००० हारें आयी हैं । जिस तरह एक सागर के चारों ओर जोगबाई आयी है, उसी तरह यहां भी जमीन के चारों तरफ आयी है । जिस प्रकार सागरों के चारों कोनों पर चार चौक रेती के मैदान के आये हैं, उसी प्रकार जमीन के चारों कोनों पर चौक गोल गुर्ज के सामने आया है । इस हवेली की सम्पूर्ण शोभा वन की आयी है । जैसे-जैसे बाहरी तरफ हांस बढ़ता गया है, उसी तरह हवेली भी बढ़ती गयी है । रांग की हवेलियों की तरह चारों तरफ छः छः हजार हवेलियों के मध्य की त्रिपोलियों की चौकड़ी में एक हवेली आयी है, जिसके अन्दर चारों तरफ महल आये है । महलों की भीतरी तरफ बगीचे, नहरें, चेहेबच्चे आये हैं । इसके मध्य में कमर भर ऊँचा चबूतरा आया है । चबूतरे की चारों दिशा में थम्भ, सीढ़ियां एवं कठेड़े की शोभा आयी हैं । चबूतरे के मध्य भाग के तीसरे हिस्से में कुण्ड के बीच जल स्तम्भ आया है, जो चांदनी तक चला गया है । इस वन की महा हवेली के बाहर चारों तरफ दरवाजे तथा चौरस गुर्ज उपरा उपर १२००० भोम तक चले गये है । ऊपर सबकी चांदनी एक ही आयी है ।

१०७. टापू महल, जिमी तथा मोहोलाइत की चांदनी का दृश्य

इस वन की चांदनी पर माणिक पहाड़ की चांदनी तथा आकाशी महल की चांदनी की बनक आयी है । चांदनी केतीसरे हिस्से में एक भोम भर ऊँचा चौरस चबूतरा आया है । इस चबूतरे के तीन भाग हुए । पहले हिस्से में देहेलान, दूसरे हिस्से में ताल, तथा तीसरे हिस्से में महल आये हैं । भोम भर ऊँची देहेलान के चारों तरफ चबूतरे बाग बगीचे, चेहेबच्चे,

नहरें, फुहारें सब आये हैं । कई जगहों पर बैठने के सुन्दर स्थान आये हैं और चारों तरफ भोम भर की दीवाल ऊपर उठी है । दिवाल परिक्रमा के वास्ते आयी है । दिवाल के चारों तरफ भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । दिवाल की किनार की भीतरी तरफ कठेड़ा आया है । चौरस चबूतरे तथा दरवाजों की मेहराबें भी यहां तक आयी हैं । चौरस चबूतरों की छत भी इसी दिवाल तक आयी है । चार थम्भ उठ कर स्थित हैं, जिनके उपर गुम्मट, कलश, ध्वजा-पताकायें आयी हैं । दो गुम्मटों के बीच में त्रिपोलिया की जगह कांगरी आयी है । इसी प्रकार से चारों तरफ बनक आयी है । यह एक जमीन का ब्यान हुआ ।

एक जमीन के चारों तरफ चार हवेली आयी है, जो उपराउपर १२००० भोम तक गयी हैं । इस जमीन के चारों तरफ ४८००० दरवाजों की कमानें आयी हैं । दरवाजों की कमानों पर कलश, ध्वजा, पताकायें सब आये हैं । चारों तरफ गुर्ज आये हैं, जिन पर ध्वजा, पताकायें फहराती हैं और चारों तरफ जो कांगरी त्रिपोलिया पर आयी है, उस पर भी ध्वजा पताकायें फहराती हैं । इस प्रकार अपरम्पार शोभा आयी है । इसी प्रकार आठों जमीन का ब्यान जानना जी ।

१०८. पच्चीस पक्ष का दृश्य

परमधाम के पच्चीस पक्ष है-

धाम तालाब कुंज वन जोहें, मानिक नहरें वन की सोहें ।
पश्चिम चौगान बड़ो वन कहिए, पुखराजी यमुना जी लहिए ।।
आठों सागर आठ जिमी के, ये पच्चीस पक्ष श्री धाम धनी के ।।

श्री परमधाम के मध्य में २०१ पहल का रंगमहल आया है जो ९ भोम दसवीं आकाशी का है । इसकी प्रथम भोम में रसोई की हवेली, मूल मिलावा आदि है । द्वितीय भोम में भूलवनी, तीसरी भोम में पड़साल,

Nijanand App

चौथी भोम में नृत्य की हवेली, पांचमी में रंग प्रवाली का मन्दिर है, जिसमें शयन लीला होती है । छठी भोम में सुखपाल हैं । सातवीं और आठवीं भोम में हिंडोले है । नवीं भोम में सिंहासन है तथा दसवीं आकाशी में विशेष शोभा है । हौज कौशर तालाब रंगमहल की दक्षिण दिशा में है, जिसमें चार घाट है । श्री यमुना जी का जल इसी में समाता है । हौज कौशर तालाब के चारों ओर कुंज-निकुंज वन है । कुंज चौकोर और ऊपर से ढका है । निकुंज गोल और ऊपर से खुला है । इसकी दो भोम और तीसरी चांदनी है । रंगमहल से दक्षिण दिशा में माणिक पहाड़ आया है । यह १२००० पहल का १२००० भोम वाला है । इसकी सारी जोगबाई लाल रंग की आयी है । माणिक पहाड़ के आगे पांचवी परिक्रमा में वन की नहरें हैं । रंगमहल से पश्चि में रंग बिरंगा रेत का विशाल मैदान है, जिसे पश्चिम की चौमान कहते है । यहां श्री राज श्यामा जी और सखियां विभिन्न प्रकार की लीलायें करते हैं । अन्न वन की उत्तर तरफ बड़ो वन आया है । रंगमहल से उत्तर की ओर चार लाख कोस की गिर्द में १००० गुर्ज और १००० भोम का पुखराज पर्वत है । इसकी तलहटी के मध्य में ताल है, जिसमें पांच पेड़ आये हैं । श्री यमुना जी पुखराज पहाड़ से निकलकर पूर्व में बहती हुई दक्षिण की ओर मुड़कर बहती हुई पुनः पश्चिम दिशा में मुड़कर हौज कौशर तालाब में मिल जाती है । इनकी लम्बाई १८ लाख कोस है । बड़ी रांग में पहले भाग में ३२ हवेलियां हैं । दूसरे भाग में आठ सागर आठ जिमी और १६ हवेलियां है । सागर तथा जिमी के बीच में हवेली है । तीसरे भाग में भी ३२ हवेलियां है । अग्नि कोने में श्वेत रंग का नूर सागर, दक्षिण में लाल रंग का नीर सागर, नैरित्य कोने में पीले रंग का क्षीर सागर, पश्चिम में हरे रंग का दधि सागर, वायव्य कोने में आसमानी रंग का घृत सागर, उत्तर दिशा में श्याम रंग का मधु सागर, ईशान कोने में दस रंग का रस सागर और पूर्व में सर्वरस सागर आया है ।

Nijanand App

Nijanand App

Nijanand App

Nijanand App

Nijanand App

Nijanand App

Nijanand App

Nijanand App

Nijanand App

Nijanand App

Nijanand App

Nijanand App

Nijanand App

Nijanand App

Nijanand App

Nijanand App

Nijanand App